मूल – मानिक बंद्योपाध्याय

विषय-वैशिष्ट्य, अभिनव भौगोलिक परिवेशक चयन-चित्रण, शब्द-शिल्पक चमत्कार एवं अविरल अमृतोपम संवेदनाक ... समाहार मानिक बंद्योपाध्यायक 'पद्मानदीक माझी' कें ... प्रतिष्ठित करैछ।



पद्मानदीक माझी मूल- मानिक बंद्योपाध्याय मैथिली राम लोचन ठाकुर

पद्मानदीक माझी

मूल- मानिक बंद्योपाध्याय

मैथिली

राम लोचन ठाकुर

पद्मानदीक माझी

(उपन्यास)

मूल : बंगला

मानिक बंद्योपाध्याय

•

मैथिली अनुवाद

राम लोचन ठाकुर

•



मिथिला सांस्कृतिक परिषद्

कोलकाता – 7

PADMANADIK MAJHI (NOVEL) : By Manik Bandyopadhyay
Translated by Ram Lochan Thakur

प्रकाशक :
श्री रामनन्दन झा, *मंत्री*
मिथिला सांस्कृतिक परिषद्
पं० सं० S/6762 :: स्था० : 26 जनवरी, 1959
6-B, कैलाश साहा लेन, कोलकाता-700 007

•

•

स्वर्ण जयन्ती समारोह
26 एवं 27 दिसम्बर, 2009 ई०

•

मुखपृष्ठ : श्री गोपी दे सरकार

•

दाम : 150/- टाका

•

मुद्रक :
श्री किशोरीकान्त मिश्र
अरुण प्रिंटिंग प्रेस
9-B, सिकदर पाड़ा स्ट्रीट, कोलकाता - 700 007
दूरभाष : (033) 2274 4201 • मो० : 9433164330

प्रकाशकीय—

भारत विभिन्नता मे एकताक एकटा दृष्टान्त पस्तुत करैत अछि। हमरा लोकनि विभिन्न भाषा-भाषी, विभिन्न सम्प्रदाय एवं विभिन्न संस्कृतिक लोक संगे मिझराइत रहै छी। एक दोसरक प्रभाव एक-दोसर पर पड़ैत रहै छैक आ ओकर छाप किछु ने किछु रहि जाइ छैक। एक दोसर कें बूझक लेल विभिन्न भाषा-साहित्यक अनुवाद भाषेतर साहित्य मे होइत रहैत अछि। बंगाल आ मिथिलाक भाषा संस्कृति मे बहुत समता अछि। एहि समता कें बेसी सँ बेसी जानक लेल विभिन्न पोथीक अनुवाद मैथिली मे होइत अछि। प्रस्तुत उपन्यास ''पद्मानदीक माझी'' मूल बंगला पोथी मानिक बंद्योपाध्यायक 'पद्मानदीर माझी'क मैथिली रूपान्तर अछि। एहि पोथीक माध्यमे हमरा लोकनि ओहि माझी समाजक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्थितिक सङहि तत्कालीन प्रशासनिक स्थितिक ज्ञान प्राप्त करै छी।

पोथीक रूपान्तरकर्त्ता श्री राम लोचन ठाकुरजीक प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करै छी।

मिथिला सांस्कृतिक परिषदक स्वर्ण जयन्तीक अवसर पर प्रस्तुत पोथी अपने लोकनिक हाथ मे दैत आनन्दक बोध करै छी। साधुवाद दै छियन्हि श्रीयुत् कामदेव झाजी, समाजसेवी-उद्योगपति, (ग्राम- ब्रह्मपुरा, मधुबनी), कें जे एहि पोथीक मुद्रण व्यय-भार वहन कए परिषद कें साहित्यिक सेवा करक हेतुएँ प्रोत्साहित कएलन्हि।

स्वर्ण जयन्ती समारोह
26-27 दिसम्बर, 2009

रामनन्दन झा, *मंत्री*
मिथिला सांस्कृतिक परिषद



स जातो येन जातेन जातिवंश समुन्नतिम् ।

ओइ व्यक्तिक जन्म सार्थक थिक जे अपन वंश, समाज एवं राष्ट्रक विकासक हेतु चिन्तनशील रहैछ।

हस्तस्य भूषणम् दानं कें चरितार्थ कैनिहार, समाजसेवी एवं समाजहितैषी, मिथिला-मैथिलीक पृष्ठपोषक, धर्मध्वजवाहक, धर्मभीरु —

श्री कामदेव झा, *संस्थापक अध्यक्ष,*
हरिहर स्थान चैरीटेबुल ट्रस्ट, हरिहर स्थान;
ग्राम - ब्रह्मपुरा (बेनीपट्टी), मधुबनी निवासी एवं कोलकाता प्रवासी, स्थानीय मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा प्रकाशित पोथी 'पद्मानदीक माझी'क मुद्रणक सम्पूर्ण व्यय-भार वहन कए अपन दानशीलताक परिचय दए मैथिली साहित्यक अभिवृद्धि मे सहयोग प्रदान कए मैथिली सेवी लोकनिक उत्साह वर्द्धन कएलन्हि।

मिथिला सांस्कृतिक परिषदक साधुवाद।

शिवचन्द्र झा
अध्यक्ष



आमुख

विश्व-वाङ्मय मे एहन साहित्यकार आङुर पर गनल छथि जे अपन पहिले रचना सँ प्रसिद्धि प्राप्त कएने होथि, विख्यात भऽ गेल होथि। कथाक क्षेत्र मे गोर्की आ मोपासा तथा काव्यक क्षेत्र मे बायरन आ माइकेल मधुसूदन दत्तक नाम एहि सन्दर्भ मे सादर लेल जा सकैछ। एही परंपराक अग्रिम कड़ीक रूप मे आविर्भूत होइत छथि मानिक बंद्योपाध्याय। सरोजमोहन मित्र उचिते कहैत छथि जे बंकिम बाबू, रवीन्द्रनाथ ठाकुर वा शरत् बाबू सँ मानिक बंद्योपाध्याय सर्वथा भिन्न छला कारण हिनका हुनका लोकनि जकाँ वर्षो शिक्षा वा अभ्यासक प्रयोजन नहि पड़लनि। हिनक पहिले कथा 'अतसी मामी' जे ई कॉलेजक सहपाठी लोकनिक चुनौती पर बाजी लगा लिखने छला आ 'विचित्रा' मे छपल छल, रातारती हिनका बंगलाक नामी-गिरामी साहित्यकार सभक सूची मे समाविष्ट कऽ देलक। 'विचित्राक' सम्पादक स्वयं हिनका सँ भेंट कऽ पन्द्रह टाका दैत आरो कथा देबाक आग्रह कएने छलथिन।

मानिक बंद्योपाध्यायक जन्म 19 मइ, 1908 ई० कें दुमका मे भेल छलनि। पिता हरिहर बंद्योपाध्याय सेट्लमेंट अफसर छलथिन। मूल ग्राम ढाका जिलाक मालपेदिया गाम। हरिहर बंद्योपाध्यायक पाँचम पुत्र प्रबोधचन्द्र ततेक कारी छला जे लोक हिनका 'कालो मानिक' कहए लागल आ अन्ततः प्रवोधक संग कालो (कारी / करिया) हेरा गेल, रहि गेल मात्र मानिक जे विश्व-वाङ्मय मे अपन अभिनव-अनमोल अवदानक कारणे मानिक सदृशे चमकैत-दमकैत एकर सार्थकता सिद्ध कएलक।

मानिक पढ़बा-लिखबा मे बड़ चन्सगर छला। मैट्रिक आ इंटरमीडियेट प्रथम श्रेणी सँ पास कएने छला। भौतिकी आ गणितक नीक ज्ञान छलनि। 'अतसी मामी' कथा लेखनक समय ई प्रेसिडेंसी कॉलेजक बी. एससी. ऑनर्सक छात्र छला। बी. एससी. पास कऽ पाएब हिनका सँ सम्भव नहि भेल किन्तु हिनक विज्ञान आ गणितक ज्ञान लेखक जीवन मे जीवनक जटिलता कें बुझबाक, तकर वस्तुनिष्ट विवेचन-विश्लेषणक क्षमता-प्रखरता अबस्से प्रदान कएलक जे हिनक साहित्यक विशेष वैशिष्ट्यक रूप मे विवेचित-विश्लेषित होइछ।

नवाग्रही-नवोन्मेषी लेखक मानिक बंद्योपाध्याय कें बुझबाक लेल हिनक पृष्ठभूमिक अध्ययन-अवलोकन आवश्यक अछि जाहि मे बंगालक नवजागरणक महत्त्वपूर्ण भूमिका छैक। शरत् बाबू कहै छथि —

Writers of today no longer like to offer dull accounts of the life of the rich and the upper ten. Of late they have been bold enough to explore the life of the havenots. That they have done this is not to be regretted. Our literature will be acclaimed not only in our country but throughout the world if our authors can take the cues from Russian literature and learn how to understand and depict the trials and aspirations of the suffering humanity.

शरत् बाबूक ई संदेश जेना मानिकेक निमित्त हो। हिनक रचना मे ई आग्रह-अपेक्षा साकार भेल देखल जाइछ आ एही कारणे प्रायः समीक्षक-समालोचक लोकनि हिनका शरत्-परंपराक सुच्चा धारक-वाहक, ओकर अग्रिम कड़ी कहैत छथि।

'अतसी मामी'क प्रकाशन (1928)क सात साल बाद 1935 ई० मे मानिकक पहिल उपन्यास 'जननी' आ फेर 'दिवारात्रिर काव्य' प्रकाशित भेल। अगिला साल 'पुतुल नाचेर इतिकथा', 'पद्मानदीर माझी', आ 'जीवनेर जटिलता' तीन गोट उपन्यास प्रकाशित भेल। हिनक कुल सँएतीस गोट उपन्यास मे 'पुतुल नाचेर इतिकथा' आ 'पद्मानदीर माझी' विशेष पठित चर्चित अछि जखन कि विभिन्न भाषा मे सर्वाधिक अनूदित अछि 'पद्मानदीर माझी'। अंग्रेजी, चाइनिज, जेच, हंगेरियन, लिथुआनियन, नौरवेइयन, रशियन, स्वेडिश आदि भाषा मे एकर एकाधिक अनुवाद प्रकाशित अछि।

अद्भुत आंचलिकताक झाँकीक संग 'पद्मानदीर माझी' निछच्छ देहातक एक मलाहक बस्ती वा टोलक कथा-व्यथाक महागाथा थिक। सभ्य समाज द्वारा कतिआओल शोषित-निपीड़ित, आदिम अवस्था मे रहबाक लेल वाध्य एहि जनगोष्ठीक जीवनेच्छा-जिजीविषा, ओकर संघर्षक जाहि विरल संवेदनाक संग एहि मे वर्णन कएल गेलए से निर्विवाद अप्रतीम अछि। स्वाभाविक छैक जे समालोचक लोकनि एहि कृति कें विश्व-वाङ्मयक एक अनमोल रत्न कहैत छथि।

कहल जाइछ जे ई नेना मे वंशी लऽ घर सँ बहरा जाइ छला आ दू दिन, तीन दिन निपत्ता रहै छला। बाद मे पता लगै जे ई माझी लोकनिक संग नाओ पर छला। बाल्यावस्थाक इएह अनुभूति 'पद्मानदीक माझी' के एतेक विश्वस्त, एहन विलक्षण होएबाक पृष्ठभूमि कहल जाइछ।

सारस्वत समाजक सम्मान, पाठक वर्गक अगाध आदर-स्नेह पबितो मानिक छला धरि चिर विपन्न। दुनू साँझक भोजन भेटि जाएब बड़ पैघ बात होइत छल। एहने स्थिति मे पचहत्तरि टाका बेतन पर 'बंगश्री' पत्रिका मे चाकरी लेलनि, मुदा से कतौ हिनका सँ पार लागय! बाल्यावस्थहि सँ मिरगीक रोगी छलाह। पश्चात रक्तातिसार सँ सेहो आक्रान्त रहैत छला। साम्यवादी दल मे योगदानक कारणे किछु दिन प्रकाशक लोकनि सेहो हिनका बारने छलथिन। मुदा ई स्थिति बेसी दिन नहि रहल। एक समय कहल जाइ छलै जे बंगला साहित्य पर तीन बंद्योपाध्यायक वर्चस्व छैक — विभूति भूषण, ताराशंकर आ मानिक। किन्तु मानिक छला अक्खर स्वभावक। कथा लिखबाक मन अछि तऽ कथे लिखब, जनितो जे उपन्यास लेल बेसी पाइ भेटत आ प्रकाशको लोकनिक तकरे आग्रह छनि। हिनक मान्यता छलनि जे लेखक कें मात्र पाइ लेल नहि लिखबाक चाही आ ने प्रकाशकक दबाओ मे एबाक चाही।

मानिक बंद्योपाध्यायक मादे बंगलाक विशिष्ट लेखक आ हिनक समकालीन प्रेमेन्द्र मित्र कहै छथि —

Manik Bandyopadhyay is among those rarest of writers in whose eyes life and literature merge into one. He brought with him a life-force that refused to lie imprisoned within the cramping limits of conventional norms and inhibitions. His tragedy is the tragedy of a total non-conformist.

मानिक बंद्योपाध्यायक जीवनीकार सरोजमोहन मित्र कहै छथि—

Manik is enshrined in the hearts of the people as a path-finder in literature and for his bold vision of thier future as recorded in his novels. It is with Manik Bandyopadhyay that the modern age in Bengali literature truly begins.

उपन्यासक अतिरिक्त हिनक सोड़ह गोट कथा-संग्रह, एक कविता-संग्रह, एक नाटक तथा एक निबन्ध-संग्रह प्रकाशित अछि। हेमनिये हिनक 'पद्मानदीक माझी'क नाट्य-रूप आ सिनेमा सेहो आयलए जे बेस चर्चित-प्रशंसित भेल अछि।

1955 ई० सँ हिनक स्वास्थ्य बेसी खराप चलि रहल छलनि ताइ पर काजकं बोझ। कतेको खेप लोक असपताल मे भरती करओलक मुदा ई बॉण्ड बना पड़ा अबैत छला। 30 नवम्बर 1956 ई० कें माथक रक्त जमि जेबाक कारणे अवस्था जखन चिन्तनीय भऽ गेलनि तऽ 2 दिसम्बर कें एन. आर. एस. असपताल, कोलकाता मे भरती कराओल गेलनि आ 3 दिसम्बर कऽ प्रात:काल हिनक देहान्त भऽ गेलनि। रवीन्द्रक पश्चात् शवयात्रा मे एहन लोकक भीड़ नहि देखल गेल छल जे हिनक शवयात्रा मे देखल गेल।

गत वर्ष साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित मानिक जन्मशती सभा मे अपन वक्तव्यक क्रम मे हम एहि पोथीक अनुवाद ओ प्रकाशनक घोषणा कएने रही। प्रसन्नता अछि जे वर्ष दिन विलम्बो सँ से सम्भव भेल। प्रकाशनक लेल मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, कोलकाताक आभार।

राम लोचन ठाकुर

2-M, चिराग एपार्टमेन्ट,
4, इटालगाछा रोड,
कोलकाता-700 028

• • •



एक

बरिसकालक बिच-बिचबा।

पद्माक हिलसा माछ पकड़बाक मौसम। दिन हो वा राति, कखनो कामहि नञि मछबारि। साँझक समय जहाज घाट पर ठाढ़ भेने ओहिना नदीवक्ष पर सएकसए इजोत अनिर्वाण भगजोगनी जकाँ टहलान मारैत। ओ इजोत सभ मलाहक नाओक। सगर राति एहिना इजोत सभ, रहस्यमय म्लान अंधकारक दुर्बोध्य संकेत सन नदी-वक्ष पर संचालित होइत रहैछ। एक समय माँझ राति पार भऽ जाइछै। शहर मे, गाम मे, टीशन पर आ जहाज घाट पर थाकल ठेहिऐल लोक सभ आँखि मुनि सुति रहैछ। रातिक शेष समय टुकड़ी-टुकड़ी मेघ सँ झाँपल आकाश मे बहराइछ दुबरैल चान। मलाहक नाओ सभक इजोत तखनो नञि मिझाइछ। नाओ पर भरल आ जमीन पर पसरल रहैछ उज्जर दपदप हिलसा माछ। लालटेनक इजोत मे चकमक करैछ। माछक निष्पलक नयन सभ स्वच्छ नीलाभ मणिसन देखना जाइछ।

कुबेर माझी आइ मछबारि करैत छल देवीगंजक माइल डेढ़ेक सीरा मे। नाओ पर आर दू गोटे छलै। धनंजय एवम् गणेश। तीनू केतुपुर गामक रहनिहार।

नाओ बड़ पैघ नञि। पाछा-दिस सामान्य एकगोट खोपड़ी। बरखा-बुन्नी मे कोनहुना दू-तीन आदमी के माथ नुकेबा जोग। बाकी सभ उदाम। बीच मे नाओक पाटातन पर हाथ दू-एक फाँक छोड़ल। एही फाँक दऽ नाओक खोल मे मारल माछ जमा कएल जाइछ। जाल फेकबाक इन्तजाम कात दिस। तिनकोनमा

बांसक फ्रेम पर नाओक कतबहि मे बेस पैघ पाँखि सन पसारल जाल। जालक शेष सीमाक बाँस नाओक कगनीक संग समान्तराल। ओकर दुनू कात सँ नम्मा दू गोट बाँस नाओक लग आबि परस्पर कैं अतिक्रमण करैत नाओक भीतर हाथ दू-एक अगुआ आएल। ई दुनू भेल जालक मूठ। एकरे पकड़ि जाल के ऊपर-नीचा कएल जाइछ।

दुनू बाँस मे बान्हल जाल अथाह पानि मे विशाल नमरल ठोर सन बुझना जाइछ। डोड़ी धऽ कऽ बाँसक हा कएल ठोर सन जाल के खसा देल जाइछै। माछ पड़ने मलाहक हाथक डोड़ीक माध्यमें संकेत अबैछ, डोड़िए सँ पानिक भीतरे जालक मुँह बन्न कऽ देल जाइछ।

ई नाओ धनंजयक सम्पत्ति छइ। जाल सेहो ओकरे। हरेक राति जते माछ पकड़ल जाइ छइ तकर आधा भाग धनंजयक, बाँकी आधा कुबेर ओ गणेशक। नाओ आ जालक मालिक हेबाक कारणे धनंजय मेहनतियो कमे करैछ। शुरु सँ शेषधरि ओ नाओक पतबार धेने बैसल रहैछ। कुबेर आ गणेश हत्था धऽ जाल खसबैछ आ उठबैछ, माछ संचय करैछ। पद्माक ढेउ मे नाओ ढलमल करैत रहैछ, इजोत टिमटिमाइत रहैछ। तेजो बसात मे नाओक चिरस्थायी इछाइन गंध हटैत नञि छइ। हाथभरिक कपड़ाक धरिया जकाँ डाँड़ मे लपेटने बेर-बेर पानि मे भीजैत, ठण्ढा बसात मे जड़ाइत, निद्राहीन रक्ताभ आँखिए लालटेनक मद्धिम इजोत मे नदीक अशान्त जलराशि दिस तकैत कुबेर ओ गणेश रातिभरि माछ पकड़ैछ। नाओ स्रोतक संग भासैत रहैत छइ। करुआरि धऽ नाओ के ठेलि ओ सभ ताइठाम लऽ जाइछ जाइठाम एक खेप एकहि बेर हेंज मे जाल फेकने मारिते रास माछ पड़ल छलै। आइ माछ खूब पड़ैत छलै। किन्तु भोरे देवीगंज मे माछक भाव बिनु जनने एकरा सौभाग्य तऽ नहिये कहल जा सकैछ। सभ के जँ एहिना माछ पड़लै तऽ काल्हि दर तते कमि जेतै जे विशेष लाभक आशा नञि। ओना बड़का माछक पैघ-पैघ हेंज एके समय सभठाम नञि रहैत छइ भरोसक बात इऐहटा। सभ के बेसी माछ नहियो परि लागि सकैत छइ।

कुबेर हाक दैछ-जदु हओ ऽ ऽ ऽ माछक की हाल ?

किछु दूरक नाओ सँ जवाब अबै छइ — बेस हइ।

बेस हइक बाद ओइ नाओ सँ सेहो इएह प्रश्न होइ छइ। कुबेर चिचिया कऽ कहै छइ जे ओकरो लोकनि के बेस पड़ि रहलैए।

धनंजय कहलकै — सँझुका दर पुछही तऽ कुबेर।

कुबेर फेर चिचिया कऽ दर पुछै छइ। आइ साँझुक पहर पौने पाँच, पाँच एवम् सवा पाँच टके माछ बिकेलैए। सुनि धनंजय बाजल — बिहान घटि कऽ चारि हेतै। बड़गाही के माछ भेटनहि की।

कुबेर गुमे रहैछ। छप दऽ नदी मे जाल खसा दैछ।

शरीर आइ ओकर ठीक नञि छलै। ओकर घरवाली माला ओकरा मना केने छलै बहरेबा सँ। किन्तु शरीर दिस तकबाक पलखति कुबेर के छैके कहाँ। पाइ-कौड़ीक अभाव मे एहू बेर ओ अखिल साहाक पोखरि नञि लऽ सकल। सालोभरि ओकरा पद्माक माछहि पर निर्भर करए पड़तै। हिलसाक मौसम शेष भेला पर विपुला पद्मा कृपण भऽ जाइछ। अपन विशाल विस्तृतिक बीच कतए जे ओ अपन मणिसन्तान सभ के नुका रखैछ से खोजि पाएब बेस कठिन काज भऽ जाइ छइ। नदीक मालिक कें लगान दऽ कऽ हजार टाकाक जाल जे सभ पसारि पबैछ, तकरा सभक जगह छोड़ि एते पैघ पद्मा धार मे जीविका अर्जन केनाइ ओकरा सन गरीब मलाहक लेल कष्टसाध्य काज। धनंजय ओ जदुक चेफरी लागल व्यवस्था मे जे माछ पड़ैछ तकर दू-तीन आना हिस्सा मे ककरो परिवार नञि चलि सकैछ। उपार्जन जे होइछ से एही हिलसाक मौसम मे। शरीर रहओ वा जाओ, एइ समय एको राति घर बैसने कुबेर कैं नञि चलतै।

माझ राति मे ओ सभ पलभरि लेल विश्राम केने छल। राति शेष होमए पर एलै तऽ कुबेर बाजल — कने सुस्ता ली हओ अजान काऽ।

सुस्ताइ लै किए मुइल जाइ छे — बोल तऽ ? घर जा दिन भरि सुस्ताइत रहिहे। आर दू हाथ चलि ले।

कुबेर बाजल, चिलम बिना जेना सके ने लगैत हो। शरीर आइ, बुझल' अजान का, खूब नीक नञि बुझाइ छऽ।

जाल उपर तानि कुबेर आ गणेश खोपरी लग जा कऽ बैसल। खोपड़ीक टाट मे टाङल चिलम उतारि टीनक कौटा सँ कटारी सँ मिला कऽ काटल करगर तमाकू बहार कए साल डेढ़ेक सँ व्यवहार होइत चिलम मे सजओलक। नारिकेरक छोबड़ा कें गोली सन बना टाटक अढ़ मे जा दियासलाइक मात्र एकटा काठी खर्च कए धए लैलक। बारह बर्खक उमेर सँ अभ्यास करैत-करैत हाथ मजा गेल छइ।

नाओ स्रोतक संग भासल जा रहल छलै।

एक हाथे किनार दिस कोना कोनी पतबार धेने धनंजय दोसर हाथ बढ़बैत बाजल — ला कुबेर, हमरा दे, धराबी।

तमसा कऽ चिलम ओकरा हाथ मे दैत कुबेर गुम भेल बैसल रहल।

कुबेरक बगल मे बैसल गणेश थर-थर कपैत छल। एखन जेना सरिपहुँ जड़काला होइ।

ओ हठात् बाजल — इह, आइ जाड़ कते होइ छइ कुबेर भाइ।

ओकर बात पर केओ कानपात नञि देलकै। कोनो जवाब नञि पाबि ओ कुबेर के डोलबैत फेर बाजल — बुझले कुबेर भाइ, अजुका जाड़ मे तऽ थड़थरी धऽ लेलकौ।

एकरा सभ मे गणेश कने सुधंग। ओकर मनक चिन्ता भावना जेना बेस मंथर गतिञे सम्पन्न होइछ। ओ किछु बजने लोक जे कानपात नञि दैत छइ, अवहेला करैत छइ, तकरो ओकरा कोनो ज्ञान नञि। कोनो जवाब नञि पेबाधरि ओ अपन बात बेर-बेर बजैत रहत। केओ जँ दमसऽबैत सन जवाब दैत छइ, तकरो ओकरा कोनो तामस नञि। दुखो होइ छइ वा नञि, सन्देह।

कुबेरक ओ अत्यन्त अनुगत। अपन छोट पैघ सभ काज मे ओ कुबेरक सलाह लेबे करत। विपद-आपद मे दौड़ल अबैछ ओकरे लग। एक पक्षक एही आनुगत्यक कारणें जे दुनू मे बन्धुत्व स्थापित भेल छइ तकरा घनिष्ठे कहल जाएत। आशा छइ, जोर छइ, दुख सुखक भागाभागी छइ, कलह आ पुनर्मिलन सेहो छइ। किन्तु गणेशक अति निरीह स्वभाव हेबाक कारणें झगड़ादन प्राय: नहिञे सन होइ छइ।

गणेश हठात् खेखनिया करैत बाजल — एगो गीत कही ने कुबेर।

हँ, गीत ने तोहर मुण्डी।

कुबेरक धमक सुनि गणेश कनेकाल चुपचाप बैसल रहल, फेर अपने गीत उठओलक। ओकरा गाबए नञि अबै छइ, मुदा तकर कोनो परवाहि नञि। धनंजय आ कुबेर ध्यान सँ गीतक शब्द सभ अकानैत रहल। लोक जकरा सँ प्रेम करैछ तकरा पबैए ने किए-गीत मे एहने गंभीर समस्याक बात। बड़ सहज गीत नञि।

पूबदिस लाल हेबा धरि ओ सभ जाल फेकैत घुरैत रहल। तकर बाद जहाज घाट दिस रमाना भेल। ओतए पहुँचबा धरि सगरो इजोत पसरि गेल रहै।

नदी तीर पर, नदी वक्षपर एखन सगरो जीवनक स्पन्दन। कने-कने कालपर स्टीमरक भोंपा बाजि उठै छइ। कोनो स्टीमर भोम्हिआइत सोझे निकलि जाइछ तऽ कोनो जेटी लग जा कऽ ठाढ़ होइछ। कलकत्ताक ट्रेन आबि गेल छइ। घाटक ओ टीशनक समस्त दोकान पाट खुजि गेल छइ। मारितेरास लोक नदी मे नहेबा

लेल पैसल अछि। मोटरबाही ओ यात्रीबाही अनगिनत छोट-पैघ नाओ घाट पर भीड़ लगओने ठाढ़। घाट दिस बहुत दूर धरि किछेड़क कातेकात गाड़ल लग्गी सभ मे बान्हल आर जे कतेक नाओ हेतै तकर हिसाब नञि।

नदी मे केवल जलक स्रोत। जल मे, स्थल मे मानुसक अविराम जीवन प्रवाह।

मछबरिया नाओक घाट एकढ़ मे। एइ बीच अनेको नाओ माछ लेने हाजिर। हाका-हाकी डाका-डाकी मे सगरो उत्तेजनाक वातावरण। फटाफट दर-दाम ठीक होइछ आ हरदम चलैत रहैछ माछक खरीद बिकरी। संग-संग माछ चलानक व्यवस्था।

एइ व्यवस्था ओ कोलाहलक बीच आबि गेने रातुक जगरना ओ परिश्रमक क्लान्ति बिसरि कुबेर नित्तहु खुस भऽ जाइए। आइ ओ एकदमे ठेहिआ गेल छल। शेष राति मे जाड़ भऽ कऽ संभवत: बोखारो आएल होइ। आँखि दुनू बेस चढ़ल छइ आ से देखि गणेश चारि-पाँच बेर सँ बेसिए कहने हेतै।

धरिया खोलि एगो मैल-कुचैल डेढ़गज्जा कपड़ा पहीरि कुबेर तीर पर आएल। कदबाहे मे एगो लोहाक कुरसी आ काठक टेबुल पाथि चलान बाबू केदार नाथ माछक गिनती देखि खाता मे लिखने जाइ छथि। एक सए माछक गिनती पुरिते हुनक चाकर झपट्टा मारि पाँच गो माछ उठा एगो काठक बकसा मे भरने जाइछ। बगले मे काठक पैकिंग बकसा मे एक तह माछ राखि ताइ पर बर्फ पसारि चलानक इन्तजाम होइछ। कने हटि कऽ मेन लाइन सँ जोर जबरदस्ती खीचि आनल एक जोड़ा ऊँच-नीच आ प्राय: अकाजक लाइनक उपर चारि पाँचटा वेगन ठाढ़ भेल। माछ बोझाइ कऽ वैगन सभ यथा समय कलकत्ता पहुँचत। सकाल-विकाल हाट-बजार सँ हिलसा माछ कीनि कलकत्ताक लोक घर जाएत। कलकत्ताक बसात मे पाओल जाएत पद्माक हिलसा माछ तरबाक गंध।

एगो वेगनक अढ़ मे ठाढ़ झुलंग साट पहिरने एगो भुट्ट थुलथुल लोक बड़ीकाल सँ कुबेरक दृष्टि आकर्षणक चेष्टा करैत छल। कुबेर ओमहर तकिते ओ हाथक इसारा सँ ओकरा बजौलकै।

कुबेर कनेकाल हिल-डोल नञि केलक। उदास भावें ठाढ़ रहल। तकरा बाद लग जा कऽ पुछलकै — की अइ ?

लोक तमसाइत बाजल — की अइ माने ? तोरा बुझल नञि छौ ? जो लैने आ माछ। तीनटा लबिहें।

आइ तऽ नञि होत शीतल बाबू। माछ नञि छइ।

नञि होत की रे, माछ नञि छइ ? हमरा रोज माछ दैक बात छौ ने ? जो लेने आ। नमहर देखि कऽ लबिहें।

कुबेर माथ हिलबैत बाजल — आइ सम्भव नञि होत शीतल बाबू। अजान का सोझे हमरा दिस देखि रहलए — देखाइ नञि पड़ैए ? आइ बजारे सँ कीन लू गऽ।

किन्तु चोरीक माछ कुबेर जाइ दाम मे दैत छइ, बजार मे कीनने तकर दोबर पड़तै। शीतल तें सहजे आशा नञि छोड़लक।

ओ मिनती करैत सन बाजल — आइ तों तीनटा माछ दऽ दे कुबेर। एना नञि कर। पाइ ने कने बेसिए लऽ लिहे, की ?

तब कने दम धरु।

घुरि कऽ कुबेर देह मे नीक जकाँ कपड़ा लपेटि नाओ पर जा कऽ बैसल। चारुकात चिन्हार लोक थोड़ नञि। माछ लऽ कऽ चुपचाप किनार पर जाइत देखने निश्चये संदेह करतै। तखन ओकर लाजक ठेकान नञि रहतै। ओना भरोसक बात इएह जे सभ के सभ अपने मे बेस व्यस्त छइ। अपना नाओ सँ के कतए दूटा माछ चोरि करैछ से देखबाक पलखति ककरो नञि। एक बेर चारुकात नजरि खिरा तीनटा माछ कुबेर अपन देहक कपड़ा मे नुका रखलक। किनार पर जा माछ तीनू ओ शीतलक हाथ मे देलकै। शीतलो चट दऽ ओकरा अपन पाटुक झोड़ी मे राखि लेलक।

पाइ बिहान देबौ कुबेर।

कहैत ओ डेग उठओलक। कुबेरो संगे-संग अगुआइत बाजल — सुनू शीतल बाबू, एना जुनि भागी। दाम देले जाउ।

बिहान देबौ कहलियौ ने।

उँहूँ, अखिनते दिअ। हमरो आर के पेट अइ, पलिबार अइ।

पाइ रहत तब ने देबौ। बिहान पक्का दऽ देबौ।

पिच्छर नरम माटि मे पैरक ओंठा रोपैत शीतल चल गेल। लाल-लाल आँखिए ओकरा दिस तकैत कुबेर बाजल— सरबा डकैत। फिस-फिस कऽ शीतल के आर एगो गारि पढ़ि कुबेर नाओ पर जा पड़ि रहल।

गणेश लोकटा सुद्धा। माछक दाम हिसाब कए लेबाकाल धनंजय ओकरा

आसानी सँ सहटा देने छलै। असगर मे दाम लेबाक सुयोग प्रायः ओ कोनो दिन नञि पबैत छल। कुबेर एइ समय जोंक जकाँ ओकरा संग लागल रहै छइ। पाइ भेटबाक संगहि संग ओ अपन हिस्सा लऽ लैछ।

धनंजय के नाओ पर अबिते माथ उठबैत कुबेर पुछलकै — कते माछ भेलऽ का ? स-चारिएक सँ कम तऽ नञि ने ?

धनंजय एगो अबहेला सूचक शब्द करैत बाजल — चारि सए ने हजार। दू सए सताबनटा मोट। सात गो फाओ मे, अढ़ाइ सएक दाम देलकौ।

कुबेर उठि बैसल।

से की कहै छहो का! कालि तऽ एकदमे माछ नञि पड़ल रहलै तैयो दू सए सत्ताइस भेलै ?

धनंजय तमसाइत बाजल — तऽ हम झूठ कहलियो ने की रे कुबेर ? गणेश के आबे दही, पुछि लियही।

कुबेर नरम होइत बाजल — पुछबै की ? हमर बोलै के से मतलब नञि ने रहलै। तों फुसि किए बोलबहो। ओना माछ तऽ कालि सँ आइ बेसिये पड़ल रहलै ने तें सोचलिए जे चलान बाबू ने कहीं तोरा ठकने होअ।

ठेही आ आँधी सँ ओकर आँखि दुनू बन्न होमए चाहै छलै आ ओही बन्न होएबा लेल आकुल आँखि सँ तामसे, दुखे बहए चाहै छलै नोर। गरीबो मे गरीब ओ, छोटको लोक मे आर बेसी छोट लोक। तें एइ तरहें ओकरा वंचित करैक अधिकार प्रथागत, सामाजिक ओ धार्मिक आर दसटा नियमे सन बिनु संकोचे स्वीकारने अछि ओ। प्रतिवाद कइयो ने सकैछ। मने मन सभ केओ जे बात जनैए सेहो मुँह खोलि बजैक अधिकार ओकरा नञि छइ।

गणेश के धनंजय चूड़ा कीनै लेल पठौने छलै। ओकरा घुरि अएलापर नाओ खोलि देल गेलै। एखन लग्गा बिनु पकड़नो चलतै। स्रोतक संग नाओ अपने गाम दिस भासल जेतै। गणेश आ धनंजय गुड़क संग सुखले चूड़ा चिबाबए लागल। कुबेर किछुओ ने खेलक। केवल कएक आँजुर नदीक पानि पिलक। नदी-वक्ष पर विछिन्न ढेउ सभक माथ पर असंख्य सूर्य उगए लागल छलै। काग-चील प्रभृति चिड़ै सभ क्रमागत माछ पकड़ैछ। काफी दूर मे अस्पष्ट संकेत सन एगो स्टीमरक धुँआँ देखना जाइछ। आकाश उज्वल ओ निर्मल। मेघक कोनो अत्ता-पत्ता नञि।

गणेश हठात ममताबोध करैत बाजल — आइ तों नहिञे अबितऽ कुबेर भाइ।

कुबेर कोनो जवाब नञि दैछ। चुपे रहैछ।

गणेश पुछलकै -- माथ दबा दिअ कने ?

कुबेर कहलकै -- उँ हूँ।

गणेश कनेकाल सोचि-विचारि फेर बाजल -- पतबार धैल पार लगतऽ, हम आ कक्का करुआरि धरै छिकी -- जल्दीए पहुँच जएइबै।

गामक बाहर पुबारि कात मलाहक टेल। चारुकात खाली जगहक अभाव नञि। किन्तु मलहटेलीक घर सभ एक दोसर सँ सटल जेना घराजोड़ी केने हो। एक नजरि देखने लागत जेना ई ओकरा लोकनिक अनावश्यक संकीर्णता। उन्मुक्त, उदार पिरथी पर दरिद्र लोक सभ स्वयं के ठकैछे। फेर विचार कएने बात बुझबा जोग होइछ। जगहक अभाव एइ जगत मे नञि, तैयो माथ नुकेबाक हेतु ओकरा सभक लेल एतबेटा। समस्त समतल भूमि पर भूस्वामीक अधिकारक विस्तार, तकरा धकिया कऽ मलहटेली पसरि नञि सकैछ। एकटा खोपड़ीक कात करोट मे ओकरे निर्धारित लगानक जमीन पर आर एगो खोपड़ी ठाढ़ भऽ सकैछ। वंशानुक्रमे इएह प्रथा चलि अबैछ। तकरे परिणाम छइ मलहटोलीक ई जमघट, घर पर घर।

दिन कटि जाइ छइ। जिनगी बीति जाइ छइ। ऋतुचक्रे समय घुमैत रहैछ, पद्माक टुटल तीरक धसना खसैत रहैछ। पानिक भीतर सँ पद्माक वक्षपर प्रकट होइछ द्वीप आ कोनो अर्धशताब्दीक विस्तीर्ण द्वीप पानि मे विलीन भऽ जाइछ। मलहटोलीक घरे घर नेनाक कानब कहियो बन्न नञि होइछ। भूख पियासक देवता, हँसी-कननाइक देवता, अन्हार आत्माक देवता — हिनका लोकनिक पूजा अरचा कहियो शेष नञि होइछ। एमहर गामक ब्राह्मण आ ब्राह्मणेतर भद्र लोक सभ एकरा सभ कें दूर ठेलने रहैछ, ओमहर प्रकृतिक कालवैशाखी एकरा सभ कें ध्वंस करै लेल आतुर। वर्षाक पानि घर मे ढुकै छइ, जाड़क चोट हाड़ कपबै छइ। रोग अबैछ, शोक अबैछ। जीवित रहबाक निर्मम अनमनीय प्रयोजन बस अपने बीच झगड़ा-दन, छीना-झपटी करैत ई सभ फिरीसान- रहैत अछि। जन्मक अभ्यर्थना एहिठाम गंभीर, निरुत्सव, विषादयुक्त। जीवनक स्वाद एइठाम मात्र क्षुधा पिपासा मे, काज ओ ममता मे, स्वार्थ ओ संकीर्णता मे। आर देसी दारु मे। तारक रस पका कऽ जे दारु बनैछ, खेबाक भात सड़ा कऽ जे दारु बनैछ। भगवान रहै छथि ओइ गाम — भद्रपल्ली मे। एइठाम हुनका खोजनहु नञि पाएब।

पद्मा ओ पद्माक छाड़न सभ एकरा लोकनिक अधिकांशक उपजीविका। केओ माछ मारैछ, केओ माझीगिरी करैछ। कुबेर सन केओ-केओ खास पद्मा मे जाल

फेकैत घुरैए तऽ केओ-केओ छोट-छीन जाल लेने छाड़न सभमे दिन कटैछ। नाओक जे सभ माझी, यात्री लऽ कऽ, माल बोझाइ कऽ कऽ पद्माक दीर्घयात्रा करैछ — एइगामक लोक कैँ ओइगाम पहुँचबैछ। ई भेल पानिक देश। बरिसकाल मे चतुर्दिक जल जलामय भऽ जाइछ। प्रत्येक साल एइ समय किछु दिनक लेल लोकक आङन घर आ ऊँच जमीन छोड़ि समग्र परोपट्टा पानि मे डूबल रहैछ। पानि जाइबेर बेसी भेलै, लोकक आङन घर आ दुआरि धुरखुर धरिक रक्षा नञि। बाट घाटक चिन्हो नदारद। एके गाम मे एइटोल सँ ओइ टोल जेबा लेल नाओक प्रयोजन। कएक दिनक बाद पानि घटै छइ, भीतर सँ ठाम ठीम बाट-घाट हुलकी देमय लगैछ। किन्तु तैयो मासदिन धरि चलबा जोग नञि रहैछ बाट। यान-वाहन एइ परोपट्टा मे प्राय: नहिञे। उठैत-बैसैत सभ कें नाओक प्रयोजन।

नाओक प्रयोजन कमै छइ उएह जड़कालाक शेष मे, फागुन-चैत मास मे। छाड़न सभ मे तखन पानि नञि रहै छइ, खेत सभ मे रहै छइ फसिल किंवा कटल फसिलक रिक्तता। लोक आरि धुर धेने गाम-गमाइत जाइछ।

नाओ चलैछ पद्मा मे। पद्मा तऽ कहियो सुखाइत नञि छइ। कहिया जे एइ नदीक सृष्टि भेलै के जनैछ। सागरगामी जल-प्रवाहक आइयो पलभरि विराम नञि। गतिशील जलक तल मे पद्माक मृत्तिकावक्ष केओ कोनो दिन नञि देखि पओलक, चिरकाल गोपने रहि गेल।

मलाहक टोल नदी सँ बेसी दूर नञि। तैयो एतनीटा बाट चलैत कुबेर के कष्ट होइत छलै। नाओ पर भरि बाट अंट-संट बजैत गणेश आब चुप भेल अछि। [illegible] नाओ सँ उतरबे ने कएल। लगहि मे कोनो सम्बन्धीक ओइठाम कोनो प्रयोजन छलै। नाओ लऽ कऽ ओ असगरे ओतए चल गेल।

गणेशक घर पहिने पड़ै छइ। ओ आङन नञि गेल। अस्वस्थ कुबेरक संग अगुआए लागल।

नकुल दास अपन ओसारा पर बैसि चिलम पीबैत छल। कुबेर के देखैत हाक देलक — ओ कुबेर, सुन, सुनि जो।

गणेश कहलकै जे कुबेरक मन ठीक नञि छइ, बोखारे देह जरै छइ।

नकुल बाजल — बोखार ने की ? तखन जो, आङन जो। देख गऽ अङना गे की काण्ड भेलौए।

एहन बात सुनि नीक जकाँ बिनु बुझने गेलो ने जा सकैछ। कुबेर उद्विग्न होइत पुछलकै — केहन काण्ड नकुल भाइ ?

भोरहरिया राति मे तोहर घरबाली खलास भऽ गेलौ कुबेर।

कुबेर अवाक जकाँ होइत बाजल — की! नओ मास पुरि जे मात्र कएटा दिन भेल छलै नकुल भाइ ? ई की भेलै ?

किए ? नओ मास मे खलास नञि होइ छइ ?

गणेश पुछलकै — बेटे छइ ने ?

नकुल सहमति जनबैत बाजल — हँ! हमर पाची गेल छलै, अबिते कहलक जे कुबेरक घर मे राजपुत्तर एलैए बाउ। ओ नान्हिटा छऔड़ाक सुनरताइ — चानसन मुँह, गोर दप-दप रंग।

कुबेरक झपलाइत आँखि चमकि उठलै। नकुल दुष्ट हँसी हँसैत उपहास करैत बाजल -- तों तऽ देखै छी कारी करिलौठ छैं रे कुबेर, गोराचान कहाँ सँ एलौ रे? आङन घर मे तऽ रहिते ने छैं, किछु कहल नञि जा सकैछ।

गणेश तमसाइत बाजल — बहु गोर छइ ने नकुल भाइ ?

हँ, बहु तऽ गोरे छइ।

कोनो घरक पछुआर दऽ, कोनो गली होइत कुबेर आ गणेश झटकारलक। गणेशक मन खूब खुशी। बेर बेर ओ कहए लगलै — बेटा हेतौ से कहने नञि छलियौ कुबेर। कहने नञि छलियौ जे एइबेर बेटा नञि भेने उपाय नञि।

अन्त मे विरक्त होइत कुबेर बाजल — चुप रह गणेश। बेटे लऽ कऽ की हेतै? अपन पेट भरिते ने अइछ आ बेटा !

खिन्न होइत गणेश बाजल — तों खिसिआइ छैं कुबेर भाइ ?

खिसिएबौ नञि। तों की हमरा मरै लै कहै छैं ?

ओकर मिजाजक ई आकस्मिक परिवर्त्तन गणेश कें बड़ दुर्बोध बुझेलै। भविष्यक बात सोचनाइ, हिसाब-किताब केनाइ ओकर क्षमताक बाहर छइ। बहु रहने कखनो काल बेटा-बेटी होंइ छइ, ओ ततबे जनैए, सुविधा असुविधाक बात ओ की जानए गेल। पिरथी पर कोनो लोक जन्म लेने तकर पेटक ओरियान मनुक्खक दायित्व नञि, जे जन्म दैत छथिन तिनकर, गणेश सएह विश्वास करैछ। तैं बेटा हेबाक सम्वाद सुनि कुबेर के तामस करबाक कारण ओकरा बुझै मे नञि अएलै। बुझबाक चेष्टो ओ नञि केलक।

टाट लागल छोट सन एकटा आङन, तकर दू कात दू गो घर, कुबेरक घरक

परिचय एइ सँ बेसी किछु नञि। एइकातक घरक संकीर्ण ओसारा एगो फाटल पटिया, बोरा आदि सँ घेरल। सहजहि बुझल जा सकैछ जे ई सोइरि घर थिक। कारण बोराक फाँक दऽ भीतर सूतल मालाके ओहिना देखल जा सकैछ।

कुबेर दोसर कातक ओसाराहीन घर मे प्रवेश कएलक। बाहर बरिसकालक आकाश मे कड़गर रौद रहितहुँ खिरकी हीन एइ घरक भीतर प्राय: अन्हारे। कोना मे राखल समान के चिन्है लेल नीक जकाँ टेकनाबए पड़ैछ। घरक एक कात मे चौकी समान ऊँच एगो बाँसक मचान। मचानक आधा एगो फाटल केथरी ओछाओल। चिक्कन तेलचट गेरुआ माथ तर दऽ कुबेरक पीसी एइ ओछैन पर सुतैछ। मचानक बाँकी हिस्सा पर हाँड़ी बासन पसरल। छोट-पैघ एते-हांड़ी बासन कुबेरेक जीवन मे संचित नञि भेलैक — तीन पुरुख सँ जमलैए। मचानक नीचा पुरना तखता भरल। कुबेरक बापेक अमलक एगो नाओ बेर-बेर भङठी करा चलेबाक समय क्रमागत पानि मे भीजैत बरख चारिएक पहिने धरि व्यवहार कएल गेल छलै, तकर बाद भङठीयो जोग नञि रहने तोड़ि तखता सभ जमा कऽ कऽ राखल गेल छइ। घरक दोसर दिस छोट एगो ढेकी, कुबेरक बाप हाराधन अपने हाथे बनओने छल। काठ ओ पओने छल पद्मा मे। नदीक पानि मे भासैत काठ सहजे केओ घर नञि लबैए। ककर चिताक प्रयोजने ओ काठ आनल गेल छल होएतैक, के जनैछ। मुर्दाए जकाँ चिताक आगि मे सामान्यतम जरलो काठक लोकक घर मे जगह नञि। किन्तु एइ ढेकी-काठक इतिहासे भिन्न छइ। कुबेर तहिया छोट छल, पद्मा नदीक माझीक बेटा जाइ बयस मे पद्मा मे हेलै ने पढ़ु नञि होइछ, तते छोट। छोट सन एगो नाओ पर बेटा के संग लेने हाराधन पद्मा पार होइत छल। नदीक बीचो-बीच पुरान नाओक पेनी हठात् केना ने फँसि गेलै। आसिन मास छलै, पद्माक दुनू तीरक अन्तर तीन माइल सँ कम नञि। पद्मा जकरा छाती सँ लगा कऽ पोसने छइ, पद्माक वक्षपर जते किए ने ढेउ उठौक, माइल डेढ़ेक हेलि कऽ पार भेनाइ ओकरा लेल कष्टकर भनहि होइ, असम्भव तऽ किन्नहु नञि। हाराधन असगर रहने चिन्ताक बात नञि छलै। कुबेर आर कने पैघ एवं देहगर दसगर रहितै तैयो चिन्ताक कारण नञि। किन्तु नान्हिटा कुबेर डेरा कैँ हेलए नञि चाहलक, घबड़ा कऽ बेर-बेर हाराधन के पँजिएबाक प्रयास करैत रहल। तखने एगो नामसन काठक टुकड़ा लग आबि ओकरा लोकनिक रक्षा कएने छलै। भऽ सकैए ओ काठ चिताए बनबै लैल केओ समसान घाट अनने हो। हाराधन के किन्तु ओ काठ फेकि देल पार नञि लगलै। घरक समान बना ओकरा सादर घरहि मे रखलक।

कुबेरक पीसी आ ओकर जेठ बेटी गोपी कुबेर के देखिते चीत्कार करैत लग जुमलै। कुबेर ककरो सँ कोनो बात नञि केलक। चित्ते पीसीक ओछैन पर पड़ि रहल।

पीसी पुछलकै — सूति रहलै बौआ ? ओमहर बहु बेटा बिएलौए, देखि ने आ।

गोपी कहलकै — बाउ हओ, बौआक रंग एकदम गोर दप-दप छइ। नकुलवाक बेटी पाची की बजै छल से सुनबऽ ? बजै छल जे साहेब ने कि एहन होइ छइ। नञि गे पीसी ?

कुबेर धमकबैत बाजल — नकुलबा की रे हरमजादी ? काका नञि बोलि होइ छौ ?

गोपी मुँह लटका कें बाजल किए कहबै ? ओ कलमुहा के मुह मे जे अबै छइ कहैए आ .....।

की कहै छौ तोरा ?

राति मे मझिला बाबू ने कि अपना आङन अबैए से पुछैत रहैए। आब पुछने एक लोइआ कादो मुहे पर तेना ने फेकबै जे मुहें बन्न भऽ जेतै।

अच्छा फैकियही, बाजि कुबेर औंघाए लगैए। कनेकाल बाद ओसारा पर बच्चाक जोर-जोर सँ कानैक आवाज सुनल जाइछ। एह, छौड़ा समय सँ पहिने भने आबि गेल हो, मुदा गलाक जोर नञि कम छइ। चीत्कार कऽ सकैछ।

•



दू

किछु दिनक पश्चात् रथयात्रा छलै।

रथयात्राक उपलक्ष मे केतुपुर मे कोनो धूमधाम नञि होइ छइ। पद्माक ओइपार छइ सोनाखाली गाम, रथयात्राक उत्सव ओहीठाम होइ छइ। सोनाखालीक जमिदारक एगो छोटसन रथ बहराइ छइ। सोनाखाली सँ मोहनपुर धरि दस मील नाम एगो ऊँच रस्ता छइ, एइ अंचलक इएहटा बाट बरिसकालो मे नञि डुबै छइ। बाटक नाम छइ छओ कोसिया बाट। नाम मे ई बाट एक कोस केना बढ़ि गेलै से नञि जानि। सोनाखालीक जमिदारक रथ एही बाटे आधमील जा अन्नबाबाक मैदानक एक कात पड़ल रहैछ सात दिन, तकर बाद उनटा रथक दिन घुरैछ जमिदारक महल दिस। एइ स्थानक नाम अन्नबाबाक मैदान होएबाक एगो इतिहास छइ। बहुत दिन पहिने एइ अंचल मे एकबेर भयानक अकाल पड़ल छलै। ओइ समय कतौ सँ एक संन्यासी आबि एही मैदान में डेरा खसौलनि आ विराट अन्नक्षत्र खोलि देलनि। ओना अपना लग संन्यासी कें फुटल कौड़िओक सम्बल नञि छलनि। सुनल जाइछ, तेहन ने विचित्र छलनि लोकक उपर हुनक प्रभाव जे ककरो सामने ठाढ़ भऽ ओकर आँखि दिस तकैत आदेश दितथिन आ बड़का बड़का जमिदार महाजन सभ मनक मन चाउर-दालि पठा दितनि। सएक सए भद्र गृहस्थ सभ डाँड़ मे गमछा बान्हि भानस-भात करैत आ अकाल पीड़ित नर-नारी कें परसि कऽ खुअबैत। जाइ सभ बड़का-बड़का चूल्हि मे ओइ-विराट क्षुधा यज्ञक अग्नि प्रज्वलित भेल छल, आइ तकर नामो निसान पर्यन्त नञि।

रथक दिन एइ मैदान मे विशाल मेला लगै छइ जे उनटा रथ धरि चलैछ। पद्मा पहिने दूर छलै, एखन तते लग ससरि एलैए जे मेलाक एक छोर प्राय: नदी तीरधरि ठेकि जाइ छइ। जलपथ ओ थलपथ सँ हेंड़ बान्हि लोक आबि मेला मे भीड़ लगबैछ। भीड़ बेसी रहै छइ पहिल दिन आ शेषदिन। बीच मे पतरैल रहै छइ। गमैया लोकक आवश्यक आ सख सेहन्ताक सभ वस्तु-जात मेला मे अबैछ, एतेधरि कि शहरक नारी वस्तुओक आविर्भाव देखल जाइछ। कपड़ाक दोकान, साज-गोजक दोकान-दोकान जे कते तरहक लगैछ तकर ठेकान नञि। बकरी-छागर, गाय-बड़द बिकरी होइछ। कटहर ओ अनारस सँ मेलाक एक भाग भरल रहैच। बड़का-बड़का नाओ मे भरल मालदह ओ तिरहुतक आम अबैछ। लेमोनेड कहि बोतल बोतल भरती सैकरिनक लाल निस्तेज पानि अजस्र बिकरी होइछ। महिला सब सेहन्ता पूर करैछ शंख आ काचक चूड़ी पहीरि। बच्चा सभक डाँड़ मे पहिरादैछ नव डराडोरि। कएठाम सरकार सँ लाइसेंस प्राप्त जुआ खेला चलैछ। मेलाक ई एगो प्रधान अंग। सभ सँ बेसी भीड़ होइ छइ बाला खेला लग। बाँसक घेरेबाक चारुकात भीड़ केने ठाढ़ चारि-चारि पइसे चारि-चारिटा बाला कीनि बेसी भाग गरीब चासीए सभ हरदम फेकैत रहैछ। रुद्धसाँस तकैत रहैछ, ओकर फेकल बाला ललका कपड़ा पर सजाओल टाका, अठन्नी, चौअन्नी ओ दुअन्नीक सघन जंगल मे अन्हरैल घूरि-फिरि ठाढ़ होइछ खाली जगह पर जा कऽ। बेर-बेरक व्यर्थता जेना ओकरा लोकनि कैँ विश्वासे ने होइत होइ। कते लग-लग पसारल कैंचा सभ; खाली जगह तऽ बड़ थोड़! ओकरा सभ मे जानि ने के घरवाली लेल छपुआ साड़ी, धीया-पुता लेल खेलओना आ लाइ-मुरही एवम् आश्रमक बेगरताक कते की कीनै लेल कतेदिनक संचित किछु पाइ अनने छल, साँझखन थाकल ठेहिऐल लोक जखन गाम दिस डेग बढ़ओलक, देखैए बेचारा लग बिड़िओ कीनैक कैंचा नञि। ककरो मादे नञि सोचि आइ ओ की कऽ बैसल ? पलघड़ीक स्वाधीनता, स्वार्थपर होएबाक सुयोग पाबि अपना के सम्हारि नञि पओलक ?

रथक दिन सकाले सँ झिसिआइत छलै। दिन चढ़ला पर निद्रातुर आँखि मिल-मिलबैत गणेश कुबेरक आङन आएल।

कुबेर तखनहि सुतल छल। गणेश ओकरा जगओलक। कहलकै — चल कुबेर, नाहटा ठीक-ठाक कऽ कऽ राखि आबी। हमरा हाक दऽ कऽ कका नाह पर जा बैसल छइ।

कुबेर हफिआइत कहलकै — बैस गनेसिया, बैस। गे पीसी, हमरा आ गनेसिया के दू मुट्ठी मुरही देबें ? गोपी, हमरा एक लोटकी पानिदेल पार लगतौ ?

घर मे मुरही नञि छलै। कदाचे रहै छइ। पीसीदू मुट्ठी चुड़ा आ कने गुड़ दऽ गेलै। गुड़ मुह मे दऽ सुखैले चुड़ा चिबबैत कुबेर बाजल — ले, खो गनेसी। देखै छही रथक मेघ महिआइ छइ।

हुँ।

चार पर थोड़े खढ़ चाही। रातुक बरसा मे घर चुबै छल -देखही!

गणेश देखलक जे घरक एक कोन सत्ते भासल छइ। ओ जीभ सँ अपसोचक शब्द कएलक। बाजल कोन दिस चुबै छौ तें रक्षा, ने तऽ सभ चीज-वस्तु भासि जइतौ। चार पर खढ़ देबही की आइ ? मेला गेले तऽ समय नञि भेटतौ।

कुबेर माथ हिलबैत बाजल - खढ़ कहाँ अइ। खढ़े तऽ नञि अइ।

आ छलौ जे ?

गोपीक मतारीक बिछान मे लागि गेलै।

बात बुझि गणेश गंभीर होइत बाजल — से तऽ नीके केलैं। जेहन समय।

आस्ते-आस्ते दुनू चूड़ा चिबाबए लागल। गणेश जाइ लेल आएल छल से बात जेना ओ सभ बिसरि गेल। खेनाइ गणेश पहिने बन्न केलक। घर सँ ओ कने पनिआएल भात खा कऽ बहराएल छल, कुबेर खाओ। लोटा उपर कऽ कऽ ओ कने पानि पीलक। कुबेर सेहो आर एक फंक्का मुँह मे दऽ बाँकी दान कऽ देलक अपन जेठ बेटा के। कहीं सभ चूड़ा ओ असगरे ने फाँकि जाए सोचि बाजल— चंडी के सेहो दू गाल दिअही लखा, बुझले।

लखा माथ हिलबैत कहलकै — उँह, ओकरा पीसीदेतै।

पीसी के आर नञि छइ। तोंही कने दऽ दही।

कुबेरक दुनू बेटा उलंग। बरिसकालक उमस मे घमाएल ओकरा लोकनिक दुबर पातरदेह चकचक करै छइ। पितृदत्त प्रसादक भाग बँटबारा लऽ कैं दुनू मे एगो छोटछीन कलह बाझि गेलै। कुबेर से देखितो नञि देखलक। ई जे ओकर उदासीनता से नञि कहल जा सकैछ। मनेमन ओकर एगो अस्पष्ट उद्देश्ये बुझना जाइछ। शिक्षा होउक, अपन-अपन हिस्सा बखरा बूझि लेब सिखओ। दू दिन बाद जीवनयुद्ध मे समस्त संसारेक संग लड़ए पड़तै, तखन के अओतै पंचैती करऽ लेल ?

लोटा उठा कुबेर घरक सामनेक संकीर्ण ओसारा पर सँ निघुरि कऽ ओलती मे कुड़रा कएलक। फेर गणेशे जकाँ लोटा उँच कऽ कऽ उपरे सँ पानि पीबि चिलम सजबए बैसल। पीसी ओसाराक एक कात हिलसा माछक तेल मे हिलसा तरैत

छइ। दोसर दिस मालाक सोइरिक नीचा ओसाराक माटि झटकक पानि सोखि ओकरा बासक जोग नञि रहए देने छइ। तैयो ओतै सिमसिमाह ओछैन पर नवजात शिशु के लेने माला दिन कटैछ। उपाय की ? जेहन घिनाओन मनुक्खक जन्मलाभक प्रक्रिया! आङन मे बेसी घर रहने बरु एगो घर अपवित्र कएल जा सकैत छलै। दूटा खोपरी जकर सम्बल तकर स्त्री आर कोनठाम सन्तान प्रसव करतै ? भद्रलोक सभ ओसारा पर अस्थायी घरक व्यवस्था कऽ लैछ, चौकी धऽ दै छइ। जे सभ आर बेसी भद्रलोक, तकरा सभके रहैत छइ स्थायी सोइरि घर जाइ मे रौद बसात नीक जकाँ लागि सकैछ। कुबेर के तऽ से खेमाता नञि छइ। आर जतबा खेमाता छइ ततबा तऽ ओ कएनहि अइ। नीक जकाँ झट्टक रोकबाक व्यवस्था केने अइ, घर छारबाक नार ओछैनक तर मे पसारिदेने छइ। देवीगंजक रेलकम्पनीक कोइला चोरी कऽ कऽ आनि आगियासीक इन्तजाम केने अइ। आर बेसी ओ कइए की सकैए ?

हठात्, मिनटो सँ कमे समयक लेल तरतड़ा कऽ जोरगर बरसा भऽ गेलै। तकर बाद जहिना झिसिआइ छलै, तहिना झिसिऐ लगलै।

गणेश देहरि लग घुसुकि आबि बाजल – जेबैं नञि कुबेर ?

कुबेर कहलकै — हँ, चल जाइ। अच्छा, तों कह तऽ गणेश, हीरु का····· सँ दू मुठ्ठी खढ़ मंगियौ ? देतै नञि ?

गणेश कहलकै – हीरु का····· तोरा खढ़ देतौ ? ओकरा तों चिन्है नञि छही कुबेर, कल्हुके काण्ड बुझल छौ ? बिहाने घर घुरलिऐ तऽ बहु कहलकै जे घरक चाउर शेष भऽ गेल छइ। खैब की सुथनी। रातुक जगरना, औंघी सँ आँखि ताकल नञि जाइत छल, ताइपर चाउर खतम। बहु के कहलिऐ जे हीरु का····· सँ थोड़े चाउर पैंच लऽ आन, दुपहर मे गामेक दोकान सँ कीनि आनब तऽ घुरादेबै। से कहलियौ ने, घुरादेलकै बहु के। की कहलकै से सुनबैं — बृहस्पति दिन बलू पैंच उधार देब बारन।

कुबेर आश्चर्यित होइत बाजल — तोहर तऽ अपने कक्का छौ ने।

हँ, तें ने पिरीत बेसी। खाली लेनाइ जनैए, देनाइ नञि।

एइ बात सभ सँ गणेशक बुद्धिमत्ताक परिचय भेटैछ। कुबेर मूड़ी हिलबैत बाजल – तऽ हमरा आङन किए ने पठेलही बहु के ?

गणेश जेहने बकलेल, तेहने सुघंग। ओ बाजल — तोरा घर मे चाउर कहाँ सँ अओतौ ?

चाउर कहाँ सँ अतै माने। हम सभ की भात नञि खाइ छी ? गरीब छी तें की दू मुठ्ठी चाउर पैंच उधार देल पार नञि लागत ? तेहन गरीब नञि छी, जानि राख।

कुबेर तामसे आ गणेश लाजे कनेकाल चुप भेल रहल। अन्त मे गणेश आस्ते-आस्ते पुछलकै – खिसिया गेलैं कुबेर भाइ ?

खिसिऐब नञि। तोहर बाते तेहने होइ छौ जे देह में पसाही लागि जाइए। अजान का····· नाओ पर बैसल हेतै, चल जल्दी।

कुबेर ओसारा पर आएल। बरसा मे भीजैत-भीजैत ओसारा पर थाल आ पिच्छर भऽ गेल छइ। घर आङनक एइ खिचार सँ नदी कातक पाँक बेसी नीक। ओइ मे ठेहुनधरि गड़ि गेनहु एना अस्वस्ति बोध नञि होइ छइ। घर आङनक थाल सँ पैर मे पानि लागि जाइ छइ। थाल कादो गीजि जकरा जीविका अर्जन करए पड़ैत छइ, ओही थाल कादोक स्पर्श सँ तकरो पैर कुटकुटाइ छइ। आकस्मिक क्रोध मे कुबेर नेना जकाँ ओसारा पर एक लात मारलक। तरबाक एकटा स्पष्ट छाप मात्र ओइठाम पड़लै, आर किछु नञिभेलै।

सोइरि घर सँ माला क्षीण स्वर मे कहलकै – हे चलि नञि जाउक, कने सुनि जाउक। घर चुबै छइ। इएह लार-पात सभ लऽ जाऽ कऽ धऽ दौक। बिछान तर जेहने रहने तेहने बिन रहने।

मालाक मुह सँ एहन निःस्वार्थ उक्ति प्रायः नञि सुनल जाइछ। कुबेर के मुग्ध होएब उचित छलै, किन्तु उनटे ओ विरक्त भऽ बाजल — नार बिनुदेने भीजल माटिपर सुतल हेतै ? ढंग करैक काज नञि हइ, चुपचाप पड़ल रहौक। घर छारए लै खढ़ पात लगतै से हम लऽ अएबै।

हुसेन मियाँ कहले रहै जे देतै खढ़ ?

हुसेन मियाँ कलकत्ता गेल छइ।

माला अपसोच करैत पुछलकैं — कहिया गेलै ? पहिने नञि बजलै। एक पैसाक सुइ लाबे कहितिऐ। कलकत्ता मे पाइ मे दस गो सुइया दैछइ।

कलकत्ता सँ माला एक पाइक सुइ अनबैत — सुनि ककरो हँसी नञि लगलै। पीसी बरन मालाक समर्थन मे की ने कहलकै — ठीक बुझबा जोग नञि भेलै। जबाबो देबाक प्रयोजन नञि छलै। कुबेरक पैरक गप्फा मे लागल पानि मे हजार पाँक कटैत छलै। ओ चुपे बहरा गेल।

नदी तीर पर नाओ मे ओकरा सभ के काज छलै। खेबा पीबाक बाद नाओ लऽ कऽ ओ सभ सोनाखालीक मेला जाएत। संग मे धीया पुता रहतै। केतुपुर ओ लगपासक गामक यात्रियो भेटि सकै छइ, से सभ भाड़ा दऽ कऽ मेला देखै लेल जाएत। नाओ कने साफ सुथरा कऽ कऽ एगो अस्थायी खढ़ पातक छज्जादेब जरूरी। नाओक छोटका पाल मरम्मति करै लेल उतारल गेल छलै, ओहो बाँसक मथनी पर ठीक कए लगाबए पड़तै। बरिसकाल मे बसात प्रायः सोनाखालिए दिस बहै छइ। गुमकी कए सामान्यो बसात जँ उठलै, पाल टाङि मेला जाइ मे घंटोभरि समय नञि लगतै।

नदीकात जाइते ओ सभ देखलक जे छत्ता ओढ़ने होसेन मियाँ ठाढ़ भेल अछि। घर छारबाक लेल होसेन सँ मङनीक किछु खढ़ पेबाक संभावना छलै, कुबेर कें ओकरा देखि खुसी हेबाक चाहैत छलै। तैयो ओकर आविर्भाव सँ चिरदिन जे एक अज्ञात आशंका ओकरा अस्वस्ति बोध करबैत रहलै, आइयो सैह आशंका हठात् ओकरा घेरि लेलकै। फिस-फिस कए बाजल -- होसेन मियाँ रे गनेसिया।

सैह तऽ देखै छी।

कने रहस्यमय लोक अइ ई होसेन मियाँ। घर ओकर नोआखाली अंचल मे छइ। कएक बर्ख सँ केतुपुर मे रहैऐ। वयस ओकर कते हेतै से चेहरा, मुहरा देखि अनुमान नञि कएल जा सकैछ। पाकल केश मे ओ कलप करैछ,दाढ़ी मे लगबैछ मेहदी, कान मे ठुसने रहैछ अतर लागल तुर। पहिले पहिल जहिया ओ केतुपुर आएल छल, पहिरन छलै एगो फाटल लुंगी, माथ मे रुक्ख झबरल केश, घसाट लगने देह मे दाग होएब निश्चित। मलहटोलीक मुसलमान माझी जहरक घर मे ओ आश्रय लेने छल, ओकरे नाओ पर लग्गा चलबैत छल। आइ कालि ओ अपन छोट-खुटीक तैलाक्त चिकन देह ठेहुन धरि पातर पंजाबी सँ झँपने रहैछ। अपन छोट सन नाओ सँ पद्मा पार करैछ। खेत पथार कीनि, घर बारी बना बेस आराम सँ जीबि रहलए। गत बर्ख निकाह कए दोसर बीबी घर अनलकए। एते सभ जे ओ केना केलक, गामक लोक ठीक अनुमान नञि कऽ पबैछ। नित्तहु नव-नव उपाय सँ ओ अर्थोपार्जन करैछ। नाओ लऽ कऽ ओ पद्मा मे माछ पकड़ए गेल-गेल तऽ ठीके कारण जाइत सभ देखलकै, किन्तु पद्मा मे कोनठाम ओ मछबारि कएलक, कोन घाटपर माछ बेचलक --- से ककरो नजरि नञि पड़लै। ओकर नाओक माझी सभ के पुछने एगो खिस्सा अबस्से सुनल गेलै - जाइ घाट पर ओ माछ बेचलकए ओतए नाओ सँ गेने सात आठ दिनक समय लगै छइ। तकर बाद कएक दिन होसेन गामे पर बैसल रहैछ, कोनो काज उद्देम नञि। फेर हठात्

एक दिन ओ निपत्ता भऽ जाएत। पन्द्रह दिन, मास दिन ओकर दर्शनो दुर्लभ। आविर्भाव होइ छइ ओकर हठात् एवम् किछु दिनक बाद दू सए गाय बकरी चलान भऽ जाइछ कलकत्ता।

बड़ सहज व्यवहार होसेनक। ललौन दाढ़ीक फाँक दऽ ओ सभ समय बिहुँसैत रहैछ। जे केओ ओकर कोनो छति करै छइ तकरा ओ बेस निर्ममताक संग दण्ड दैछ, किन्तु केओ कोनो दिन ओकरा तमसाइत देखने होइ से ककरो स्मरण नञि छइ। धनी-गरीब, भद्र-अभद्रक भेद-भाव ओकरा लग नञि, सभक संग ओ एके रंग मिठ-मिठ बात करत। आइयो कखनो काल ओ मलहटोली जाइछ, लटकलहा खोपड़ीक ओसारा पर फटलाहा पटिया बोरा पर बैसि आराम सँ हुक्का गुड़गुड़ा-बैत रहैछ। सभ चारुकात सँ घेरि बैसल रहने ओकर मुह आनन्दे चमकैत रहै छइ। एते उपर उठि गेलाक बादो एकरा लोकनिक आकर्षण मे ओ जेना स्वयं के नीचा खीचि अनैछ। नञि, मने-मन मलहटोलीक केओ ई बात विश्वास नञि करैछ। जीवन-संग्रामक जय-पराजयक ठीक मिलन-सीमान्त पर ओ सभ बास करैए। मित्र ओकरा लोकनिक केओ नञि। तखन विश्वास हो वा अविश्वास कोनो फर्क नञि। होसेन मियाँ हँसैत सोझे अङने जा ओसारा पर बैसि अपन गुप्त, गंभीर आ अज्ञात मतलब हासिल करब आरम्भ केनहु मलहटोली मे एहन केओ नञि जे ओकरा किछु कहतै। भऽ सकैए जे कहि सकै, मुदा कहै नञि छइ मात्र एहीदुआरे जे कहनाइ निरर्थक। ओइ सँ कोनो लाभ भेनिहार नञि। ओ जे करत से सभ स्वाभाविक आ अवश्यम्भावी। अन्यथा करै लेल छाती तानि ठाढ़ भेने ककर की लाभ हेतै ? ताइ सँ बरिसकाल मे घरक मरम्मति लेल कने खढ़पात भेटि जाइ, उपासक समय बिनु सुदिक किछु कर्ज भेटि जाइ, सएह ने ढेर लाभ।

होसेन मियाँक गुप्त मतलबक थोड़ बहुत आभास जे मलहटोलीक लोक कें नञि रहैत छइ से बात नञि। मलहटोलीक तीनटा परिवार निपत्ता भऽ गेलै। स्त्री, पुरुष, बच्चा-बुढ़ निर्विशेष एक-एकटा समग्र परिवार के जे होसेन मियाँ कतऽ राखि अबैए, पहिने तकर भनकी ककरो नञि लागल छलै। बाद मे पता चललै जे नोआखाली दिस समुद्रक बीच मे छोट सन कोनो द्वीप मे प्रजा बसा ओ अपन जमिंदारी स्थापित कऽ रहल अछि। ओ द्वीप ने कि सघन जंगल सँ भरल, शहर नञि, गाम नञि, लोक बसती नञि, छइ केवल जंगली जानवर आ असंख्य चिड़ै चुनमुनी।

थोड़ेक थोड़ेक जंगल साफ कए एइ द्वीप पर होसेन मियाँ ऋणग्रस्त अनाहारे मरणासन्न परिवार सभ कें लऽ जा अपन उपनिवेश बसा रहलए। लोभ देखा कऽ

आश भरोस दऽ कऽ एक एकटा निरुपाय परिवार के ओ एइ द्वीप मे लऽ जाइछ। सृष्टिक आरंभे सँ जे कहियो आवाद नञि भेल तेहन किछु जमीनदैछ, रहै लेल घर बना दैछ, खेती–बारी करै लै दैछ हर बड़द ओ जंगल काटै लेल किछु साज–सरंजाम। आन–आन ठाम सँ जे ओ कते परिवार के लऽ गेलए से के जनैए, किन्तु केतुपुरक मलहटोलीक तीन घर माझी के जे ओ आदिम असभ्य युगक चासी मे परिणत केने अछि से बात महलटोलीक ककरो सँ अज्ञात नञि छइ। तैयो जननाइ नञि जननाइ ओकरा सभ लेल समाने। माथ झुका कऽ ओ सभ होसेन मियाँक उपकार स्वीकार करत। मनुक्खक बासक अनुपयुक्त ओइ द्वीप के जनपद मे परिणत करबाक आह्वान के जतबा दिन सम्भव मूड़ी हिला अस्वीकार करत, जहिया से सम्भव नञि हेतै तहिया बहु–बेटाक हाथ पकड़ि चुपचाप होसेन मियाँक नाओ पर जा बैसत।

तें, मनेमन ओकरा सँ डेराइतो कुबेर लग जा बाजल - सलाम मियाँ भाइ।

होसेन कहलकै - सलाम, की खबर माझी। बड़ काहिल लगै छऽ?

बोखार लागल छल। कलकत्ता सँ कहिया एली ?

आइए। आर गणेश भाइ, तोहर की खबरि ? मेला नञि जेबहो ?

गणेश सेप घोंटैत बाजल - जेबै मियाँ भाइ, मेला जेबै। धीया–पुता सभ मेला जाइ लेल पागल भेल छइ, नञि गेने बनतै ?

गुमकी लधने छइ, पाल सँ काम नञि चलतऽ। सकाल–सकाल रमाना हो जा। बदरी लाधि सकैए, साम सँ पहिले आपस आ जइहऽ। अकास के हाल ठीक नञि छऽ। सुनै मे आएलहऽ जे आज–कालक अन्दरे जब्बर अन्हर बिहाड़ि अतै।

कुबेर एक बेर आकाश दिस आ एकबेर नदी दिस देखलक। पातर कुहेस सन मेघ भरल आकाश। निस्तरंग पद्माक वक्षपर पड़ैत बुन्नी सँ बनैत आ विलीन होइत अनगिनत बुलबुल्ला। नदीक दोसर तीर नञि देखाइ दैछ। नदीक बीचक नाओ सेहो अस्पष्ट। लगक कने स्पष्ट एगो नाओ दिस देखैत कुबेर संक्षिप्त प्रश्न कएलक - नञि जाइ मेला ? की कहै छी मियाँ भाइ ?

होसेन कहलकै — जेबऽ ने किए ? डर की ? आसमान देखि कऽ जइहऽ देखि कऽ आपस होइहऽ। बरिसकालक बिहारि संकेत दइएकऽ अबैए।

राजी होइत कुबेर नाओ पर चढ़ल। मुसलमान माझीक आरदू गोट नाओ मेला जाइ लेल तैयार छलै,दुनू संगहि विदा भेल। नदीक पानि लऽ नाओ धोइत धोइत कुबेर एक बेर उनटि कऽ देखलक, होसेन चल गेल छलै। घरक चार लेल

आवश्यक खढ़क बात आब ओकरा मन पड़लैए, होसेन के कहि रखने नीक होइतै। ओ एखने अइ, एखने नञि। कालि बिहाने ओकरा ओइठाम गेने सुनत जे ओ रातिए ढाका रमाना भऽ गेल। कहिया आपस हैत ? से के जनैए!

होगलाक छारनि बाती संग बन्हैत–बन्हैत कुबेर हठात् अकचकाइत बाजल— के हाक दैछौ रे गनेसिया ?

बहुत दूर नदी सँ आवाज अबै छलै, मानव कण्ठक लगातार एगो क्षीण आवाज। कुबेर ठाढ़ भऽ दुनू कानक पाछाँ हाथदैत अकानैत जवाब देलकै। ई भेल एक तरहक भाषा। पूर्वबंगक माझी श्रेणीक लोक छोड़ि ई भाषा दोसर नञि जनैछ, एइ भाषा मे बात नञि, छइ मात्र तरंगायित शब्द। उन्मुक्त पाँतर मे विस्तृत नदीवक्ष पर ई शब्द दूर सँ दूर चल जाइछ क्षीण सँ क्षीणतर होइत, किन्तु तरंगक क्रम अविकल रहैछ। अस्पष्ट गुंजन सन मद्धिम होइतहुँ यदि कानक स्पर्श करैछ, पद्मा नदीक माझी कानपाति सुनि एकर अर्थ लगा सकैछ। शब्दक दुर्लक्ष्य उत्स दिस ताकि ओ दीर्घ साँस लैछ। बाम हाथ कानक पाछाँ राखि दहिना हाथ मुहक सामने आनि संचालित करैत अविराम उच्चारित आवाज सँ ओ तरंगक सृष्टि करैछ।

धनंजय मन दऽ नञि सुनलक। ओ पुछलकै — के रे ? की कहै छौ ?

कुबेर कहलकै - अपन रासू।

रासूक नाम सुनि धनंजय अवाक भऽ गेल।

बिन्दा माझीक बेटा ? की बजै छैं ? नीक जकाँ सुनलिही तऽ ?

रासूक आवाज नञि चिन्हबै का ? अखनिते अतै,देखि लियहक।

धनंजयक विस्मय जेना कमैए ने चाहैछ। बहुत दूरक नाओ दिस तकैत ओ बाजल — रासू तऽ होसेन मियाँक द्वीप गेल छलै ने ?

हँ।

एलै केना ?

कुबेर विरक्त होइत बाजल–- से हम केना कहिअ, अतै तऽ पुछि लिअहक। होसेन मियाँ छोड़ि देने हेतै, ओ अपनो पड़ा सकैए, बिन बुझने की कहिअ ?

कनेकाल बाद फेर हाक सुनाइ पड़लै, एइ बेर आर स्पष्ट। हाकक आवाज मे जे एगो उत्सुकताक सुर छलै से तीनू के बुझना गेलै। गणेश कुबेर दिस ताकि किछु बाजै लेल जे मुह खोललक से खोलनहिंटा रहल; बाजल नञि किछुओ। हाकक जवाब देबा लेल कुबेर सुदीर्घ सांस लेलक।

किछु कालक बाद एगो पुरान जर्जर सन नाओ आबि भिड़लै। दूगो अनचिन्हार माझी नाओ खेबि अनने छल। आन गामक नाओ। नाओक खोल मे तत्तरास कटहर भरल जे नाओक कगनी पानि सँ सामान्य कने उपर भसैछ। नाओपर कोनो छज्जा नञि – झिसी मेदुनू माझी आ रासू तीनू भीजल। झटपट रासू के एइ नाओ पर उतारि, फुसुर फुसुर गारि सन पढ़ैत माझीदुनू अपन नाओ के ठेलि मुह घुमबैत लग्गा धेलक। पद्मा नदीक चिरन्तन रीतिक अनुसार कुबेर पुछलकै – कोन गाम सँ एलहो माझी, जेबहो कोन गाम ?

जवाब देबाक रीतिओ चिरन्तन। ओ सभ सक्रोध बाजल–– सुलपी सँ, मेला जेबै।

ओकरा लोकनिक तामसक कारण सहजे बुझल जा सकैछ। सुलपी सँ सोझे मेला जेबाक बदला रासू के एइठाम पहुँचेबा लेल ओकरा लोकनि के पद्मा पार करए पड़ल छलै। बदला मे रासू बुते देल जे किछुओ पार नञि लगलै सेहो बात स्पष्टे। किन्तु ओकरा लोकनिक ई क्रोध केवल क्रोधेटा, एकर कोनो परिणामक सम्भावना नञि। रासू जकाँ दुरवस्था मे पड़ि फेर केओ जखन पद्मा पार कऽ देबै लेल कहतै, एहिना तमसाइयो कऽ बिना कोनो प्रत्याशाक भरती नाओ लेने ई सभ तीन कोस अतिरिक्त लग्गा भाँजत, मना नञि कऽ पाओत। ई कोनो विशेष बात नञि, परोपकारो नञि, ई भेल रीति, अपरिहार्य नियम। अचरजक विषय ई जे एइ नियमक पालन केनाइ आ फेर तमसा गेनाइ सेहो अनियम नञि।

नाओ पर आबि रासू किछुखन जड़वत ठाढ़ भेल रहल। तकर बाद कुबेर कें पँजिया गदगद कण्ठे बाजल — हम आबि गेलिअ हओ कुबेर भैया।

केना एलही रे रासू ?

कहै छिअ भैया, सभ कहै छिअ। पहिले तोरा आर के नीमन जकाँ देखिली, कते दिन बाद घुरलीहए।

कुबेर ओ गणेश के ओकरा आँखि मे नोर देखाइ पड़लै। धनंजय पड़ल छल पाछु दिस। ओकर उपस्थिति मे रासू आबि कुबेर के आह्लादक संग पँजिऔने छलै से देखि ओकरा इर्षा आ असंतोष भेलै। ओना रासूक आविर्भावक उत्तेजना ओकरो थोड़ नञि छलै, किन्तु तकरा नुकबैत ओ शान्त आ उदास भावें बाजल– – बैस रे रासू, बैस।

कुबेर के छोड़ि रासू छावनीक नीचा अधभीजल तखता पर जा बैसल। उनटे हाथे आँखिक नोर पोछि अपन पहिरन जीर्ण बसन मे हाथ पोछलक। ओकर शीर्ण

कंकालवत देह दिस तीन जोड़ा आँखि टकटकी लगओने छलै। आइ सँ तीन साल पहिने जखन ओ होसेन मियाँक संग सपरिवार मयना द्वीपक यात्रा केने छल, तखनो जे ओ खूब हृष्ट-पुष्ट छल से बात नञि, किन्तु एना टुटलो नञि छल ओ। ओकर माथक पैघ-पैघ केश जटा मे परिणत भऽ गेल छइ, सौंसेदेह भरलदाग, कैकटा घाओ एखनो नीक जकाँ सुखैल नञि छइ। पैर दुनू, ठेहुन सँ घुट्ठीधरि फुलल। देहक चाम जेना देह सँ फराक भऽ सुखाकऽ टाँट आ कारी भऽ गेल, एखन वर्षा मे भीजि, भीजल जूताक चाम सन सिमसिमाह देखा पड़ै छइ। कनिञे पहिने ओते दूर सँ ओतेक जोरे हाक देबाक दम ओकरा कतए सँ एलै सोचि कुबेर अवाक भेल छल।

रासू जेना औंघाए लागल छल। धनंजय पुछलकै — मयनाद्वीपे सँ एलैं रासू ?

हुँ।

पड़ा कऽ ?

हँ, बैसाख मास।

बैसाख मास ? एत्ते दिन कहाँ छलही ?

नौआखाली मे छलिऐ। बेहस्पति दिन एलिऐ सुलपी। कहबऽ ने कक्का, सब खेरहा कहबऽ। अखनी भूखे परान जाइहै। हो कुबेर भाइ, छऽ नञि कुच्छो?

तत्काल कौतुहल निवृत्तिक सम्भावना नञि देखि रासू के संग लऽ तीनू गाम घुरि आएल। धनंजयक घर घुरि पहुँचबाक पूर्वहि रासूक आविर्भावक वार्त्ता सगरो मलहटोली पसरि गेल छलै। किछुए काल मे धनंजयक ओसारा महलटोलीक छौंड़ी-छौंड़ा, स्त्री-पुरुष सँ भरि गेलै। सभक आँखि मे अपार विस्मय। तीन साल पहिने सभ जकरा मृत्युक मुह मे सोंपि देने छलै, तीनसाल सभ जकरा प्रायः बिसरि गेल छल, ओ फेर एलै कहाँ सँ ? रासूक मामा अस्सी बर्खक बूढ़ पीतम माझिओ नूज देह लेने लाठी ठुक-ठुक करैत आबि हाजिर। ओसाराक चटाइ पर मोहाच्छन्न जकाँ भेल बैसल रासू, एक समय परिचित एइ जनता दिस निश्चल निस्तेज आँखिए ताकि देखैत छल। क्षीण दृष्टि पीतम माझी लग जा बड़ी कालधरि ओकरा निहारैत रहलै। चिन्हलाक बाद भावाबेग मे ओकर हाथक लाठी खसि पड़लै आ ओहो तलमला कऽ भागिनक देहे पर खसल आ कानए लागल। कानए लागल ओ चोट लगने नञि, कानए लागल ओ ई बजैत जे रासू असगरे घुरल आर सभ कहाँ रहलै ?

जाहि अनाहारक पीड़ा बर्दास्त नञि कऽ पाबि एक दिन रासू सपरिवार घर छोड़ने छल, दू मुट्ठी चाउर दऽ पीतम तकरा लाघव कैक कोनो चेष्टा नञि कएलक।

तें ओकर ई कानब जे शोभा नञि दैत छइ, से बात नञि। ताहि दुर्दिन मे मामक स्वाभाविक उदासीनताक स्मृति रासुओ मन मे पोसि नञि रखने अइ। केवल ताहि दुर्दिनक स्मृतिए नञि, सभ किछु जेना ओ एतेकाल बिसरने छल, अपन दुख बेदनाक सर्वांगीण इतिहास। पीतमक कानब देखि-सुनि ओहो हठात् भोकारि पाड़ि कानए लागल - हम असगरे घुरलिऐ हओ मामा, सभ के गंगाक पानि मे भसा असगरे घुरि एलिऐ।

कनबाक बीचहु मे पीतम अकचका उठल। आ अकचकाइते पुछलकै — से की कहै छैं रे रासू, सभ खतम ?

रासू सहमति जनबैत बाजल — हँ मामा, सभ खतम। हमर अपन कहि आर केओ नञि। केओ नञि। एक स्त्री, दू पुत्र ओ एक कन्या, एक संग एइ चारु के लए ओ निरुद्देश यात्रा केने छल होसेन मियाँक जंगलाकीर्ण मयनाद्वीप उपनिवेशक, एक एक कऽ चारु ओइ मृत्यु नगरी मे निरुद्देश भऽ गेलै। एहन गंभीर शोकाबह सम्बाद सँ केतपुरक मलहटोलीक निवासी सकल नर-नारी मूक भऽ गेल। अथच ई सम्बाद रासूक आकस्मिक आविर्भाबो सन विस्मयकर नञि। ई सभ जनिते छल। समुद्रक बीच जाइ द्वीप मे सृष्टिक आरम्भहि सँ लोकक बास नञि, ओतए गेने ककरो बाँचैक उपाय छैक ? जहिया रासू सभ मयनाद्वीप कऽ विदा भेल तहिए सभ केओ निश्चित जनै छल जे ओ सभ मरैं लेल जाइए। रासू जे जीवित अवस्था मे घुरि आएल, अचरजक बात तऽ सैह, तेहन अचरज जे रासू के सामने देखितो जेना विश्वासे ने होइ जे ओ सत्ते घुरि आएलए।

धनंजयक स्त्री बुतिक माए एगो कलै कएल बासन मे कने घोर आनि कऽ देलकै। रासू एके साँस मे गट-गट कऽ पीबि गेल। समवेत जनता एतेकाल विशृंखल भेल छल, आस्ते आस्ते सभ एक एकटा सुविधाजनक जगह पाबि बैसि रहने रासू के घेरि एगो सुन्दर शृंखलाबद्ध सभाक रूप लेलक। तकर बाद एकटा पर एकटा प्रश्न। जवाब मे कहल गेल रासूक प्रत्येक बातके सभ बेस आग्रहक संग हजम करैत रहल।

पीतम सिहरैत पुछलकै — मयनाद्वीप मे बाघो- सिंह छइ ने रे रासू ?

छइ माने ? भरल छइ।

कहि कऽ सभक मृदु सिहरन लक्ष्य करैत अर्द्धमृत अवस्थाओ मे गर्वक उत्तेजना रासू के जेना नवजीवन दान देने होइ, असोथकित भेल टुटल झुकल बैसल रहबाक बदला हठात् से सोझ भऽ गेल। बाजल — बाघ-सिंह! बाघ-

सिंहक नामे डेरा गेलह ? की नञि छइ मयनाद्वीप मे। साँप जे छइ, एक एकटा तीन आदमी के गीड़ि जेतै। राइत मे समुद्रक गोहि उपर आबि लोक के खीचि कऽ लऽ जाइ छइ।

हँ, बजैत-बजैत रासूक मुह खुजि जाइ छइ आ सुनैत-सुनैत 'हा' भेल रहैछ ओकर श्रोता लोकनिक मुह। होसेन मियाँक मयनाद्वीप एहन भयाओन जगह छइ।

जे सभ रथक मेला गेल छल, एक-एक कऽ ओ सभ घुरि रहल छल। साँझक समय मलहटोलीक अङने अङने आजुक साँझ उतरैछ आनन्दक संग। सधबा स्त्रीगण सभ लाल तीन पढ़िया साड़ी उनटा पुनटा कऽ देखैछ, नव-नव काचक चूड़ीक सौन्दर्य देखि मुग्ध होइछ, काठ ओ मोती-माला यत्नक संग पौती मे सजा कऽ रखैछ। नेना -भुटका सभ पिपही बजबैछ आ माटिक पुतरा-पुतरी सँ खेला करैछ। आह्लाद बहनकारी ई तुच्छ वस्तुओ जाइ खोपड़ी मे नञि अबैछ, ताइठाम जे विषाद पसरल रहैछ तेहनो बात नञि, कोनो ने कोनो रूप मे सोनाखाली मेलाक आनन्दक ढेउ ओतौ पहुँचिते छइ। एगो कटहर, दू टा अनारस, आध सेर बतासा एहु दरिद्र सभक उपनिवेशक जे दरिद्रतमो परिवार, केवल नून आ अदृष्ट के ठकि मकइक पीठी माछक तेलहि मे तरल पोठी माछ संग दिन पर दिन अधपेटा भात खाऽ कऽ रहैछ, ओकरा सभ के खुसी हेबाक लेल आर बेसी की चाही ? कुबेरक प्रतिवेशी बुढ़बा सिधू दास एक पैसाक सम्बल लऽ मेला गेल छल। पैसा ओ खर्च नञि कएलक किन्तु मेला सँ जे विपुल सम्पति संग्रह केने आएलए ताइ सँ ओकर पैघ परिवार मे उत्सवक शेष नञि। सिधू भीख नञि मङलकए, बस परि लागि गेलै। दिन भरि मेला मे घुरि जेना-तेना संग्रह कऽ लेलक। संग्रह केलक तीनटा दगल विराट फजुली आम, एकटा पघिलल सौंस खजबा कटहर, सेर तीनेक मिझरैल चाउरदालि आ एगो खस्सीक माथा (मुड़ा)। गरीबक उत्सव लेल आर की चाही ? मङनीक छइ तें की फेकबाक वस्तु भेलै! सीरा एक तरहें कही तऽ ओ चोरिए केलकए, किन्तु ताइ सँ की ? भीख सिधू ककरो सँ नञि मङलक, पाइ ओ ककरो नञि चोरौलकै।

कुबेरक ओसारा लग ठाढ़ भऽ सिधू बाजल-- हमरा बिनु लेनहि घुरि अएलें कुबेर ?

कुबेर ओसारा पर ढिबरीक इजोत मे एगो सहथक बरछी सभ परीक्षा करैत छल, मूड़ी बिनु उठौनहि बाजल — तों तऽ हीरूका कऽ नाओ सँ पहिने घुरि एलह।

सिधू ओसारा पर उठि जाइछ। से अएलिऐ कुबेर, से अएलिऐ। ठट्ठा केने छलिमी - से नञि बुझलिही ? सहथ बेस अनलैं। कत्ते लेलकौ ?

आठ आना।

आठदस हाथ नम्मा सोझ पातर बाँस मे दस बारहटा लोहाक बरछी लगौल माछ मारबाक औजार के गंभीरताक संग सिधु ओ परीक्षा करैछ। डाँट दिस धऽ अन्हार ओसारा पर, फेकबाक अभिनय करैत बाजल - ओजन कम नञि छइ, जीति गेलैं कुबेर। कालि-परसूधरि हमहूँ एगो कीनि आनब।

सिधूक मतलब की छइ से ठीक सँ नञि बुझि पबैए कुबेर। सहथ के ओ घरक एक कोना मे ठाढ़ कऽ कऽ राखि अबैछ। बेर मे वर्षा बन्न भेने गुमकी धेलकै। आकाश मे एखन बेसी मेघ नञि, किन्तु कखन जे मेघ करिया जेतै आ मुसलाधार बरिसऽ लगतै से नञि कहल जा सकैछ। रासू के पीतम अपना आङन लेने गेलै। भऽ सकैए एखन फेर ओकरा घेरि सभा बैसल होइ, अपन निर्वासनक कथा कहि रासू सभ कें मुग्ध केने हैत। जोरक भूख नञि लागल रहने भऽ सकैए कुबेरो ओइठाम जा बैसैत। पीसी हंडी मे भात रन्है छलै। रासूक रोमांचक गपक लोभ रहितो बिनु खेने कतौ जेबाक खेमाता ओकरा नञि।

सिधू बैसल बैसल अर्र-दर्र बजैत रहैए। बात मे कोनो सामंजस्य नञि, अनिर्दिष्ट अवान्तर विषय बात। कुबेर बिनु बुझनहिं हुँ-हाँ करैत जाइछ।

पेट मे भूख आ मन मे पीतम माझीक आङन जेबाक इच्छा, बुढ़बा सिधूक बकबक सुनैत-सुनैत ओ अकच्छ भऽ जाइए।

शेष मे सिधू जेना प्रसंगेक क्रम मे बजैछ - खस्सीक एगो सीरा अनलिऐ कुबेर, विराट सीरा - भैंसक माथ नाहित दू गो सिंघ।

कते मे देलकऽ ?

मेला उसरबाक समय छलै, सस्तेदेलकै। पहिने तऽ पूरे पाँच आना मङैत छल, अन्त मे चौदह पैसा मे देलक। छौड़ी के रान्है लागी कहलिऐ तऽ कहलक जे बलू तेल मरिच नञि छइ, चाउरो ने कि शेष।

सिधूक बात सुनबाक समस्त आग्रह जेना कुबेर के हेरा गेलै। ओ पीसी के पुछलकै - भात भेलौ पीसी ? ओ एकदम सँ पाछू घूरि बैसल।

कनेकाल अपेक्षा कऽ सिधू उठि गेल। बाँसक एक टोकरी मे राखल सीरा आनि कुबेरक सामने रखैत बाजल— देख कुबेर फुसि नञि ने कहलियौ। घेंट लग बेस माउस छलै, हे देखही - टोकरी लग मुह लऽ जा ठेकना-ठेकना गुदगर जगह ओ कुबेर के देखबैछ। करुण दृष्टिञे कुबेरक मुह दिस तकैत बजैछ — तेल मरिच दऽ कऽ जे बेंजन बनतै - अमरित। अमिनुद्दी सँ पियाजु लहसुन माङि आनि-

तऽ हमरा किए देखबै छऽ ? रान्हऽ गऽ ने बेंजन।

सिधू एइबेर साफ-साफ बाजल -- तेल मरिच आ दू मुट्ठी चाउर दऽ दे कुबेर। तोरो देबौ बेंजन।

कुबेर संदेह करैत बाजल — ठीक देबऽ ने ?

सिधू आहत सन होइत बाजल — देबौ नञि ? से की कहै छैं कुबेर ? तोरा नञि देबौ तऽ जैब कहाँ ?

तेल मसल्ला आ चाउर लऽ सिधू उठि गेल। सोइरि सँ माला बाजलि- की बज्जात ने अइ ई बुढ़बा। सीराक भाग ने आर किछु देतै -देखैत रहौ।

कुबेर उदास होइत बाजल - नञि देतै तऽ नञि देतै। एके माघे तऽ जाड़ नञि ने जाइ छइ, फेर कहियो एने डेङा कऽ बिदा कऽ देबै। हमरा लग चलाकी कऽ कऽ जैत कहाँ ?

भात उतरलाक बाद तपते मार-भात, तरल हिलसा माछ ओ मिरचाइ सन लाल होइत भेल तरकारिक संग पले मे कुबेर अपन पेट भरि लेलक। कने काल बाद एगो बाटी लऽ सिधूक अङना सँ सीराक तरकारी आनै लेल गोपी के कहैत ओ अङना सँ बहरा गेल।

पीतम माझीक घर मलहटोलीक एक दम उत्तर सीमा पर। बड़दघराक भीतरे भऽ आङन जेबाक रस्ता। बड़दघरा मे एकदिस बान्हल दू गोट लटल गाय आ दोसर दिस राखल ओकर प्रसिद्ध बड़का जाल। एते पैघ जाल केतुपुर मे आर ककरो लग नञि छइ। घर मे ओसाराक झमेला नञि, बड़दघरा पार कऽ ढुकए पड़ैछ पैघ एकटा घर मे। दू कातक छोट-छोट दुनू घर मे जेबाक बाट सेहो एही घर दने। कंजूसी ओ घेराजाल सन घर बनेबाक ई अदभुत् ढंगो कम प्रसिद्ध नञि पीतम माझीक। लोक नाम देने छइ कैदखाना। घरक पाछाँ थोड़े खाली जगह, तकर बाद एगो डबरा। डबराक ओइकात बाँसबनक बाद बस्ती नञि छइ, बहुत दूर धरि विस्तृत धानक खेत, अषाढ़क आरम्भे मे आधा सँ बेसी पानि मे डूबल। बाँसबन मे मलहटोलीक प्रायः सभक परिचित एक जोड़ा पाँचफूट नम्मा गहुमन साँप बास करैछ। डबरा मे रहैछ कएकटा सनगोहि।

बड़का घर मे ठीके सभा लागल छलै। कुबेर घर ढुकिते अवाक भऽ देखलक जे सभापति रासू नञि, होसेन मियाँ। पीतमक काठक सन्दुकक उपर केथरी ओछा होसेन के बैसक देल गेल छइ। भीड़ मे एकदम सँ मिझरा गेल अइ रासू। सभक मुँह पर एकटा भीषण अस्वस्तिक भाव, सभ के सभ तरे आँखिए होसेन मियाँ

दिस तकैत। घरक रुद्ध बसात एते लोकक निसास सँ दुषित भऽ गेल अइ। एमहर ओमहर ताकि कुबेर सुट्ट दऽ सभक पाछु जा बैसि रहैछ। होसेन मियाँ एइठाम केना आएल ? एते लोकक सामने जखन रासूक संग ओकरा मुहा-मुही भइए गेलै तखन देखा चाही जे की काण्ड होइए।

कुबेर विषाद बोध करैछ। आह, एते पैघ एकगोट दृढ़, कर्मठ, शक्तिशाली जिद्दी, सम्मानक आकांक्षी लोक, भाग्यदोषें आइ जबद भऽ गेल। रासू ओकरा एकदमे सँ देखार कऽ देलकै सभक सामने। जे लोक एते प्रतिष्ठा अर्जित कएने छल, आइ लगैए ओकर बकारे जेना बन्न भऽ गेल होइ। सोझा-सोझी ओकरा अपमान करबाक साहस भरिसक ककरो नञि हेतै, किन्तु कौशल सँ, एतेकाल जानि ने नाना तरहें कते लज्जित केने हेतै सभ मिलि। कुबेर ममता बोध करैत जे से सोचैत रहैए। सम्भव भेने आइ ओ होसन मियाँक पच्छे लित। लोभ देखा कऽ, फुसि आश्वास दऽ कऽ जे होसेन मियाँ रासूक स्त्री-पुत्र के सुदूर मयनाद्वीप लऽ जा कऽ हत्या केलक, ओकर एइ कीर्ति के कोन युक्तिए ओ समर्थन करैत-कुबेर से नञि जनैए। ओ जकरा सँ डेराइए तकर माथ एते लोकक सामने हेर भेने ओ मने मन कष्ट पबैत छल। अन्ध आवेगक संग ओकरा मन होइ छलै जे पंगु असहाय जीव सभक लेल शक्ति के लज्जित केनाइ नीक बात नञि — मनुक्खक धर्मविरुद्ध ई आचरण।

कुबेर ई बात जनैए जे होसेन मियाँक पंचैती कऽ ओकरा दण्ड देबाक कल्पनो मलहटोलीक ई समवेत मातबर सभ नञि कऽ सकैए। तैयो ई समूह आइ पंचक भाव भंगि ग्रहण केने अइ। केना स्पष्टत: होसेन मियाँक अपमान करैत छइ एकरा लोकनिक बैसबाक ढंग, देखबाक ढंग, चुप रहबाक ढंग।

बिचलित ओ उत्तेजित भऽ एमहर-ओमहर तकैत कुबेर देखलक जे जहर, अमिनुद्दी एवम् आर दू गो मुसलमान माझी अत्यन्त गम्भीर भेल एक कात बैसल अइ। कहबा लेल इएह सभ केतुपुरक मुसलमान माझी समाज, आर दू-चारि गोटे जे अछियो से नामे लेल। एकरा लोकनिक संख्या पाँच— छओ घर सँ बेसी नञि। मलहटोलीक पुबारिकात एकरा लोकनिक एकत्र घोधिऐल घर-आङनक टाटी फड़की देखि सहजे चिन्हल जा सकैछ। जते किए ने जीर्ण भऽ जाउक, फटलाही बोरा आ सुपारी गाछक पात सँ मरम्मति कऽ कऽ टाट फड़क के ई सभ सोझ कएने रहत। अथच खूब कठोर भावें जे पर्दाप्रथा के मानि चलैए सेहो नञि कहल जा सकैछ। स्त्रीगण के बाहर नञि गेने चलनिहार नञि। नदी सँ पानि आनै लेल जाए पड़तै, पुरुषपात गाम पर नञि रहने दोकान सँ सौदा आनै लेल जाए पड़ैत छइ, घरक

अगुआर पछुआर मे सजमनि कदीमा फड़ने, मुर्गीक अण्डा पाड़ने गाम मे जा बेचि आबए पड़ैत छइ। टाट-फड़क पर्दा करै छइ केबल आङनक आ कमबयसी बेटी पुतहुक, जँ तेहन केओ हो। ई सभ आ महलटोलीक अमुसलमान अधिवासी सभ सद्भावक संग रहैछ। धर्म जते किए ने पृथक होउक, एकरा लोकनिक दिनचर्या मे कोनो पार्थक्य नञि। ई लोकनि समान भावें धर्म सँ पैघ एक अधर्मक पालन करैछ — दारिद्र्यक। विवाद जँ कखनो बझितो छइ तऽ से सम्पूर्ण व्यक्तिगत, मेलो भऽ जाइ छइ कनिञे मे। कुबेरक संग सिधूक जाइ कारणे विवाद होइ छइ, कुबेर आ अमिनुद्दीक विवादो होइ छइ ताही कारणे। कने गारा-गारी ओ हाथा-हाथी भऽ सलटि जाइ छइ।

मध्यस्थता प्राय: जहर माझिए करैछ। कहैछ — कुबेर भाइ जाएदहो। अरे ओ अमिनुद्दी, सम्हल जो। बच्चा लोग के नाहित झग्गर करे लागोहै, तोरे शरम नै हौ।

कुबेर लक्ष्य करैत आश्चर्यित भेल जे इएह अमिनुद्दी आइ एक विशिष्ट व्यक्ति भऽ गेलए। ओ होसेन मियाँ दिस नञि, ताकि देखैए अमिनुद्दी के। अमिनुद्दीक अस्वस्ति सेहो अत्यन्त सुस्पष्ट। जहरक मध्यस्थता मे अनेक बेर विवाद मेटएलहु मने मन अमिनुद्दीक उपर ओकर राग छलैके। नजरि मिलते ओ मुह घुरा लैछ।

सभ चुपचाप बैसल, जेना ककरो मुह मे बकारे ने होइ। हठात् जानि ने की सोचि होसेन मियाँ कुबेर के सम्बोधित करैत बाजल — पाछाँ किए बैसलऽ कुबेर भाइ ? सामने आबऽ ने। खाना पीना भेलै की नञि ?

कुबेर हठात् बड़ उल्लास बोध कएलक। ओ अगुआ कऽ सभक सामने जा बैसैत बाजल— भेलै मियाँ भाइ भऽ गेलै।

बामा हाथें अपन ललौनदाढ़ी हँसोथैत होसेन मियाँ बाजल— गणेश के नञि देखै छिऐ, कहाँ गेल ?

पता नै। मेला सँ घुरतीकाल मझिला बाबू बजा कऽ कहले रहथिन, गामे जाइ छौ ने गणेश ? माछ लेने जो, आङन मे दऽ दियही। ई कहि ओ एक डाली इतना माछ देलखिन। भऽ सकैए माछे दै लेल ओ बाबूक आङन गेल हो।

मझिला बाबू अर्थात् माझिल जमिंदार। नाम अनन्त तालुकदार। केतुपुर गाम हिनके छनि। महलटोलीक जे केओ दू-एक बिघा जमीन रखने अइ, मझिले बाबू के लगान दै छनि। माझिल बाबूक नामक चर्च होइते सभ के सभ मनोयोग सँ कुबेरक बात सुनलक। होसेन मियाँ पुछलकै — मझिला बाबू कहिया अएला ?

बिहस्पति दिन।

हीरू माझी आँखि मिलमिलबैत बाजल— देखै छी मझिला बाबूक सभ खबरिए रखैए कुबेर। भुवन साहाक संग मामिलाक की भेलै कह तऽ ?

बाबू के हाँस चरक दखली भेटि गेलनि। सुनलिऐ जे भुवन साक नायेब के ने कि जहल भऽ गेलै कका। साँइथिक कुंज गोसाँइ गबाही देलकै, ओ ने कि अपने आँखिए नायेब के बाबूक कचहरी मे आगि लगबैत देखने छलै।

पीतम बाजल — हुँ। तों केना जनलैं ?

कुबेर सगर्व बाजल — से की पुछै छऽ मामा ? हमरा सँ कोनो बात छिपल छइ। शीतल बाबूक ओइठाम सुनलिऐ।

शीतलक नाम सुनिते पीतम चुप भऽ गेल। नकुल शैतानी करैत पुछलकै — शीतल बाबू! ओ तोरा भेटलथुन कहाँ कुबेर ?

कुबेर बिहुँसैत बाजल— नकुल भाइ, जेना दुधमुहे होअ, कुच्छो ने जनै छहक। शीतल बाबू लग हमर पाइ बाँकी अइ। कालिए राति अपन युगीक ओइठाम तगादा मे गेल छलिऐ। पाइ देबाक इच्छा डकूबा के नञि छइ। बेस खातिर करैत कहलक - बैस रे कुबेर, चिलम पी। चिलम पिबैत भरि देशक गप-शप होइत रहलै। कहने तऽ खिसिया जेबऽ नकुल भाइ। शीतल बाबू बजैत रहै जे मझिला बाबू ने कि कर्ज उधार मे डूबल छइ।

बुढ़बा पीतम माझी कछमछ करैत छल। नकुल तैयो शैतानी करैत बाजल — युगीक ने कि बच्चा होनहारी छइ रे कुबेर ?

कुबेर कहलकै - पता नञि। देह कने चिकनैल देखलिऐ।

अजीब एकरा लोकनिक रसिकता! युगी पीतम माझीक बेटी छइ। एखन मलहटोलीक एक कात मे एगो घर बान्हि माझिल बाबूक मोहरिर शीतल घोषक संग रहै छइ। एते लोकक बीच पीतम माझीक सोझे मे ओकर बेटीक मादे अनायासे नकुल जे रसिकता करैछ, सभ केओ हँसैत तकर उपभोगो करैछ, बिना कोनो बाधा ओ दुबिधाक।

पीतम पित्ते कपैत कहलकै निकल, निकल तों हमरा घर सँ नकुलबा, दूर हो।

नकुल बिहुँसैत बाजल — तमसाइ किए छऽ मामा ? जवाब नञि देल होइ छऽ ? मझिला बाबू कुबेर के एते खातिर किए करै छइ पुछहक ने! कुबेरक बेटा एहन गोर नार केना भेलैए से पुछहक।

कुबेर मुक्का तानि कहै छइ — मारि देबौ नकुलबा, खून कऽ देबौ तोरा हम।

बुझि पड़ैछ जेना सभाक चेहरे बदलि गेल होइ। रासू ओ होसेन मियाँ के लऽ कऽ सभा मे जे असन्तोष ओ प्रतिवादक भाव आएल छलै प्रसंगान्तर भेलाक कारणे से एखन बिला गेलै। ओइ मादे जेना आर ककरो किछु बजबाक वा सोचबाक नञि होइ। होसेन मियाँ उठि कऽ ठाढ़ होइए।

बिहान एक बेर हमरा ओइठाँ जइहैं रासू भाइ। पाइ-कौड़ी किछु पओना हैती, दऽ लऽ कऽ फारकत्ती हैब। मयनाद्वीपक जमीन नञि लेने जंगल झाड़ काटैक मजूरी दै छिऐ हम, खेनाइ आ लत्ता कपड़ा फराक। बिहान जइहैं। होसेन मियाँ अपन ललकी दाढ़ीक दोग सँ बिहुँसैए, बजैछ — सोचैत हेबैं जे होसेन मियाँ ठकहारा अइ। तोरा ठकने होसेन मियाँ के कोन फेदा। कोन साला के जबरदस्ती मयनाद्वीप लऽ गेलिअइए ? अपना मने गेल छलैं - झूठ कहै छिऔ ? घुरि ऐबाक छलौ तऽ बजलैं ने किए ? साथे लेले अबितियौ।

रासू माथ झुकओने सुनैत रहैए। अमिनुद्दी पुछलकै — चललऽ ने की मियाँ भाइ ?

हँ।

तऽ सुनि राखऽ, हम मयनाद्वीप नञि जेबऽ से कह देलिअ।

होसेन मियाँ ओहिना बिहुँसैए।

तोरा जाइ लागी कहाँ कहलियौ अमिनुद्दी। मन ने होइ हौ तऽ काहे जेवें?

पतरकी कपड़ाक पंजाबी घामे भिजि गेने होसेन मियाँक छातीक सघन लोमराशि झकझक करैछ। ओइपर हाथ फेरैत ओ फेर बाजल — जानो सँ बेसी तोरा सभ के मानै छियौ, आइ एइ दिलपर तेहन चोटदेलैं। कुबेर भाइ, जेबऽ ने की घरे ?

कुबेर राजी होइत उठि आएल। दुनू बढ़द्घरा होइत बाटपर आबि गेल। आकाश सघन मेघ सँ भरि गेल छलै। दुर्भेद्य अन्हार मे महलटेलीक बाट पैरक तरी मे जेना अदृश्य भेल। खूब सावधानी सँ पैर बढ़बैत अगुआए पड़ैत छलै। दीर्घ दिनक परिचय नञि रहने, घरक कात-करोट दने टेढ़-मेढ़ बाट ओ सभ खोजियो ने पबैत। कुबेरक घरक लग आबि आकाशक जमाओल मेघ हठात् गलि गेने पल खसिते ओ सभ भिजि गेल। कुबेरक संगहि होसेन मियाँ हाजिर भेल ओकर टुटली मड़ैया मे।

ओसारा पर झट्टक अबै छलै तें होसेन मियाँ के घरे मे बैसाबए पड़लै। कुबेरक दुनू ननकिड़बा – लखा ओ चण्डी सुति रहल छलै, जागल छलै गोपी। चटाइपर जमि कें बैसैत होसेन मियाँ ओकरा दुलार सँ लग बजा बाजल — बीबीजान बड़ पियास लागल अइ कने पानी नञि आनब' ? गोपी एक लोटा पानि आनि देलकै। होसेन लोटा उपर कऽ पानि पीबि लोटा एक कात मे राखिदेलक। घरक चार सँ जे पानिक धार चुबै छलै से आँजुर मे भरि लोटा अखारि शुद्ध कऽ लेलक गोपी।

राति बढ़ले जाइ छलै, मुदा बरसा थम्हैक कोनो लक्षण नञि। पीसी ढेकीवला घर मे जा फट्टक लगा सुति रहैछ। भाइ सभ लग सुतल गोपीक निन्ने दुनू आँखि मुना जाइ छइ। थाकल-ठेहिआएल कुबेर हफिआइए। बाहर होइत रहै छइ अविराम बरसा। कनेकाल बरसा हेबाक पश्चात घरक झड़ल कोनटा सँ पानि भीतर आएब आरम्भ होइछ। होसेन ताकि कऽ देखलक आ मने-मन कालि कुबेर के घर छारै लेल खढ़ देबाक बात बाजल। कुबेर एक बेर उठि मालाक अवस्था देखि आएल। बेस यत्न सँ कुबेर ओकर सोइरिक चारुकात टाटक समस्त भुर बन्न केने छल, ओसाराक एक दिस भासियो गेने जाइ सँ सोइरि मे पानिक झट्टक नञि पड़ै। ओछैनक नीचाक माटि केवल सिमसिमाह, जकर कोनो प्रतिकार केनाइ कुबेरक साध्य सँ बाहर छलै। आर किछु दिनक बादे माला एइठाम सँ मुक्ति पाओत। ओकर छाती-पीठ मे जे थोड़-बहुत दर्द छइ से एइठाम रहैक कारणे बढ़ि नञि गेने रच्छा।

माला डेराइते बजैए — हमरा दू मुठ्ठी मुरही-चूड़ा देतै ?

किए, भात नञि खेलकैए?

खेलिअइए, भात घटि गेलै, पेट नञि भरलै। एखन भुखे पेट मे ताप दैए।

इहो फिरीसान फिरीसान कऽ देलकै। बाजि कुबेर कलसी ताकि पीसीक अपना लेल नुकाओल चूड़ा मे सँ थोड़े आनि माला के देलकै। उठि कऽ बैसि अन्हारे मे मुँह मे चूड़ा दऽ माला पुछलकै – होसेन मियाँ के खाइ लेल नञि देतै ?

की देबै ?

मेला सँ आम अनने छलै ने ? सैह दौक, की करतै! भूख सँ तऽ लोक खून भऽ जाइ छइ।

कुबेर के हठात् मन पड़ि जाइ छइ। सोचलक सिघूक आङन सँ जे माउस भेटलैए ताही सँ अतिथिक सत्कार केने बेजाय की। मुसलमान लोक, माउस बेसी पसिन्न करत। किन्तु तुरत्ते कुबेरक ई उत्साह जेना सेरा जाइ। एहनो एक दिन छलै

जहिया खीराक तीमन पेने होसेन मियाँ धन्न भऽ जाइत, आइ जकर तकर रान्हल ओ खेबो करत की नञि, संदेह! खाली खेनाइए किए, खाइ लेल कहनहु भऽ सकैछ ओ अपमान बोध करए। ताइ सँ आम जखन घर मे छइ तऽ सैह देब नीक।

घर जा कुबेर जेना अवाक भऽ गेल। चटाइ पर चित भेल पड़ल होसेन मियाँ फोंफ कटैत छल। ओ आस्ते सँ बाजल मियाँ भाइ! जवाब नञि पाबि गोपी के ठेलि कऽ उठौलक।

सिघूक आङन सँ तीमन अनने छलही गोपी ?

निन्ने मे अधमरु सन गोपी कहलकै, उँ हूँ।

उँ हूँ माने ? आनै लेल कहि गेल रहियौ ने हरामजादी ?

कुबेर तैना ने ओकर पाँखुर धऽ झिकझोरलकै से ओ चौंकि कऽ उठि बैसल। कहलकै - आनै लेल तऽ गेल रहलिऐ बाउ, नञि देलकै। कहलकै जे बिलाड़ि ने कि सभटा खा गेलै।

बिलाड़ि खा गेलै कहलकौ ?

गोपी सहमति जनौलकै। कुबेर ता!मसे लाल होइत बाजल–– साला जोच्चोर सभ, बिहने बिलाड़ि के खुअबै छिऔ, साला बज्जित।

हाथ छुटबाक संगहि गोपी ओंघरा गेल। निन्न ओकरा नोतले रहै छइ। घरक जाइ कोन मे पानि पड़ैत छलै, कुबेर ओकरा ठेकना कऽ देखलक। पानि बहबै लेल ओ एगो पातर सन पनिबट बना देने छलै। माटि गलि कऽ ओकरा प्रायः भरि देने छलै। पानि जमा भऽ घरक भीतर दिस बहुत दूरधरि अगुआ आएल छलै। ओ हाथे सँ पनिबट साफ कऽ पानि बाहर दिस बहओलक। तकर बाद एक गम्भीर समस्याक मादे सोचै लागल। ढिबरी मे तेल बेसी नञि छलै। कनिञे काल मे मिझा जेतै। होसेन मियाँ के जगा कऽ आम खेबाक अनुरोध करत की ? बरसाक कारणे ठण्ढा लगै छलै। ओ आराम सँ सुतल छल। उठओने कहीं तमसा ने जाइ।

निन्ने मे होसेन मियाँ करोट फेरलक। देखु, हठात् कुबेर की आविष्कार केलकए। होसेन मियाँक नम्मा पंजाबीक जेबी सँ बहरैल अबैछ टाका पैसा रखबाक एगो नबे सन बैग। बैग ओ आइए मेला मे किनलकए ताइ मे संदेह नञि। सखे नबका बैग मे कते टाका पैसा रखने अइ होसेन मियाँ के जनैछ। बैग फुलि कऽ बेस मोट भेल छइ।

कुबेरक देह मे थरथरी पैसि गेलै। एक मुट्ठी टाका ओ रेजकी मे सँ एगो अठन्नी छोड़ि आर किछु लेबाक साहस नञि भेलै ओकरा। फेर ओ सोचैए जे एतेरास रेजकी की होसेन मियाँ गनि-गुथि कऽ रखने हैत ? ओ आर एगो चौअन्नी आ एगो एकन्नी बहार कऽ लैए।

बैग के होसेन मियाँक नम्मा पंजाबीक जेबी मे राखि फू दऽ ओ ढेबरी मिझा देलक। तखने एगो भयाओन घटना घटलै।

गोपी रुद्ध निश्वासे बजैए — बाउ!

कुबेरक देह सिहरि जाइ छइ।

— चुप रहै गोपी। सुति रहै।

— हमरा बिहान पाइ देबहक ?

देबौ, एखन चुपचाप सुति रह।

गोपी आर किछु ने बजैए। अन्हारे मे दू हाथक एगो छोटकी चटाइ बेस सावधानी सँ ओछा कऽ कुबेर सुति रहैए।

•



तीन

भोर सँ पहिने होसेनक निन्न टुटि गेलै। उएह आवाज दऽ कऽ कुबेर के जगओलक। आँखि खोलिते कुबेरक मन मे अकारणे एगो डर सन्हिया गेलै। की भेलै! ई कौन आफद ? हँ राति मे ओ होसेन मियाँक पाइ चोरओने छल। एकबेर आँखि मिलमिला कुबेर आश्वस्त भेल। होसेन मियाँ के आदर करैत पुछलकै — चलली ने की मियाँ भाइ ? भूख तऽ खुबे लागल हैत - राति मे किछु खेबो ने केली। एगो काम करु ने, बरु दू गो आम खेने जाउ।

भोरे भोर निन्न सँ जगनहु होसेन मियाँ बेस नीक जकाँ हँसि सकैए।

खाना के बात छोड़ऽ कुबेर भाइ, घर जा कऽ खाना पीना हेतै ने।

एगो प्रकाण्ड हाफी करैत बीड़ी धरा होसेन मियाँ उठि कऽ ठाढ़ भेल। सुतल गोपी दिस एक नजरि देखि पुछलकै — लड़की के की उमेर भेलै कुबेर भाइ ?

नओ साल हेतै भरिसक।

सादी नञि देबहक ?

देबै ने। आस्ते-आस्ते ने हेतै।

होसेन जेबी सँ बैग बहार कऽ कऽ खोललक। देखिते तऽ कुबेरक मुह सुखा गेलै। किन्तु नञि, टाका-पैसा गनि कऽ देखै लेल बैग नञि बहार केने छल होसेन। एगो चौअन्नी बाछि ओ कुबेरक हाथ मे दैत कहलकै — बच्चा सभके कुच्छो खरीद

दियहक। कहि कऽ बैग ओ फेर अपन जेबी मे राखि लेलक। कुबेर निसास छोड़लक। जे आफद एबे ने केलै ताइ लेल किए ओकर छाती धड़कतै, मुह सुखेतै ? खुसी सँ बेसम्हार भऽ ओ पुछिए बैसल — बैग नवे लगैहै, मेला मे किनली ने की कालि ?

होसेन कहलकै — हँ।

बा-चीत करैत दुनू बाहर आबि ठाढ़ भेल। एखन बरसा नञि होइ छलै; किन्तु मेघौन रहबाक कारणे भोरक चेहरा अस्वाभाविक ठमकल सन लगै छलै। होसेन एकबेर माथ उठा आकाश दिस तकलक। बाजल इया अल्ला, नमरल असमान के नीचा पिरथी केतना असहाय लागैए। भीजल तितल कातर सन रूप। होसेनक मनक कोन मे एक स्वाभाविक कवि छलै, जीवनक भिन्न अवस्था मे रहने भऽ सकैए ओ किछु गीतक रचना करैत। ताइ मे सँ दू एकटा मुहे-मुह प्रचारित भऽ स्थान पबितै शताब्दीक संचित ग्राम्यगीतक अमर अलिखित काव्य मे। बाट-घाट, मसालक आलोक मे आलोकित आङन घरक गीत, भनिता मे होसेनक नाम – दूर दूरान्तर धरि पसरि जाइत, लोक कहितै होसेन फकीर, चल केतुपुर, देवान फकीर होसेन साहेबक दरगा पर दीप लेसि आबी। होसेन जेना कुबेर के निठाहे बिसरि जाइए। बहुत दिन पहिने कुबेर जकाँ फाटल चिटल कपड़ा पहिरि अधपेटा खा, पानि-कादो मे जखन ओ दिन कटैत छल, साँझ सकाल तखन ओकरा मन मे गीतक पाँति सभ जेना हुलकी दैत रहै छलै। चुआठ चारक नीचा मैल चटाइ पर भूखल पेट तहिना राति काटि आइ फेर होसेनक मन मे गीत हुलकी दै छइ।

कुबेर भाइ, तोरा गीत बनबऽ अबै छऽ ?

नञि मियाँ भाइ। अपन जुगला के अबै छइ। मुहे मुह फटाफट बना लैए।

हमरो अबैए।

साँचे मियाँ भाइ!

होसेन एखन लाजुक। ओ एमहर-ओमहर तकैए। दाढ़ी सहलबैत कुबेर लग अपराधी जकाँ बिहुँसैए। सत्ते, लोकक आदि अन्त पाएब कठिन।

तकर बाद होसेन बजैए — सुनबऽ ?

कुबेर बाजल -- तऽ, कहियौ ने मियाँ भाइ। एक घड़ी चुप रहि होसेन सुर बान्हि आरम्भ केलक।

अमा निशा अकास जमीन अलग केने राख बन्धु कते सुतै छे

बामा बीबी दहिना बेटा अकाल फसिल बाऽग मियाँ कते सुतै छे

मानक पाते रातुक पानी भेलै रुपा हाँड़ी कने उठियो देखबे ने

छप्पर पर इजोत करै के जे चोरी-चोरी कोनो खबर रखबे ने

तोरे लागी अगम बाटे खेबैत चिराग नाओ एलै जे मन जगाबै मियाँ

पाल झुला कऽ नित्य - मेघक बन्धु कहाँ जाओ पुछै खाँचाक चिड़ैया

निन ने टुटए मन ने जागए विधिक सीना-सिर

समय बितल विदा हेबाक माझी तैयो थिर माझी कते सुतै छे

कुबेर अभिभूत होइत बाजल — मुहे-मुहे बनेलिए मियाँ भाइ।

खुसी नञि भेने उपाय की ? होसेन मियाँ आर नञि बिलमल। दुपहर छान घरक चार लेल खढ़ आनै गेने कुबेर सुनलक, ओ विदेश गेलए। कतए गेल, से ककरो पता नञि। किन्तु होसेन मियाँक बात कखनो अनट नञि होइ छइ। कुबेर तेल खढ़ ओ राखि गेल छल।

गोपीक बएस छइ एगारह। कुबेर ओइ मे एक वर्ष कमा कऽ आ एक वर्ष हाथ मे राखि लोक के कहै छइ नओ। नओ वर्षक छौड़ीक जे एगारह वर्षक बाढ़ि, बियाहक बजार मे तकर दाम छइ। गणेशक सार जुगल एखन पड़ोसक गाम सँ बहिनिक खोज-खबरि लेबाक लाथे आएब जाएब शुरू केलकए। सोझा-सोझी ओ किछु नञि बजैए। गप-शपक बीच उनटा -पुनटा प्रश्न कऽ कऽ जानए चाहैए से कुबेर की दर बजैछ। गप उठने बड़ीकाल धरि बेटीक प्रशंसा कीर्तन करैत कुबेर सार कतौ आभासटा देलकैए दू कूड़ी तीन कूड़ी टाकाक। बुद्धि रहने जुगल अंदाज लगा लिअओ। गणेशक कुटुम्ब बुझि पाइ कौड़ीक मामिला मे ओकर खातिर नञि करै कुबेर। जुगल के सेहो भरिसक तकर आभास भेटि गेल छइ, तें हिलसा माछक समय शेष होएबाक प्रतीक्षा मे अइ। हाथ मे कते पाइ जमै छइ से देखि बात जनैत। कुबेर की से बात नञि बुझै छइ ? सभक मनक बात ओ ओकर मुह देखि पते मे अंदाज कऽ लैछ।

लोक बेजाए नञि अइ जुगल। एतेदिन अवस्था खराप छलै, तें बत्तिस सालक बएस धरि बियाह नञि कऽ पओलक। एमहर अपने चेष्टा सँ ओ अवस्था सुधारलकए। उन्नतिक लेल ओकर प्रशंसनीय प्रयासक बात ककरो सँ नुकाएल नञि छइ। दूटा-एकटा कऽ कते दिन सँ कते कष्ट कऽ कऽ ओ किछु टाका जमओने छल, तकर बाद गणेशक संग बहिनिक बियाह दऽ तैस टाका पओने छल। सभ

केओ सोचै छल जे एइबेर जुगल बियाह करत, बियाह लेल छोड़ि एते कष्ट सँ के टाका जमबैए ? किन्तु जुगल से नञि केलक। समस्त जमा कएल टाका सँ एगो पैघ नाओ कीनि ओ सभ के अवाक कऽ देने छलै। दू सए टाकाक नाओ। तें टाका ओ कम नञि जमओने छल। चाहने ओ एइ टाका सँ तीन-तीनटा बियाह कऽ सकै छल। अन्ततः एकटा बियाह कऽ बाँकी टाका सँ एगो छोट-छीन नाओ कीनै मे कोनो बाधा नञि छलै। तकर बदला कमेबाक एइ स्थायी साधन लेल समस्त पूँजी लगा ओ जे सुबुद्धि ओ दूरदर्शिताक परिचय देने छल तकर तारिफ तऽ करहि पड़त। देखु, एके साल मे जुगलक लटकल घर नव भऽ गेलै, दुबरैल देह भरि गेलै, बियाहक लेल सेहो ओ टाका पैसा जमओने अइ वा नञि से के कहत! जहाज घाटपर एते पैघ नाओक भाड़ा सहजे भऽ जाइ छइ। रेलगाड़ी सँ आ पैरे जहाज घाट आबि कते लोक ओ माल कते गाम जाइछ। एक-एकटा बनीज वस्तुक समय मे कते महाजन गामे-गाम बेना देल माल संग्रह करै लेल चढ़ल दरे कतेको नाओ भाड़ा करैछ। आर खाली भाड़ाए तऽ नञि। उपरी आमदनिओ की कम ? धानक बोझाइ लऽ कऽ भरिदिनक बाट जाइत काल दस-बीस सेर धान नाओक चोरा खोधरि मे नुका रखबाक ढेर सुयोग रहै छइ। केवल धाने नञि, केराओ, मटर, हरदि, मिरचाइ आदि कते कि जिनिस भरिसाल जुगल एहिना कते अनैए। उन्नति आरो करत ओ। कारण अवस्था मे परिवर्त्तन भेनहु कोनो विषय मे लेसमात्रो शिथिलता ओकरा मे नञि एलैए। आइयो ओ पहिने सन कंजूस। डेली-खोङीक माझी समाज मे ओ एकटा मातबर लोक। एक दिन उएह जे गामक मोड़ल बनत ताइ मे ककरो संदेह नञि छइ।

माला चाहैए जे गोपीक बियाह जलदीए भऽ जाइ। एते बएस भेलै, आर कते दिन बएस चोरा कऽ बेटी के कुबेर घर मे बैसओने रहत ? लोक जे एही बीच कनफुसकी आरम्भ कऽ देने छइ। घरबला के माला तगादा दैत कहै छइ – सुनै छइ, जुगला कुच्छो बाजै नञि छइ ? कुबेर इशारा करैत कहै छइ – बाजै नञि छइ!

की बाजै हइ ?

से सभ सुनि ई की करतै। मौगी मेहर चुपचाप रहौ। बच्चा जनमाबै खातिर पिरथी पर एलैए, जते पार लगै जनमाबौ- चिन्ता किए करै छइ ?

माला के तामस होइ छइ।

मुह मे जेना लाबा फुटैत होइ –– खाली देह मे आगि लेसैबला बात, सोइरि मे मतारी ने बलू मधु चटओने रहै ?

पित्त नञि चढ़ाबौ गोपीक मतारी से कहि दै छिऐ। मारि खेतै।

मारतै ने की ? अबौ मारौ, मारौ एकरा लखाक किरिया छइ जे नञि मारै।

कुबेर औंघाइत निद्रातुर नजरिए स्त्री दिस देखैछ। सत्ते, टेल्ह कोरा मे रखने दुब्बर पातर ओकर बहु जेना राजरानी सन लगैत होइ। बच्चो तऽ गोरे भेलैए – बुझि पड़ैछ। एइ बएस मे लखा आर चण्डीक जेहन ताम सन रंग छलै तेहन नञि। सोइरि मे जते दिन छलै, कुबेर विश्वास नञि केने छल, एखन ओकर मन मे संदेह जगलैए जे छओड़ा तऽ ठीके गोर हेतै। मालाक रंग कारी नञि छइ, लाली गोराइ, कखनो काल ओकरा बाबू लोकनिक घरक स्त्रीगण सन गोरे देखाइ छइ। मलहटोलीक कोनो मौगीक देहक रंग एहन नञि छइ। ओकर एकटा पैर ठेहुन सँ नीचा टेढ़ बकुली नञि रहितै तऽ कुबेरक आङन ओ पैरक गरदो झाड़ै लेल नञि अबितै। किन्तु मालाओ सँ ढेर गोर छइ छओंड़ा। आर कने पैघ भेने विवर्ण भऽ अंत मे ओकरो रंग मालाएक रंग सन भऽ जेतै। सैह बरू होइ। कुबेर सैह चाहैए। ओ जते किए ने शान्त आ सुविवेचक हो, जखन-तखन लोकक अधलाह इंगित सँ देह तऽ जरिते छइ। माला दिस तकैत कखनो काल घिन तऽ होइते छइ, एगो वितृष्णा युक्त व्यथित क्रोध। कुबेरक नजरि जेना झलफला जाइ छइ। एखन साओनक एइ पहिल सप्ताह मे अकाशक मेघ के पलोभरिक विश्राम नञि। लगातार कएक राति अविरल पानि मे भीजि कुबेर के फेर बोखार लगै छइ।

कते काल चुप्पी मे बीति गेल छलै, तैयो बन्द भेल आलोचना पुनः आरम्भ करै लेल कोनो भूमिकाक प्रयोजन नञि भेलै। एखने झंझ-मंझ भऽ गेलैए ? के कहैत ? केहन शान्त ओ मोलाएम कुबेरक कण्ठ-स्वर।

साफ-साफ जुगल कुच्छो ने बोलै छइ गोपीक माय।

मालाक कण्ठ स्वर मे सेहो मिसियोभरि झाँस नञि।

नञि बोलै हइ ? किए ? गोपी पसिन्न नञि हइ।

गनेसिया बोलै छलै जे बलू पसिन छइ। जुगला अपने कुच्छो ने बोलै छइ। एक दिन हमरा पुछैत रहै – नाङड़क बेटी की नाङड़े होइ छइ ?

ई की कहलकै ?

हम कहलिऐ जे जुगला तों केहन बुद्धु छैं। नाङड़ कि कोनो रोग छइ जे मतारी के रहने बेटी के भऽ जेतै। हमर गोपीक चलनाइ तऽ इनरक परी सन छइ। बुझलकै गोपीक माय, गनेसिया हमरा एगो बात कहलकै। नकुलबा ने कि जुगला

के भाँड़े छइ। निमन-निमन लड़कीक खबरि दऽ अबै छइ। जुगला दू एक लड़की बिना देखने गोपी के बियाहतै ताइ मे संदेह बुझाइए।

एतबा बाजि कुबेर जेना सुति रहल हो। किन्तु माला ओकरा चिन्है छइ। ओ भरोसे रहैए।

सुनै छइ गोपी माए-- आर एगो विरतान्त। रासू ने कि बजैए जे ओ गोपी सँ बियाह करत।

माला चौंकल नञि। खाली बाजलि-- चार चूल्हिक उपाइए ने छइ।

बुझाइए कुबेर एइबेर सत्ते सुति रहल। कारण बड़ीकाल अपेक्षा केलाक बादो माला ओकर आर कोनो बात नञि सुनि पओलक। बैसल-बैसल ओ चिल्हका केदूध पिअबैत रहल। ओमहर भनसा दिस बैसि पीसी गोपीक माथक ढील तकैछ, भरि राति छौंड़ी माथ नोचैत रहै छइ। लखा ओ चण्डी भरिसक गुल्ली डण्टा खेलाए गेलैए, अथवा कतौ बनसी पथने पोठी माछ पकड़ैत हेतै। ओ सभ जतऽ कतौ किए ने जाओ, जे किछु करओ पानि मे भिजने जर बोखार नञि हेतै, डुबिओ कऽ नञि मरतै। माला के तकर डर नञि छइ। ओकरा खाली एही बातक चिन्ता रहै छइ जे दुनू भाइ कतौ मारि-पीट कऽ कऽ खून ने भऽ जाइ। पंगु हेबाक कारणे बाहरक जगत सँ ओकर परिचय नहिञे सन छइ। केतुपुर सँ दस मील उत्तर चरडाङा गामक एहने एक टुट्टल भाङल खोपड़ी मे ओकर माइक कोनो एक बाभन ठाकुरक संग सम्बन्धक जे कनफुसकी चलल छलै, कहाँदन ताही पापक प्रमाण स्वरूप ई टुट्टल टाङ लेने ओ जनमल छलि। पैघ भेल आङनेक भीतर। लाठी पर भर दऽ नङड़ाइत पड़ोसक राम गोआरक बड़दघराक लगहि कदमगाछ धरि छलै ओकर गतिविधिक सीमा। एही कदमगाछतर टोल पड़ोसक नेना भुटका खेलाइत आ मारि-पीट करैत। नमहर छओंड़ा सभ छोटका सभ के मारैत-मारैत ओदबाध कऽ दितै। कतेको खेप तऽ एइ मारि-पीटक चपेट मे वयस्को सभ आबि जाइत आ टोला मे एक भीषण काण्ड बझि जइतै। दूर मे ठाढ़ भेल माला सभ काण्ड देखैत रहैत। ओकरा बड़ डर होइतैक। आन धीया-पुता के मारि लगने तऽ ओ किछुओ ने बजैत, किन्तु जाइ दिन सभ मिलि ओकर छोट दुनू भाइ के मारनाइ शुरू करितै ताइ दिन ओ मुह खोलैत - ओकर मुरली सन मेही आवाज भरिटेल सुनाइ पड़ितै, सभ दौड़ल अबैत । ओना ताइ सँ पहिनहि माला के भ्रातृ प्रेमक मूल्य धरि चुकाबै पड़ितै। भाइक बदला बेस मारि पड़ितै। केओ कने धक्का देने ओ ओंघरा जाइत। तखन चारि पाँच गोटे मिलि ओकर हाथ पैर पकड़ि राम गोपालक बड़दघराक पछुआरक गोबर माटि मे फेंकि दितै।

तहिए सँ ओ छओंड़ा सभक मारि-पीट सँ डेराइए। ओ अपन दुनू बेटा के घर मे अँटकओने राखए चाहैए। किन्तु मोजर ओकर केओ करिते ने छइ। बैसल बैसल जकर दिन बितै छइ, के तकर मुह तकतै, बात सुनतै ? माला लाख मना करौ, लखा आ चण्डी पल खसिते उड़ि जाइ छइ। ठकि-फुसिया कऽ किंवा जोर जबरदस्ती राखए चाहने बकुटि कऽ आ हबकि कऽ सोनिते-सोनितान कऽ दै छइ। तैयो रोजे माला नाना तरहें ओकरा सभकें रोकबाक चेष्टा मे त्रुटि नहि करैछ। सन्तान स्नेहक हिसाबें मलहटोलीक जननी सभक बीच माला मे मौलिकता छइ। बेटाक उमेर आठदस पार कऽ गेने तकरा सभक लेल चिन्ता केनाइ मलहटोलीक महिला लोकनिक रीति नञि। चिन्ता करै लेल आन विषयक अभाव नञि छइ ओकरा सभ के। दुधमुहा धरि ठाढ़ माइक कोर मे नञि पाओल जाइछ। निष्ठुर नञि होइ, तेहन पतियो प्राय: नहिञे सन। दूटा खढ़-पातक लटकल खोपड़ीक संकीर्ण संसार, तकरो काज उदेम थोड़ नञि। पुरुष सभ माछ मारि अनैछ, थोक बेच बिकिन करैछ। धामा माथ पर लऽ अङने अङने माछ बेचनाइ ओकरा लोकनिक काज नञि। ई काज मलहटोलीक महिला सभ, सन्तान प्रसवक दू-एक मास आगाँ-पाछाँ छोड़ि, सालोभरि करैछ। कोरक बच्चा छोड़ि आर कोनो सन्तानक छोट-छीन विपद आपदक बात सोचैयोक पलखति जेना ओकरा लोकनि के नञि होइ। स्नेह करबाक मानसिकता-कोमलताओ नञि। नवजात शिशु के जेना ओ सभ पाशविक तीव्रताक संग ममता करैछ, वयस्क सन्तानक लेल ओकरा सभ मे तेहने असभ्य उदासीनता रहैछ। बेटा मुइनहु ओ सभ शोक नञि करैछ, खाली रेघा-रेघा कनैतटा अइ। माला पंगु, आलसी, घरक एक कोन मे पड़ल ओ स्वतंत्र जीवन यापन करैछ, तें मलहटोलीक रुढ़ वास्तविकता ओकरा किछुटा रेहाइ देने छइ। बेटा-बेटी के सिनेह करबाक मनो ओकरा छइ, पलखतियो भेटै छइ।

बेटा दुनू के ओ फिरि पबैए साँझक बाद। दिनभरिक बाद चिड़ैक बच्चा जकाँ थाकल ठेहिऐल छओंड़ा दुनू घुरि अबैछ आङन, नङड़ी माइक तखन ओकरा लोकनि के प्रयोजन होइ छइ। मलहटोलीक आन समस्त खोपड़ीक लेल जे अभिनय अज्ञात, प्रत्येक दिनान्त मे कुबेक खोपड़ी मे से अभिनय अभिनीत होइछ। बाहर सभ तरहक बदमासी शैतानी कऽ घर मे लखा आ चण्डी शान्त भेल रहैछ, सज्जन ओ आज्ञाकारी शिशु सन माए लग घुसिऐल रहैछ। दिन भरिक एकतरफा अवहेलित सिनेह जे माला के बेकार बुझाइ छलै, दोसर पक्षक ग्रहण केलाक संगहि जेना अपूर्व ओ मधुर लागए लगलै। माला लग बैसि ओ सभ भात खाइछ। एक बेटाक मुह मे स्तनदेने आर दूटा के भात सानि मुह कऽ खुएबाक सख मालाक असगरेक नञि,

एना नञि खुएने ओ सभ खाइओ ने चाहै छइ। आर हँ, माला खिस्सो कहै छइ। मालाक माथ भरती ढील, देह मे माटि, पहिरन फाटल चीटल गन्हाइत वस्त्र, तैयो एहना समय जे ओ केहन सभ्य सुसंस्कृत महिला, असमानता तकरा स्पष्ट कऽ दैछ। लखा आ चण्डीक उघार देहक भीजल चमड़ा चकचक करैछ। ढिबरी सँ उपर उठैत धुआँ, माथक उपर चारक सड़ल खढ़-पात, चारुकात सोङरक बलपर टिकल टाट आ नीच-ऊँच सिमसिमैल घरक माटि। आदिम सभ्यताक आवेष्टनी। अभिनय सुमार्जित सभ्यताक।

हिलसाक मौसम मे कुबेर कदाचिते एइ समय आङन घर मे रहैछ। जे दिन रहैए पैघ लोकक पोसुआ कुकूर सन उदास आँखिए देखैत रहैए सिनेह ममताक ई सभ विचित्र काण्ड कारखाना। देखैत-देखैत ओ हफिआइए, पैघ लोकक पोसुआ कुकूरे जकाँ चटाइ पर कर फेरैत उठि बैसैए। मुँह बओने रहैए गम्भीर सन भेल। लखा ओ चण्डीए जकाँ ओहो ध्यान सँ खिस्सा सुनैए। माला के से बुझै मे भाङठ नञि रहै छइ। तें छओंड़ा सभ के सुति रहनहु ओ थम्हैत नञि अइ, हाथ हिला-हिला, मुहक भाव-भंगिमा बनबैत, रसिया रसिया कऽ निन्नभेर नेना सभ कें खिस्सा कहै मे ओ ओस्ताद! एके खिस्सा बेर-बेर कहितो ओ अपन श्रोता सभ के समाने मुग्ध कऽ सकैछ। गोपी ओंघराइत पोंघराइत माइक देह मे सटि आएल। पीसी दुआरि मे ओंगठल बैसल रहैछ। मालाक खिस्सा सुनै लेल आर के सभ आएलए से देखू। गणेशक बहु उलुपी, बेटा मनाइ आ बेटी कुकी। आर आएलए सिधूक तोतराहि बकलेलही बेटी बगली। बीच मे बाजि केओ मालाक खिस्सा कहैकाल बाधा नञि दै छइ। सभ चुप-चाप सुनैत रहै छइ। खिस्साक बीच-बीच मे माला ओकरा लोकनिक संग दू-एकटा बात कऽ लैछ।

की गे उलुपी, भनसा भऽ गेलौ ?

चुलही मे दूगो भाँटा देने छलिऐ आ हिलसाक झोर।

कुकी, देह झाँपि कऽ बैस हरमजादी। छौंड़ी जेना नट्टिन।

कहि टेढ़े आँखिए कुबेर दिस ताकि माला फेर खिस्सा कहए लगैछ।

●



चारि

एइ बेरक बरसा मे आउँस धानक फसिल नष्ट भऽ गेल छलै।

धीमन माझीक घर पछुआरक तेतरि गाछक जड़ि पर्यन्त कोनो साल पानि नहि अबै छलै। एइबेर धान पाकैक समय हठात् पानि एते बढ़ि गेलै जे गाछक जड़ि सँ आध। तीन हाथ उपरधरि पानि मे डुबल रहलै सप्ताहभरि। इएह पानि पहिने बढ़ने क्षति नञि होइतै, पानिक संगहि धानक गाछो बढ़ल चल जइतै। किन्तु फसिल पकबाक समय पानिक संग प्रतिद्वन्द्विता करैत धान केना बढ़ि पाओत।

बहु बरसा भेल छलै एइबेर। केतुपुर सँ मील पाँचेक दूरक चन्नाक द्वीप गामक पद्माक एगो नीच द्वीप आधा-छिधा पानि मे डुबि गेल छलै। बहुतो लोक तँ द्वीप छोड़ि पड़ा गेल छल। बहुत दिन पहिने खेलाड़ि पद्मा जाइ भूमि-खण्डक भूमि काटने छल, के जनै छल जे ओ तकरा हठात् ग्रास कऽ लेत। उपरका गाम सभ मे बरसाक पानि घर मे ढुकनहु पूर्वबंगक लोक भय नञि पबैछ। ओइ पानि मे प्रवाह नञि रहै छइ। किन्तु पद्माक वक्षपरक छोट छीन द्वीप मे जे सभ गाम, पद्माक पानि अवसर पबिते ओइ सभ गामक आङन-घर, माल-जाल, मनुक्ख कें घास पात जकाँ भसा कऽ लऽ जाएत।

कते गाम जे एइबेर पाँच-सात दिन धरि पानिक नीचा डूबल रहल।

मालाक नैहर चरडाङा तऽ भरिडाँड़ पानिक नीचा छलै। सुनलाक बाद माला कनैत कनैत बताहि भेल छलि। जखन तखन कहितै - केहन पाथर हिरदे

छइ एकर। हमर बाप भाइ डुबल मरि रहलए आ एकरा बुते एक बेर खोजो-पुछारि कएल पार नञि लगै छइ।

गणेश के संग लऽ कुबेर एक दिन खोज खबरि लेबा लेल गेल।

डबरा-डबरी, पोखरि, खेत सभ एकाकार भेल। दू मास पहिने जाइ खेतक आरि धेने लोक जाइत अबैत छल, एखन ताइठाम लग्गाधरि थाह नञि पबैछ। कोनो-कोनो गाम द्वीप सन लगैछ, कोनो गाम मे लोकक आङन घर मे भरि ठेहुन पानि लागल। सभ मचान बान्हि ताइ पर दिन कटैत। जकरा पार लगलै, गाय-बड़द लेल सेहो मचान बना लेलक, जकरा तकर ओरियान नञि तकर निमूधन दिन-राति पानिए मे ठाढ़। गाछक डारिपर केवल चिड़ै-चुनमुनी सुख सँ अइ। भूचर मनुक्ख आ मालजालक दुख कष्ट अवर्णनीय। हठात् कोनो आङन सँ कानबक आवाज सुनि कुबेर नाओ लेने पहुँचल। ओसाराक खुट्टा पकड़ि घर मे हुलकी दऽ देखलक जे बाँसक खुट्टीपर दूटा तख्तपोस एकट्ठा केने ताइपर घरक वस्तुजातक संग सम्पूर्ण परिवार बास करैछ। प्राय: मास दिनक एक नेना के छाती मे सटने गृहस्थ घरनी बफारि कटैत। बच्चा के की भेलैए ? गत राति नीचा पानि मे खसि डुबि कऽ मरि गेलै। कते पानि छइ नीचा मे, हाथो भरि तऽ नञि हेतै। बच्चा के छाती लगा जननी सुतल छली, कखन केना जे खसि पड़लै के जनैछ ? मासदिनक शिशु , अपने सँ घुसुकि-फुसुकि नञि सकैछ। इएह सोचि तख्तपोसक चारुकात अड़कन नञि दऽ दुनूकात दुनू बेक्ती बीच मे शिशु के लऽ सुतल। भऽ सकैछ बच्चा के छाती सँ लगओने निन्नै मे जननी करोट फेरने होथि। निन्नभेर अवस्था मे कातदिस ससरि उएह ने तऽ विसर्जन देने छली सर्वनाशा बाढ़िक पानि मे अपन सन्तान के ?

चरडाङा पहुँचि सगर गाम जलमग्न देखल गेल। कतौ हाथोभरि जमीन अबंच नञि। घरे-घर स्रोतहीन कादोपानि थकमक करैत। कुबेरक ससुरक समस्त परिवार बड़का घर मे काठक एगो छोटसन स्थायी मचान पर आश्रय लेने।

दू गोट गाय आ बाछाक लेल तीनटा सुपारी गाछक बीच मोट बाँसक तिनकोनमा मचान बान्हल गेल छलै। पोसुआ कुकूर सेहो ओहीपर जगह पओने अइ। मालाक बूढ़ बाप बैकुण्ठ मचान पर बैसल डेराएल दुनू गाय के घास खुअबैत छल। घरक चार पर बैसि बंसी पथने माछ धरैत छल मालाक जेठ भाइ अधर आ घरक भितरका मचान पर चढ़बाक सीढ़ी सँ भनसा घरक चारधरि पासापासी दू गोट बाँस बान्हि ई सभ जे पुलिया बनओने छल, ताइ पर बैसल छल कएकटा नंग-धरंग नेना भुटका। कुबेर आएलए सुनि मालाक छोट बहिन कपिला सीढ़ी सँ

उतरि आएलि। कुबेरक सासु नञि उतरलै। घरक मचाने सँ बेटी ओ नाति नातिनक हाल-चाल पुछि बरसाक देवता के शापान्त करैत बाजए लागल जे एते बएस ओकर गेलै, एहन प्रलयंकर काण्ड तऽ ओ बापोक जन्म मे नञि देखलक। केहन सर्वनाश मे ओकरा लोकनिक भऽ गेलै से कुबेर की जानत। बान्हि छेकि सड़े लेल देने छली पाट, आधा पाट जे केना कतए भसि गेलै पता नञि। भासि की जेतै, केओ चोरा लेने हेतै निश्चय। गरीब अइ ओ सभ, कते आश लगा एइबेर धानक खेत पर्तीत मे पाटक चास केने छल, के जे ओकरा लोकनिक एहन सर्वनाश केलकै!

मचान सँ बैकुण्ठ, चार सँ अधर, सीढ़ी सँ कपिला आर पुलिया सँ नंग-धरंग नेना-भुटका सभ उतरि आबि नाओ पर आराम सँ बैसल। कुबेर चिलम साजि बैकुण्ठ के देलकै।

कपिला कहलकै — नाओ लऽ कऽ एला माझी, बहिन के किए ने लेने एलही ? कते दिन देखला भऽ गेल। धीया-पुता के तऽ आनिए सकै छला ?

कुबेर कहलकै — लेले एबै विचारले रही। मुदा तों सभ एइ जग कोन हाल मे हेबै सोचि डर भेल। गोपी तऽ आबै लेल कनैत-कनैत बताहि भेल छलै। तों कहिया एलें कपिला ?

कपिला मुह बिजकबैत कहलकै — हमर बात छोड़हो।

सहज स्वाभाविक प्रश्न पर कपिलाक विरक्ति देखि कुबेर अवाक् भऽ बैकुण्ठ दिस तकलक। भरिमुह धुआँ छोड़ैत बैकुण्ठ की जेना इशारा सँ कहलकै। कुबेर के किछुओ बुझी जोग नञि भेलै, तैयो ओ कने बिहुँसैत सन बाजल - ओ!

कपिला रुक्ष स्वर मे पुछलकै — हँसलहो जे माझी?

कुबेर बाजल हँसली नञि कपिला, हँसब किए ?

कुबेरक बियाहक समय बड़ चंचल छल कपिला। तखन पंगु माला के बियाहने छल तँ भरिसक कपिलाक चंचलता एते बेसी बुझि पड़ल होएतै कुबेर के। अन्हार मे बाट केनिहार के मद्धिम इजोतहु मे आँखि झलफला जाइ छइ, तेज इजोत मे तऽ आन्हर भऽ जाइछ। तकर बाद कपिलाक बियाह भेल रहै। एगो बेटी भऽ सौरिए मे गत भऽ गेलै बर्ख दुएक पहिने। के जानए कते शान्तशिष्ट भऽ गेलए कपिला आइ-कालि, केहन संसारी भऽ गेलैए ओकर मन ? आर की कोनो दिन गाछक डारि मे काँच बेंतक हिरला लगा ताइपर झुलत ओ ? किशोर बएसक अपूर्व सुन्दर देह के घाटक ऊपर सँ फेकि देत पोखरिक पानि मे ? डिङी लऽ असगरे पड़ा कऽ सभ के बजबाक दण्ड देत ? सम्भव छइ जे एइ जीवन मे फेर कहियो

तमसा कऽ चेरा फेकि ओ कुबेर के नञि मारतै। से नञि मारौक! ओ चेरा फेकि नञि मारतै ताइ मे अपसोच करबाक की छइ ? कनेकाल बाद पासापासी दुनू बाँसक पुलिया पर सँ कपिला के घर दिस जाइत देखि कुबेरक दुनू आँखि झलफला गेलै। हँ उएह बितल दिनक स्मृति गांथल छइ कुबेरक मन मे।

पानि घटबाधरि ओकरा ओइठाम केतुपुर जा कऽ रहबाक हकार सकल के देलकै कुबेर। ई हकार साधारण बात नञि, किन्तु सभ के चलि गेने चलतै केना? आङन घर, वस्तु जात सभ किछु सामयिकभावे उठा कऽ लऽ गेने होइतै, मुदा से तऽ सम्भव नञि। निमुह गाय बाछा सभक की हेतै ? जा सकैए छओंड़ा-छौंड़ी सभ - आर ओकरा सभ के देखै सुनै लै कपिला यदि जाए तऽ जाओ। माला बुते एते कच्चा-बच्चा के सम्हारल तऽ नञि ने पार लगतै।

कपिला जाएत ? बेस।

कुबेरक सासु बड़ बजै छइ। बजलै -तोरा कहियौ की कुबेर, छौंड़ी के लऽ कऽ जान अवग्रह मे पड़ल अइ। हँ रे बाप, कपिला दऽ कहै छिऔ। माला लेल किए चिन्ता हएत ? सोन सन जमाइ तों, हमर नाङड़ बेटी के माथ पर रखने छैं। एइ कपरजरौनीक बात कहै छिऔ - अपन कपिलाक। अलच्छीक मरनो नञि!

ओ बड़ कचोटक कथा। सुखे सँ घर गृहस्थी करै छल कपिला, की जे शनिक नजरि पड़लै। जड़कालाक आरम्भे मे घरबलाक संग कलह कऽ क बापक घर चलि आएल। तमसा कऽ ओकर घरबला श्यामादास दोसर बियाह कऽ लेलक, कपिला के छोड़ि देलकै।

ई बात कुबेर के नञि बुझल छलै। ओ आश्चर्य करैत बाजल — ओ!

तकर बादो कपिला के सासुर पठाओल गेल छलै - फागुन मास मे। श्यामादास ओकरा घर नञि ढुकए देलकै, भगा देलकै। मनुक्ख तऽ नञि, जानवर छी जानवर। तें ने कुबेरक संग तुलना करैत दिन राति कपिलाक माए ओकरा गारि-सराप दैत रहै छइ।

से धरि सत्ते, पंगु रहितो माला के कहियो ओ अनादर नञि केलकै। तें से एहन प्रशंसाक बात? मालाक लेल, अपन दीन-हीन परिवारक ओइ आलसी अकर्मण्य रमणीक लेल, हठात् कुबेर निविड़ स्नेह अनुभव कएलक। सत् गृहस्थ ओ, सत् स्वामीक रूप मे जे प्रशंसा ओकर जननी चिकरि-चिकरि कऽ दिगदिगन्त रटना करै छइ से जेना मालाएक कीर्ति।

खेनाइ पिनाइक पश्चात् कपिला ओ तकर भाइ बहिन कें संग लऽ कुबेर

केतुपुरक यात्रा केलक। कपिला खूब साज-गोज केने छलै। केश मे तेना कऽ नारिकेरक तेल लगओने छलै जे चपचप करैत रहै। देह मे हरदि लेपि नहेने छलै आ पहिरने छलै बैगनी रंगक साड़ी। सैं छोड़ि देलकै से बात ठीके, किन्तु बएस तऽ काँचे छलै। आह, कुटुम्बक ओइठाम जेबाक नामे आहलादे जेना अस्थिर भेल हो।

केतुपुर पहुँचैत दिन शेष भऽ आएल छलै। माला उताहुल भेल बाट तकैत छल। किछु पाटु चोरि जाएब छोड़ि ओकर बाप भाइक आर तेहन कोनो क्षति नञि भेलैए सुनि ओ आश्वस्त भेल। माला केवल नाङड़ नञि जनमल छल, आर एगो पंगुता ओकर छइ। ओ हँसए नञि जनैए। जीवन ओकरा आलसी ओ विषण्ण बना देने छइ। भाइ बहिन के लग पाबि कते दिनक बाद ओकरा मुह सँ विषादक छायाहीन हँसी फुटलै।

एमहर कुबेर के चैन नञि। ओकरा सन गरीब के अइ दुनियाँ मे ? इएह जे एते लोक एलैए तकरा ओ खुआओत की! आँसुक फसिल नष्ट भेने एइबेर जे देश मे अकाल पड़तै, एखने सँ तकर अन्दाज लगाओल जा सकैए। जलमग्न पिरथी पर आहारक दाम बढ़लैए। हिलसाक मौसम हेबाक कारणे एखन तऽ कोनहुना चलि जाइ छइ, एकर बाद ? दू चारि कैंचा जमेबाक आशा तऽ गेल। अतिथि आएलए, अतिथि चल जाएत। तकर बाद सपरिवार उपास। तखन मङनहु बैकुण्ठ एकोटा पाइ नञि देतै।

तखन हकारि कऽ ओकरा लोकनि के ओ किए अनलक ? ओकर दुखक दिन मे जे सभ घुरिओ कऽ ने तकै छइ, किए ओ तकरा सभ के एते खातिर करए गेल ? एना आदर सँ बजा नञि अननहु बाढ़िक किछु दिन ओ सभ मचान पर ठीके ठाक बिता लीत। मने मन कुबेर तमसा जाइए। माला खुसी भेलए। हँसी फुटलैए ओकरा मुह सँ ? घरबलाक दुख नञि बुझि ओ मौगी बाप-भाइ लेल कनैत रहैए। ओकर हँसैत मुह मे चूल्हिक छाउर ठूसि देबाक मन होइ छइ कुबेर के। माला एना उताहुल नञि भेने की ओ जाइत चरडाङा? के अनैत ओकर भाइ बहिन के हकारि कऽ ?

प्रत्येक दिन साँझक समय कुबेर के माछ मारै लेल जेबा सँ पहिने पीसी सभ के भात परसि दै छइ। कुबेर एखने खाऽ कऽ उठलए। तैयो ओकरा अपन धीया-पुताक संग आरो किछु लोक के पतियानी मे बैसल खाइत देखि भविष्यक अनिवार्य भूखे ओकर भरल पेटक अन्न जेना मुहुर्ते मे हजम भऽ गेल होइ। माला बैसल बैस तत्परताक संग सभ के खुअबैछ। गोपीक पातक सानल भात ओ आदरक संग अपन भाइक पात पर धऽ दैछ। ई दृश्य कुबेर के देखल नञि जाइ छइ। ओ

नाओ पर जा बैसि रहैछ। सम्भवत: तखन गणेश ओ धनंजय - केओ ने आएल रहै छइ। कुबेर असगरे चुपचाप बैसल रहैए। नदीक ढेउ मे नाओ हिलैत रहै छइ। सौं-सौं बसात बहैत रहै छइ। अन्हार तेहन गाढ़ — होइ छइ जे धुएँ जकाँ हवाक संग उड़िया जेतै।

कपिला जे पाछाँ-पाछाँ एलैए से की कुबेर जनैए ?

ओकर आकस्मिक हँसीक आवाज सुनि डरे कुबेर जेना अधमरु भऽ जाइछ। ओ थरथर कापए लगैछ। साँझ राति निर्जन नदी तीर पर एना के हँसत ? मनुक्ख तऽ नञि भऽ सकैए, निश्चय नञि।

कपिला बजैछ — पीनी छोड़ि एला माझी।

कुबेर नाओ सँ नीचा उतरि पीनीक ढेप लैए। बजैछ एना खटाँस जकाँ खिखिआइ छैं किए कपिला ? अँए ?

कपिला कहलकै — डेरा गेला ने, अँए ? बाहरे मरद! कहिते कहलकै — हमरा अपना लग रखबऽ माझी ?

कहैत आ अबदार करैत कपिला कुबेरक हाथ पकड़ि खिचैछ। चिरदिनक शान्त निरीह कुबेर के ओ जे कहाँ लऽ जेतै। मालाक बहिन छी ने कपिला ? हँ। कुबेर ओकर दुनू कान्ह सक्कत सँ धऽ अवाध्य बाँसक कमची जकाँ पाछाँ झुका दैछ। कहैछ - बदमासी जँ करबैं कपिला तऽ नदी मे डुबकुनिआ देबौ।

कपिला धपास दऽ ओतै कादोए पर बैसि रहैछ। हँसिते-हँसिते बजैछ - बाह-बाहरे मरद।

ओकर सहजहि कादोपर बैसि गेनाइ, दुष्ट हँसी आ खोंचारनाइ सन परिहास सभ बड़ रहस्यमय ओ दुर्बोध्य। हठात् कुबेर के जेना डर होइ छइ। ओ सस्नेह कहै छइ - पाँक मे किए मरै छैं कपिला ? लोक की कहतौ ? जो, आङन जो।

कपिलाक मन मे की छइ से के जानए ? ओकरा चलि गेलाक बाद कुबेरक आँखिक उत्सुकता अन्हार मे नुका जाइछ। कपिलाक आनल पीनी चिलम मे भरि ओ सोंटब आरम्भ करैछ। चिलमक भागीदार नञि रहबाक आनन्द की ओकर मानसिक चंचलता के आस्ते-आस्ते शान्त कऽ दै छइ, अथवा नदीक बसात - नाओक हिलबा डोलबा मे पद्माक प्रेम ? माला जे कोनो दिन उठि नञि सकल, धुरि-फिरि चारुकात जीवन कें छिड़िया कऽ समेटि कऽ नञि राखि सकल ताइ लेल कुबेर के कहियो अपसोच नञि भेलै। गतिहीन मालाक आबद्ध घनीभूत जीवन ओकरे हृदय मे उथल-पुथल करैछ - लटकल चारक नीचा छोटसन ओछैन परक

पंगु मालाक तुलना दुनियाँ मे नञि। किन्तु अन्हरिया राति मे पीनी पहुँचाबै लेल ओ तऽ कोनो दिन नदी तीर-धरि दौड़ल नञि आबि सकैछ - बाँसक कमची जकाँ अवाध्य भंगिमा मे सोझ भऽ ठाढ़ नञि भऽ सकैछ।

बैगनी रंगक साड़ी पहिरि, केश मे चपचप तेल देने कपिला खाली लीला खेलाए मे पटु नञि, कुबेरक सेवा-यत्नो ओ करैछ, जाइ सेवा यत्न सँ जीवन मे कुबेरक कहियो परिचय नञि छलै। राति-भरि पद्मा धार मे काटि भोरे आङन गेने एखन ओ बिनु मङनहि पैर धोइ लेल पानि पबैछ। पनिभत्ता लेल हल्ला नञि करए पड़ै छइ। खाकऽ उठैत देरी चिलम भेटि जाइ छइ। प्रस्तुत रहै छइ ओकर दीन-मलिन ओछैन एवम् गर पबिते कोनो दिन मोछ धऽ खीचि, कोनो दिन बिठुआ काटि, हँसी दाबि पल खसिते निपत्ता भऽ - नित्र एबाक पहिने कपिला ओकरा सपना देखा दै छइ।

आनक पेट भरै मे अपने अकिंचन भेल जाइतो तें कुबेर के घरक प्रति आकर्षण बढ़ैत छइ। घटैत छइ बाट-घाटक पानि।

ओ तऽ मनुक्खक आँखिक पानि नञि, घटबे करतै। एक दिन मालाक जेठ-भाइ अधर खोज-पुछारि करए अबैछ। कुबेर के ओ सरिपहुँ कुबेरे बुझि लेने छइ वा नञि, उएह जनैए, कर्ज चाहिऐ दूगो टाका। टाका नञि भेटने ओकरा तामस होइ छइ। सभ के ओ घुरा कऽ चरडाङा लऽ जाए चाहैए। कुबेर मना नञि करै छइ। मालाओ नञि। भाइ बहिन के लग पेबाक आनन्द पुरनाए मे लगिते छइ कते दिन ? ताइ पर कपिलाक चपलता ओ हँसीठठ्ठाक लेल भऽ सकैए माला के ईर्षाओ होइत होइ। भऽ सकैए कोनो दिन कुबेरक संग कपिलाक लट्टापट्टी पर ओकर नजरि पड़ल होइ। एकठाम थिर भेल बैसल रहनहु नजरि तऽ ओ सभ ठाम खिरबिते रहैछ।

किन्तु कपिला नञि जाइए। झगड़ा कऽ कऽ, गारि गंजन कऽ कऽ ओ अधर के भगा दैछ। के जानए की छइ कपिलाक मन मे।

मयनाद्वीप सँ रासूक आकस्मिक आविर्भावक विस्मय गामक लोक लग पुरान भऽ गेल छलै। आब ओकर अनुभवक गप सुनबाक कौतुहल ककरो नञि। रासू कहए चाहैए, बेर-बेर शुरू सँ शेष धरिक खिस्सा विस्तारपूर्वक कहए लेल ओ छटपट करैए, किन्तु श्रोता भेटिते ने छइ। कते सुनत लोक। सुनैत-सुनैत तऽ सभक कान जेना बहीर भऽ गेल होइ।

होसेन मियाँ किछु टाका देलकैए रासू के। रासूक इच्छा छइ जे ओइ टाका सँ ओ एगो कनियाँ कीनए। गोपी भेने नीक। किन्तु कुबेर एइ प्रस्ताव पर कान

पात नञि दैछ। कते टाका होसेन मियाँ ओकरा देने हेतै ? हजार ने लाख ? आर छैहे की रासू के ? घर दुआरि ? जीवन जीविकाक साधन ? आ से बात जँ छोड़ियो दी तऽ गोपीक लेल तऽ पात्र ठीके भेल छइ – गणेशक सार जुगल। जुगल सन पात्रक अछैत कुबेर जकरा तकरा हाथ मे अपन बेटी देबे किए करत ?

रासू के किन्तु बड़ पसिन छइ गोपी। मयनाद्वीपक गप करैक बहन्ने ओ कुबेरक आङन अबैछ आ कनडेरिए आँखिए गोपी दिस तकैत रहैछ। इनरक परी सन सुन्नर बुझाइ छइ ओकरा गोपी। भाइ के कोरा मे लेने झुकि कऽ ठाढ़ हेबाक की सुन्नर ओकर ढ़ंग! हँ, ओकर केश अबस्से रुक्ख छइ, आ कने ललौन सेहो। कपार कने उँच। ठोर मोट हेबाक कारणे पिचलाहा नाकक बुलकी ओइ मे ठेकि जाइ छइ, नीक जकाँ हिलि-डोलि नञि पबै छइ। आर हँ, बड़ गन्दा रहैछ गोपी। मुदा तैयो तऽ रासू नजरि हटा नहिञे पबैछ। तैयो ओकरा कहाँ मन पड़ै छइ जे एहन अतुलनीय रूप ओ कतौ देखने अइ! तेहन ने रंग छइ गोपीक, केहन मोहक ओकर चलनाइ-फिरनाइ, तकनाइ ?

बएस रासूक बेसी नञि भेलैए, जुगलो सँ कमे छइ। नव सँ घर-संसार बसेबाक ओकर समय नञि बितलैए। गोपी के पओने ओ फेर सँ आरम्भ कऽ सकैए। गोपीक जे बाढ़ि छइ, बियाहक बर्ख दिनक भीतरे स्वामीक घर करए आबि जेतै। पाँच-छओ वर्षक कोनो छौंड़ी के बियाहि ओकर समर्थ हेबाक आशा मे मुह बओने बैसल रहबाक धैर्य आब रासू के नञि छइ। जकरा सभ के ओ मयनाद्वीप मे विसर्जन दऽ आएलए, तकरा सभ के जल्दीए आपस चाही। असगर-असगर रहै मे बड़ तकलीफ होइ छइ रासू के। एम्हर पीतम माझीक संग झगड़ा भऽ गेलैए। होसेन मियाँक देल टाका उचङि लेबै लेल पीतम बेस उताहुल भेल छलै। तें रासू फराक भऽ गेल। के जनै छल जे गामे मे पीतमक बेटी जुगिए अपन असगरुआ असहाय पिसिऔत भाइ के एते खातिर करतै। शीतल के कहि बाबू सभ सँ अपन घरक काते मे थोड़े जमीनक जोगार उएह धरा देलकैए। रासू एगो घर ठाढ़ केलकए ओइठाम।

रासू असगरे रहैए ओइ घर मे – भऽ सकैए गोपीक ध्यान करैत रहैत हो! बेर मे केतुपुर गाम सँ सौदा आनै जाइतकाल कोनो-कोनोदिन बाटक निर्जन भाग दिस ओ गोपी के ठाढ़ भेल देखैए।

रासू पुछै छइ— कहाँ जाइ छैं गोपी ? ओ कने स्नेहिल हँसी हँसैए। ढट्ठा सँ बहार करैछ एगो काच बैसाओल पितरिया औंठी आ मुङाक माला। बजैछ – लेबैं?

गोपी आनन्दक संग उपहार ग्रहण करैछ। रासू ओकरा नीक लगै छइ। रासूक

गेल उएह कने दुख बोध करैए। के जानए कहाँ छइ से मयनाद्वीप, जहाँ सभ के हेरा आएलए रासू। जिनगी मे बड़ कष्ट पओने अइ ओ। ततबे नञि, रासूक बातो विचार बड़ मधुर, सुनै मे बड़ दीब लगै छइ गोपी के। आर ओकरो कते खातिर करै छइ रासू। ओ जेना कते पैघ भऽ गेल हो, एगारह बर्खक छौंड़ी नञि हो।

बीच-बीच मे रासू जुगी सँ सलाह लैछ। कोनो एहन उपाय की नञि कएल जा सकैछ जाइ सँ कुबेर के राजी कराओल जा सकए ? सलाह परामर्श खूब होइ छइ, उपाय नञि होइ छइ। शीतल के नञि रहने ओकर साफ-सुथरा औछैन पर आराम सँ बैसि, ओकर हुक्का गुड़गुड़बैत बतिएबाक लाभ होइ छइ रासू के। आर भेटै छइ जुगीक समवेदना। रासू के जुगी खूब खातिर यत्न करै छइ। मयनाद्वीपक खिस्सा बेर-बेर सुनितो ओ नञि अघाइए। मयनाद्वीप मे कते लोक छइ ? की-की फसिल होइ छइ ? द्वीपक चारुकात भरिसक समुद्र छइ ? आइ रासू सँ ई सभ प्रश्न करैत जुगी के नीक लगै छइ। जुगीक बएस बेसी नञि छइ, बाइस हेतै। बड़ शान्त ओकर स्वभाव, बड़ सरल ओकर मन। शीतल ओकरा सुखे सँ रखने छइ। मलहटोलीक दुख दैन्य सँ अढ़ केने। असीम संतोष छइ ओकरा मन मे। एते दयामाया, एहन कोमलता मलहटोलीक आर कोनो लड़की मे नञि छइ। मलहटोलीक ककरो घर मे जँ कोनो दिन भानसक उपाय नञि रहै, चोरा-नुका कऽ एकबेर जुगी धरि पहुँचि गेने ओकरा उपासक डर नञि रहै छइ। अपन कष्टक बात कानि-कानि जे जते नीक जकाँ बखान कऽ पबैए – जुगी तकरा तते बेसी चाउर दै छइ। अपन खर्चक पाइ दान कऽ कऽ शीतल सँ बात सुनैछ। शीतल लोक हिसाबे बड़ कंजूस। जुगीक दानी स्वभाव ओकरा पसिन नञि छइ। किन्तु एहन विचित्र मानुस मन जे जुगीक एही स्वभावक कारणे शीतल ओकरा सँ आर वेशी सिनेह करैछ। जुगी के ओ कंजूस हेबा लेल अबस्से कहै छइ किन्तु साँझखन घर घुरला पर जाइ दिन जुगी ओकरा डरे नञि कहै छइ जे आइ फल्ली आबिओकरा ठकि फुसिया जे पओलकै से लऽ गेलै, ताइ दिन शीतल के जेना उड़ी-बिड़ी लागि जाइ छइ।

माछक दाम बावद कुबेर किछु आना कैंचा पबैत। शीतल के ऋण सधेबाक आदति नञि छइ। तगादा दैत-दैत कुबेर फिरीसान भऽ गेल। तैयो एक दिन सकाल सकाल ओ आश लगओने पहुँचल।

जुगी भानस करै छल, शीतल आ रासू करै छल गप-शप। कुबेर के देखिते रासू अस्थिर भऽ उठल। बैसक दऽ बेस खातिर करैत हुक्का बढ़बैत कहलकै – लै, पीबऽ।

नञि। कुबेर के समय नञि छइ बैसबाक। हुक्का चिलम पीबाक समय नञि

छइ। शीतल झटपट ओकर पाइ दऽ दौक, ओ चल जाएत। ओ बैसि कऽ हुक्का पीबै लेल आएलए ने की ? हँ, कुबेर आइ पितैल अइ। आइ ओ अपन माछक दाम लैए कऽ रहत।

शीतल पहिने सरलताक संग बिहुँसैत बाजल — एते तामस किए कुबेर के, सेहो सबेर सकाल ? फेर ओहो तमसा जाइछ — जो-जो, नञि देबौ पाइ, नालिस करै गऽ।

रासू बुझाइए कुबेर के खुसी करए चाहैछ। ओ शीतल के कहै छइ — दऽ ने दिऔ शीतल बाबू, दऽ दिऔ ओकर पाइ।

पाइ दै छइ जुगी। झगड़ाक बीच दस आना पाइ आनि कुबेरक सामने राखि देलकै आ फेर शीतल के धमक दैत कहलैक - कने-मने पाइ लेल झंझट-झमेला नीक लगै छइ ? की जोर जुगीक! शीतल किछु ने बाजल, कुबेर दिस आँखि तराड़ि कऽ देखैत घरक भीतर चल गेल।

पाइ समेटि कुबेर उठल, संगहि उठल रासू। की विनय रासूक, केहन सभ खुसामदक बात! चलैत-चलैत रासू नाना तरहक बात करैछ। एइबेर ओ एगो बेबसै आरम्भ करत, बेबसै छोड़ि पाइ कहाँ छइ ? एगो दोकान लेत ओ देवीगंज मे। कथिक दोकान लेत तकर निस्तुकी एखन नञि केलकए। सोचि विचारि एकटा किछु ठीक करत। कुबेर की सलाह दै छइ ? जिनगी मे उन्नति करत रासू। जानक बाजी लगा ओने दुनियाँ मे की ने भऽ सकै छइ ? आइ भिखमंगा - कालि राजा! कुबेर गंभीर मुह बनओने जवाब देलकै - हुँ। सोचैए मयनाद्वीप जाऽ कऽ बड़-बड़ बात बजनाइ सिखि आएलए रासू। चालि चलनाइ सिखलकए।

खेत सभ दिस देखला सँ पता चलै छइ जे पानि कते घटलैए। धानक गाछ सभ झुकि गेल छइ। पद्मा सँ आइ जोरगर हवा चलै छलै। चारुकात असंख्य चिड़ै चुनमुनीक कलरव। कुहेस मे भीजल उँचका जमीन सभ पर पसरल छइ पिरौन रौद। शरत् कालक आगमन मे संदेह नञि। नदी तीरक काशबन आब उज्जर दपदप भऽ जाएत। कुबेरक संग रासू ओकरा घर तक अगुआ अबैछ। नू, गोपी एखन आङन मे नञि अइ। भऽ सकैछ कपिलाक संग नदी सँ पानि आनै लेल गेल हो। कुबेर रासू के बैस' लेल नञि कहै छइ। ओ पीसीक एकान्त घर मे सुतै लेल चल जाइछ। रासू आस्ते-आस्ते आपस भऽ जाइछ। जाइए नदी कात। गारि सुनैए कपिलाक। तकर बाद हन-हन करैत विदा होइए केतुपुर गाम दिस। नञि, नदी कात ओना ठाढ़ रहनाइ ओकर उचित नञि भेलै। कपिला जँ कुबेर के कहि दै ?

पाँच

भादवक बाद आसिन। आसिनक बिचबिचवा पूजा।

एक दिन प्रबल अन्हर बिहारि भऽ गेलै। कालवैशाखी एकर परतर की करत। दिन भरि टिपिर टिपिर पड़ैत रहलै, सांझ मे आकाश कारी सघन मेघ सँ भरि गेलै, माझ राति मे शुरू भेल अन्हर बिहारि। बसातक से की बेग आ की गर्जन! विशाल विशाल गाछ मड़मड़ा कऽ टूटि खसलै। मलहटोलीक आधा छिधा खोपड़ीक चार उड़िया गेलै। पद्मा समुद्रे जकाँ विपुल ढेउ बनबैत तीर पर पछाड़ खाइत रहल। भरि मलहटोली बुढ़-बुढ़ानुस आ स्त्रीगण सभ हाहाकार करैत राति खेपलक। नेना भुटका सभ मे किछु तऽ डरे सकदम भेल छल तऽ किछु हिचुकि-हिचुकि कनैत रहल। हिलसाक समय शेष भऽ गेने मोट कमाइक सुयोग दू दिन बादे शेष भऽ जेतै, तें महलटोलीक कोनो घर मे समर्थ-सकर्थ पुरुष पातक नामो निसान नञि। सभ अपन-अपन नाओ पद्मा मे भसा छिड़िया गेल अइ दूर दूरान्तर धरि। केओ घुरत भोर मे, केओ सम्भव छइ जे घुरबे नञि करत। अन्हर आरम्भ होइते स्त्रीगण सभ अङने -अङने पीढ़ी बैसा देने छइ - अन्हर बिहारिक देवता ओइपर बैसता, शान्त होएता। घरे-घर ओ सभ माथ-कपार पीटि मधुसूदन के सुमिरैछ। देवताक ई केहन रोष ? किए ई प्रलय काण्ड ?

परात भेने बिहारि कमलै अबस्से किन्तु एकदम सँ थम्हलै नञि। सों-सों करैत बसात बहैत रहलै आ मेघ बुनिऐ लगलै। मलहटोली दिस नजरि नञि देल जाइ। सघन विन्यस्त कुटीर सभ के केओ जेना कूड़ा कर्कट जकाँ हिला-डोला

छिड़िया देने होइ। कोनो घर झुकल तऽ कोनो घरक चार नञि, कोनो घरक चार तऽ छइ मुदा ताइपरक खढ़-पात निपत्ता, कोरो-बाती झकझक करैत। आङन सँ बाट-घाट धरि पसरल गाछक डारि पात। कुबेरक सुतबाक घर खसि पड़लै। गोपी के बड़ चोट लगलै, जानि ने ओकर दहिना टाङ टुटलै वा बांचल छइ। चार उड़ि कऽ दूर पीतमक बड़दघरा पर जा खसलै। हीरु आ सिधूक एकोटा घर साबुत नञि बँचलै। अनुकूलक तीनटा घर मे एगोक चार नञि आ बाँकी दूटाक चारक खढ़ निपत्ता। रासूक घर एकात मे छलै, भीत आ दू गो खुट्टा छोड़ि घरक चिन्हो नदारद। शीतलक घरक चारूकात बड़का-बड़का गाछ छइ। एकोगो गाछ खसने घर कुन्नी-कुन्नी भऽ जइतै, किन्तु गाछेक कारणे ओकर घर बांचि गेलै। मलहटेलीक आर बहुतोक क्षति भेलैए थोड़-बहुत। मुसलमान माझी सभ मे सभ सँ बेसी नोकसान भेलैए अमिनुद्दीक। विशाल एगो सिनुरिआ आमक गाछ जड़ि सँ उखड़ि, जाइघर मे ओकर बहु आ धीया-पुता छलै, ताही पर खसि ओकरा मटिया-मेट कऽ देलकै। अमिनुद्दीक बहु पिचरा-पिचरा भऽ तैखन मरि गेलै। भिनसर खीचि कऽ बाहर करैकाल धरि बेटा जीबै छलै, घण्टाभरि बाद ओहो शेष भऽ गेलै। केवल बेटीटा बाँचि गेल छइ। अमिनुद्दी अपने जे कहाँ अइ, के जानए! भऽ सकैए कोनो उँच जगह पर आश्रय लेने हो, वा पद्माक उत्ताल तरंग मे जलसमाधि लऽ लेने हो। ओतेटा बेटी ओकर ककरो बोल भरोस नञि मानैछ, बपहारि करैए आ ओंघराइए। जाइ बेटीक परदा लै गरीब अमिनुद्दी खोपड़ीक चारुकात उँच कऽ परदा टाट लगओने छल, आइ जकरा मन होइ देखि जाओ। काल्हि जे ओ अपन करिया आँखि मे काजर कएने छल, एखनो से धोखलैए नञि। टाटक फाँक दऽ ओकर कजरैल आँखिक सलज्ज ताकब देखि कालि बेर मे जहरक जुआन बेटा बेस खुसी भऽ पद्मा मे नाओ भसओने छल। पद्मा सम्भवतः ओकरो एतेखन पिरथी सँ धो-पोछि देने हेतै।

भीत आ उदास महलटेलीक नर-नारी कपैत कपैत पद्माक तीर पर जा ठाढ़ होइछ, आरक्त आँखिए तकैत रहैछ पद्माक उन्मुक्त जलराशि दिस। घाटपर तीनगो नाओ बान्हल छलै, एगो अदृश्य भऽ गेलै, दू गो उपर तीर पर उठि आएल छइ। कने हटि कऽ गाछ पात समेत तीर धसल छइ, आर थोड़ेक मे फाट धेने छइ - शीघ्रे धसना खसतै।

पद्माक तीर पर ठाढ़ भेने कोनो लाभ नञि। तकैत-तकैत आँखि पथरा गेनहुँ कालि जे सभ नदी मे नाओ लऽ गेल छल, तकरा सभ के देखि पाएब सम्भव नञि। जे सभ नदी मे डुबि गेल से सभ तऽ गेबे कएल, जे सभ कतौ उँचका

जमीन पर आश्रय लेने होएत, पद्माक शान्त नञि भेने तकरो सभ के फिरि एनाइ सम्भव नञि।

उँचका बाट धऽ आबि सकैए।

किन्तु एखनो बाट घाटक पानि एकदमे हटि नञि गेलैए। के कतए ऊँच जगहक आश्रय पओने अइ, के जानए। भऽ सकैछ ओइठाम सँ पैरे एबाक सुविधा नञि होइ। घर लेल सभके उचाट लागल हेतै, भऽ सकैछ भोरक इजोत होइते एइ उन्मादिनी नदीक तीर लागल नाओ खेबि ओ सभ घर घुरबाक चेष्टा करत।

दिन चढ़ला पर बसात आस्ते-आस्ते खसि पड़लै। शान्त भऽ आएल पद्मा। बैरिया मे एकटा दूटा कऽ मलहटेलीक नाओ सभ घुरए लगलै। पहिने जे सभ पहुँचल, लोक तकरा सभ के घेरि कलरव करए लागल - आर सभ ? बाँकी सभ कहाँ अइ ? केना अइ ?

सभक हालचाल ओ सभ नञि कहि सकल। के कोनठाम तीरपर अँटकल अइ के जनैछ, मात्र दू-चारि गोटाक खबरि ओ सभ दऽ सकल। जकरा सभक खबरि ओ सभ दऽ सकल तकरा लोकनिक उद्विग्न आत्मीय स्वजनक मुह पर सँ जेना एक करिया परदा हटि गेल होइ। जकरा सभक कोनो समाचार नञि भेटलै, तकरा सभक परिवार परिजन फेर निर्वाक पद्माक सीमाहीन वक्षपर आँखि पथने रहल। ओना प्रत्येक आबएवला नाओ एकटा आशाक वार्ता लबैत रहलै जे ककरो प्राणहानिक सूचना नञि छइ। धैर्यक संग सभ केओ प्रतीक्षा कऽ सकैए - सम्भव छइ जे बेकार नञि होएतै।

अमिनुद्दी ओ नसीर संगहि घुरल। अमिनुद्दी लेल केओ घाटपर नञि आएल छलै। जहर आएल छल। नसीर के देखि ओ मात्र एतबे बाजल — बापजान, घुरलऽ ? एतबा कहि अमिनुद्दी दिस तकैत ओकर जेना बकारे बन्न भऽ गेलै। ककरो मुँह मे बकार नञि। अमिनुद्दी के देखि सभ जेना बौक भऽ गेल।

अमिनुद्दी एमहर ओमहर तकलक तकर बाद भीत उत्सुक कण्ठे जहर के पुछलकै — खबर कह मियाँ भाइ - की बात, चुप्पी लाधि लेलैं जे ?

ककरो किछु कहबाक नञि छलै। ओकर हाथ धऽ जहर गाम दिस घिचने गेल।

तकर बाद आएल कुबेर ओ गणेश। ओ सभ अनुकूलक नाओ सँ आएल, धनंजयक नाओ डुबि गेलै। बोकबा गणेशक एक पैर मे मोच पड़ि गेल छलै।

अन्हर बिहारि मे नञि, पैर पिछरने ओ खसि पड़ल छल। उलुपी आइ सारा दिन पद्माक तीरे पर बितओलक। गणेश के पकड़ि ओ घर लऽ गेलै। कुबेर लेल केओ ने एलैए। ओ अपन घरक विरतान्त दोसरेक मुहें सुनलक। बड़का घर खसि पड़लै ? जे घर छारै लेल होसेन मियाँ खढ़ देने छलै ? गोपीक पैर मे चोट लगलैए ? विवर्ण मुह लेने कुबेर घरमुहा डेग उठओलक। घर दुआरि बहुतोक खसलैए। अमिनुद्दीक तऽ सर्वनाशे भऽ गेलै, किन्तु अपन घर खसब सँ पैघ दुःसंवाद कुबेर लेल दोसर नञि। के जानए फेर कहिया ओ घर ठाढ़ कऽ पाओत। कतऽ माथ नुकाओत ?

बाट मे भेटलै कपिला। कुबेर के देखिते ओ जोर-जोर सँ कानए लागलि- बड़ आबेसी अइ कपिला। बाजल - घुरि एलहो माझी? बात रखलनि, गोसैंया हमर बात रखलनि—हम जे पाँच पाइक बतासा (लड्डू) चढ़ेबाक कबुला केले छी।

कुबेर विरक्त होइत बाजल— कनै छैं किए ?

संग लागल चलैत कपिला अपना के सम्हारलक।

बड़ चोट लागल हइ छौंड़ीक पैर मे। सुनलहो नञि विरतान्त ?

कुबेर मूड़ी हिलबैत बाजल हँ। फुलि गेल छइ ने ?

बड्ड फुलल हइ। दिन-भरि छौंड़ी कनैत कनैत मरै पर कम्मर बन्हने हइ।

चारुकात खसल पड़ल गाछ, खसल पड़ल घर, पत्र-पल्लव आच्छादित बाट— कुबेरक आँखि नोरा जाइ छइ। घर लग जा कऽ ओ ठाढ़ होइए। घर कहाँ छइ कुबेरक ? मुहे भरे अङना मे खसल छइ। सभ केओ पीसीक घर मे आश्रय लेने छइ। ओही घर ढुकि कुबेर ढेकी पर जाऽ कऽ बैसल। गोपी सुतल-सुतल कुहरै छइ। ओकरा पैर मे हरदिचून लगाओल गेल छइ। ठेहुन लग बेस फुलल छइ। माला बड़ बेसी डेराएल अइ। गत रातिक प्रलयंकर काण्ड भीरु पंगु नारी के अधमरु बना राखि गेलै। ओ एखनो सम्हरि नञि सकलए। कुबेर के अएने ओ जेना स्वस्तिक निसास छोड़ि बाँचल।

पीसी भात रान्हि रखने छलै। बरखा बिहारि भूमिकम्प कोनो किछु पीसीक भात रन्हनाइ बन्न नञि कऽ सकैछ। कनेकालक बाद कुबेर भात खएलक। तकर बाद गोपी लग जा कऽ बैसल। दरदे छौंड़ीक मुह जेना सियाह भऽ गेल होइ। दरद कमेबाक मंतर तऽ ओकरा नञि अबै छइ जे गोपी के कने आराम दऽ पबैत! चुपचाप देखैत रहनाइ छोड़ि दोसर उपाये की ? माला आस्तेआस्ते बजैत रहैछ- मड़मड़ा कऽ घर खसबाक समय डरे घबड़ा कऽ बाहर पड़एबा काल केना गोपीक देहे पर आबि चार खसलै। घर मे रहने छौंडी के किछु ने होइतै। बिहारिक समय

ते बाहर नञि जेबाक चाही, घर मे रहनाइए सभ सँ निरापद से बुद्धि तऽ छौंड़ी के छइ नञि। सुनैत-सुनैत कुबेर झुकैत रहैए।

हँ, कुबेर के औंघी लागल छइ। उन्मुक्त नदी तीर पर बैसि ओ अन्हर बिहारिक राति खेपने अइ। भोरे पैरे आएल देवीगंज, दू फक्का मुरहीटा फँकने अइ। घर पहुँचबा धरि दुश्चिन्ता सँ छाती धड़कै छलै। एखन भरिपेट खएलाक बाद आर जागल रहबाक खेमाता नञि छइ ओकरा। मालाक सभ बात ओकरा कान मे नञि जाइ छइ। एक समय गोपीक माथलग कनेटा जगह मे कात भऽ ओ कोनो तरहें सुति रहैछ।

साँझ सँ पहिनहि मलहटोलीक सभ केओ घुरि आएल। पद्माक पेट मे नञिगेल केओ। पीतम माझीक नाओधरि माझ नदी मे अन्हरक सोझा पड़ि डूबि गेलै। नाओ पर छलै पीतमक बेटा माखन, कुबेरक पड़ोसी सिधू आ ओकर भाइ मुरारी- अधमरु अवस्था मे ओ सभ, एकटा द्वीपसन जगह मे राति खेपि घुरि आएलए आ एखन अपन बहादुरीक खिस्सा परसने फिरैए जे केना पहाड़ समान ऊँच ढेउक संग लड़ाइ कऽ कऽ ओ सभ अपना के बचाओलक।

किछु दिन एहिना लंङ-भंड अवस्था मे बितलै। फेर आस्ते-आस्ते ढहल ढनमनैल घरक मरम्मतिक चेष्टा चलए लगलै। केतुपुरक दू चारिटा घर खसल छलै। एक दिन माझिल बाबू अनन्त तालुकदारक सभापतित्व मे एक सभाओ भेल। क्षतिग्रस्त आर गरीब सभक लेल चन्दा करबाक व्यवस्था भेल। अनन्त बाबू स्वयं दस टाका दान देलनि। गाम सँ आर पन्द्रह टाका उठलै। ताइ मे सँ सात टाका देल गेलै केतुपुरक नन्द भट्टाचार्य के। आहा, ब्राह्मणक दूटा घर खसि पड़लै। महलटोली लेल देल गेलै दस टाका - दू टाका कऽ पाँच गोटे के। बाँकी टाका भरिसक फंड मे जमा रहलै।

खुसीक बात जे दीर्घ अनुपस्थितिक पश्चात् होसेन मियाँ गाम घुरि आएल। घुरि-फिरि ओ सभ दिसक अवस्था देखलक, तकर बाद दाढ़ी पर हाथ फेरैत बाजल— न, रुपैया कर्ज नञि देबौ। खढ़-खढ़ही देबौ, बाँस देबौ, अपने खड़ा रहि तोरा सभक घर बना देबौ - आखिर मे हिसाब कऽ कऽ चिट्ठा बनेबौ, एगो कऽ औंठा छाप लगा दिहे।

सएह ठीक।

पुरना टुटल भाङल घरक बदला जँ नव घर उठए तऽ चिट्ठा बनेबा मे कोन हरज ? जकरा सभक घर खसि पड़ल छलै, सभ खुसी भेल। जकरा सभक घर

नञि खसल छलै ओ सभ दुखी होइत सोचलक, ओकरो सभक घर खसि पड़ने बेजाए नञि होइतै।

सभ केओ खुसी-खुसी होसेन मियाँक सहायता स्वीकार कएलक, नञि कएलक तऽ केवल अमिनुद्दी! ओ मूड़ी हिलबैत बाजल — नञि मियाँ, घरक काम नञि।

आम गाछक तर ओकर घर जेना थुर्री थौआ भेल छलै तहिना पड़ल रहलै। सत्ते तऽ, घर लऽ कऽ की करत ओ ? के छइ ओकरा ? ककरा लेल दुख दैन्यक नीड़ बान्हत ? मलहटोलीक सभ फेर सँ पद्मा मे नाओ भसओलक, अमिनुद्दी मुदा कतौ नञि जाइछ। ककरा खातिर ओ पद्माक अतल जल मे जीविकाक संधान करत ? केवल बेटीटा छइ - ममिन। किए छइ की जानि! भरिदिन ममिन हुकरैत रहैछ, अमिनुद्दी चाहितो नञि देखैछ।

आस्ते-आस्ते सभक नव खुट्टा, नव टाट ओ नव चारक घर ठाढ़ भेलै। होसेन मियाँ मजदूर सभ के की कहने छलै से उएह जानए, कुबेरक घर सभ सँ पहिने उठलै। घर देखए आबि होसेन मियाँ गोपी लेल बड़ दरद देखओलक। बाजल — असपताल लऽ जाहक कुबेर भाइ, मालूम होइए जे चोट बेसी लागल छइ।

तकर बाद एगो चिट्ठा बहार कऽ बाजल - औंठा लगा दहक कुबेर भाइ, एकैस रुपैया दस आनाक चिट्ठा छऽ, दू रुपैया छौड़ि दै छिअ। औंठा लगा राखह जखन पार लागह, दऽ दिहऽ। नहिञो देने मामला नञि करबह। होसेन मियाँ बिहुँसैए- जान दऽ कऽ तोरा सभ के दरद करै छी, चिट्ठा किए ? लिखि रखलौं - हिसाब रहतै, ने तऽ एकर कोन काम ?

कुबेर कहलकै — पुरना बाँस, पुरना टाट देने खरचा कम लगितै ने मियाँ भाइ ?

किए ? पुरान किए ? खरचा लेल कोन चिन्ता, से तऽ हमही ने दै छिअ। दै छिअ की नञि ?

हँ मियाँ भाइ, से तऽ अहीं दै छी।

औंठा छाप दऽ कुबेर होसेनक मुह दिस तकलक। होसेन मियाँक बड़ डर होइ छइ कुबेर के, बड़ टान छइ ओकर होसेन मियाँ दिस। पता ने कोन जादू टोना सँ कुबेर के वश केने छइ ओ ?

गोपीक पैरक ने तऽ दरदे कमै छइ आ ने फुलनाइए। छौंड़ी के लऽ कऽ महामोसकिल मे पड़ल अइ कुबेर। आखिर मे माला जकाँ गोपीओ की नाङड़

भऽ जेतै ? कोन उपाय करत से किछु ने फुराइ छइ कुबेर के। होसेन मियाँ जेना कहै छलै, सदर असपताल लऽ जाएत ने की ? सेहो तऽ कम झंझट नञि! एते दूरक बाट केना लऽ जाएत ओकरा ? दरदे ओ बिछानो पर करोट नञि फेरि पबैए, एते उठा पटक ओकरा बरदास हेतै ? किन्तु पैरक जे हाल छइ, जल्दीए कोनो ने कोनो उपाय नञि केने नञि।

एही बीच पूजा सेहो आबि गेलै। चरडाङा सँ एकदिन फेर आविर्भाव भेल अधरक । फेर ओ झगड़ा दन कऽ सभ के लऽ जाए चाहलक। छओंड़ा-छौंड़ी सभ तऽ ओकरा संग चरडाङा घुरि गेलै, मुदा कपिला नञि गेल। कहलकै - किए, घर खसलाक बाद जखन ओ सभ एक संग ढेकी घर मे दिन कटै छल, दुख कष्टक ठेकान नञि छलै, तखन अधर किए ने आएल ? एखन नव घर उठलैए, रहबाक कोनो दिकदारी नञि, तखन एकरा लोकनि के एइ विपत्ति मे छोड़ि ओ केना जाएत? कुबेर सेहो समर्थन करैत बाजल — हँ, किए जाएत कपिला ओकरा लोकनि के छोड़ि एइ विपत्तिक समय मे ? सत्ते, जान प्राण सँ सभक सेवा-टहल करैत छलै कपिला। बड़ कृतज्ञ भऽ गेल छल कुबेर ओकरा लग। बड़ नीक अइ कपिला। जानि ने किए जे ओकर घरवला ओकरा छोड़ि देलकै।

केतुपुर मे चारि दिन पूजाक ढोल-ढाक बजलै - उत्सव भेलै। मलहटोलीक बुढ़-बच्चा सभ साँझ-परात ठाकुर दर्शन कएलक। केओ-केओ तारी पीबि बेस मतलामी कएलक। शीतल एक दिन एगो देशी शराबक बोतल शेष कऽ रासू के पकड़ि नीक जकाँ पीटि देलक। रासूक उपर ओकर एते तामस किए छलै के जानए।

एक दिन साँझखन लखा के संग लऽ कपिला शेष ठाकुर दर्शन लेल गेल। कने बाद मे कुबेर सेहो टुघरल टुघरल हाजिर। ओ देखलक जे शीतलक संग हँसि-हँसि कऽ कपिला बतिआइए। शीतल भेल बाबू लोकनिक कर्मचारी, पूजाओ बाबूए लोकनिक - भाव भंगी एहन जेना उएह सर्वे-सर्वा हो! किन्तु ओकरा संग हँसि-हँसि एते की गप करैए कपिला ? तकर बाद शीतल परसाद माङि आनि कपिलाक आँचर मे बान्हि दै छइ, कपिला भरि मुह हँसि दैए। एते लोकक बीच कपिलाक एहन निर्लज्ज आचरण देखि तामसे कुबेरक दम अँटकए लगै छइ। ओ हाक दैछ - लखा! चल, घर जाइ। कपिला कहलकै - अएलह ने की माझी ? कने थमहऽ, हमहूं जाएब, एकबेर मा के परनाम कऽ ली।

कुबेर बाजल — लखा, अएलें रे हरमजादा ?

कपिलाक प्रणाम शेष करैत करैत लखा के संग लऽ कुबेर डेग झारलक।

मुदा कनिञे दूर गेलाक बाद ओकर डेग छोट होमए लगलै। नञि, कपिला लेल ओ नञि घुरत, तखन आस्ते आस्ते चलै मे तऽ कोनो दोष नञि। कपिला आबि जँ संग धरै तऽ धरौ। अन्हार भऽ गेल छइ, ओकरा असगर छोड़ि गेनाइ ठीक नञि हेतै। भऽ सकैए जे ओ शीतल के घर पहुँचा दै लेल कहै। एतेटा अन्हार रस्ता शीतलक संग संग जाएत कपिला ? ताइ सँ नीक जे बीड़ी किनबाक बहन्ने एही ठाम ठाढ़ रहए कुबेर।

बीड़ी किनैत-किनैत कपिला पहुँचि गेलै। कुबेर मुदा नञि टेकलकै। तीनू गोटे चुपचाप चलए लागल। कपिला जतले आँखि कुबेर दिस तकैछ। अन्हार मे किछु देखाइ नञि पड़ै छइ। जाइत-जाइत भेंट होइ छइ रासू सँ, जुगी के संग लेने ओ ठाकुर देखै जाइ छल।

कपिला जुगी के कहलकै — बहिन, एगो काम करबे, हमर लखा के संग लेने जो ने।

कुबेर आपत्ति करै छइ— किए, लखा कि ठाकुर नञि देखने अइ ?

कपिला कहलकै — छओंड़ा-माड़रि हइ, मन नञि भरल हेतै। तोहर लखा तऽ बुढ़ नञि भऽ गेलह माझी जे एक नजरि देखि हाली-हाली बिदा हेतह घर दिस। जो रे लखा, जुगी मौसी जरे चल जो। बहिन, छौड़ा पर कने खेयाल रखिहें, बड़ बदमास हइ।

मतलब की छइ कपिलाक ? लखा के किए साहि देलक ? किछुओ जेना बुझबा मे नञि अबै। कपिला चुपचाप बाट चलैए, कुबेर मने-मन तमसाइत रहैए। अन्त मे एगो तेतरि गाछक नीचा, जाइठाम बाटक दुर्भेद्य अन्हारक रचना भेल सन लगैछ, हठात् कुबेर सक्त सँ कपिलाक आँचर धऽ खीचैत बजैए — शीतल सँ तोहर एते कथीक गप, आँइ ?

कपिला कहलकै -- ई की करै छहो माझी ? खुजि कऽ गीर पड़तै जे परसाद। कपिला आँचर छोड़ेबाक चेष्टा करैए। ओ मिनती करैत कहै छइ, धीया-पुता नाहित नञि करहो माझी, छोड़हो - रस्ता मे ई केहन काण्ड शुरू केलहो ?

बजैत-बजैत कपिला आर आँचर खीचा-तीरी नञि करैए। कुबेर के पँजिया लेने ओ शान्त भेल रहैए। हठात जेना करुण कण्ठे कहै छइ— मन निमन नञि है माझी - छोड़बहो नञि ? मन बेकल अइ।

कुबेर ओकरा छोड़ि दै छइ।

चलैत-चलैत पुछलकै, मन किए बेकल छौ गे कपिला ?

के जनैत छल जे कपिला एहन जवाब देतै।

सोआमी के मन पड़ैए माझी।

ओ! तकर माने शुरू सँ शेषधरि सभ कपिलाक फाँकी, सभटाए छल। एतेकाल ओ रसिकता करैत छल कुबेरक संग। बड़ बेस, रसिकता कुबेरो जनैए।

ओ कपिलाक गाल अँइठि दैछ आ हीं-हीं कऽ हँसए लगैछ। बजैए — सएह कहै कपिला — सएह कहै तऽ। जे सोआमी तोरा छोड़ि देलकौ - दूर कऽ देलकौ - तकरे खातिर मन खराप! तऽ जाइ ने छें किए सोआमीक घर ?

जेबै।

बाजि कपिला हन-हन करैत चलए लगैए।

•



छओ

ओइ दिन राति मे गोपीक पैरक दरद बेस बढ़ि गेलै। ओकरा नवका घर मे आनल गेल छलै। सगर राति ओ छटपट करैत, कुहरैत बितओलक। माला ओकरा माथ लग बैसल जागल रहल। कुबेर सेहो देर राति धरि जगले छल। तकर बाद ओ सुति रहल अबस्से, किन्तु नीक जकाँ निन्न नञि भेलै। भोरहरिया मे उठि कऽ बैसैत ओ आवाज देलक — गोपीक माए ?

जवाब देलकै कपिला — नित्र हइ।

कुबेर उठि लग आबि कहलकै - जो, तोंहू सुतै गऽ कपिला, हम बैसै छी।

कपिला जतले कण्ठ बाजल - बाह रे मरद! राति भरि सुति भोर मे बोलै हए जो कपिला, सुतै गऽ, हम बैसै छी। कौआ डकै हइ, सुनै छहो माझी ?

सएह तऽ फरिच्छ भेल जाइ छइ जे।

झाँप खोलि कुबेर बाहर भेल। गणेशक आङन जा ओकरा हाक दऽ उठओलक। जुगल कालि बहिनीक आङन नोत खेबा लेल आबि राति एतै सुतल छल। ओहो उठि आएल। कुबेर बाजल — गणेश, छौंड़ी के तऽ असपताल लऽ जाए पड़तै। बड़ तकलीफ होइ छइ। रातिभरि चिचिआइत चिचिआइत मरै पर छलै।

गणेश बाजल — हैं ? बैस कुबेर। चिलम पी। असपताल लऽ गेनाइ तऽ आसान काम नञि छइ। केना लऽ जेबही से सोचलै हैं ?

नाओ-ए पर ने लऽ जेबै- आर केना ?

समस्याक समाधान देखि गणेश खुशी होइत बाजल — तब चिन्ता नञि। आइ जुगलाक नाओ मिलतै — ओ नाओ लऽ कऽ आएलए। देबही नञि जुगला अपन नाओ ?

जुगल खुसी-खुसी नाओ देब स्वीकारलकै। कहलकै जे ओहो संग जेतै। बड़ बेसी फुलल छइ भरिसक गोपीक पैर। कहाँ चोट लगलै ? पहिने किए ने बेटी के असपताल लऽ गेल कुबेर। पहिने लऽ गेनाइ उचित छलै। से जे होउक, जँ आइ असपताल लऽ जाइक होइ तऽ देरी केने की फेदा ? बेर भऽ गेने असपताल मे डाकडरो नञि मिलतै।

एकटा चओड़ा काठक तखता पर सुता, धऽ पकड़ि गोपी के नदी तीर पर लऽ जाएल गेलै। हाथ मे केथरी गेरुआ (बालिस) लेने कपिला संग मे गेलै। एही बीच सगरो मलहटोली ई खबरि पसरि गेलै। गामक कोनो छौंड़ी के असपताल लऽ गेनाइ प्रतिमा विसर्जन सँ छोट बात नञि भेलै मलहटोलीक लोकक लेल। भोरे-भोर नदी तीर पर छोट-छीन भीड़ जमि गेल छलै। प्रश्नक जवाब दैत-दैत कुबेर फिरीसान।

कपिला पहिने नाओपर चढ़ि केथरी ओछा, गेरुआ राखि देलकै। तकर बाद गोपी के उठा कऽ ओइ पर सुता देल गेलै। दरदे आ डरे गोपीक मुह सुखा गेल छइ। असपताल ? जानि ने केहन भयंकर हेतै ओ जगह! के जानए ओइठाम ओकर कोन गति हेतै। कपिलाक एकटा हाथ गसिया कऽ पकड़ने रहल गोपी।

नाओ खोलल जेतै तैखन देखल गेल जे रासू दौड़ल अबैए। किनार पर अबिते ओ फानि कऽ नाओ पर चढ़ि गेल।

कुबेर पुछलकै —की रे रासू ?

रासू हकमैत-हकमैत बाजल — हमहूँ जाएब।

चलओ! एते पैघ नाओ छइ, जगहक अभाव थोड़बे हेतै। बेसी लोक रहने गोपी के चढ़ाबै उतारै मे बरु सुभीते हेतै।

महकुमा शहर अमिनबाड़ी - ओहीठाम छइ असपताल। केतुपुर सँ अमिनबाड़ी बेसी दूर नञि छइ, घण्टा तीनेक लगलै पहुँचै मे। रासू के सेहन्ता छलै जे गोपी के घाट सँ असपताल धरि लऽ जेबा मे ओहो हाथ लगाओत, किन्तु तकर प्रयोजन नञि भेलै। सकल के नाओ पर बैसल रहै लेल कहि जुगल उतरि गेल। कनिञे काल बाद ओ कहाँ कतए सँ खोजि एगो पालकी लेने आएल। जुगल कि कम होसियार लोक अइ। पालकी चढ़ि गोपी असपताल गेल।

अस्पताल मे तखन रोगीक भीड़ लागल छलै। नान्हिटा एगो छऔंड़ाक फोंसड़ीक आपरेशन होइत छलै, की जे ओकर चीत्कार। से देखि सुनि गोपीक तऽ मुह सुखा गेलै आ ओ गुंगुआए लागल। कुबेरक भिन्ने चेहरा पीअर पड़ि गेलै। थोड़-बहुत सभ भीत ओ संत्रस्त! केवल रासूटा अविचलित अइ। मयनाद्वीप सँ पड़ा आबि नोआखालीक असपताल मे ओ पनरह दिन कटने छल- ई ओकर परिचित जगह छइ, ओ सभ के अभय दैत बाजल — कोनो डर नञि, डर कथिक? सभ ठीक भऽ जेतै।

उएह जा डाकडर के गोपीक हालात कहि नाम धाम लिखा आएल। की गुमान रासूक! कुबेर देखओ जे केहन पकिया लोक अइ ओ। देखि राखओ।

लगभग एगारह बजे डाकडर बाबू आबि गोपीक पैरक परीक्षा कएलनि। परीक्षा कऽ हुनक तामसक ठेकान नञि छल। रासूए छाती तानि-गप करैत छल। ओकरे गोपीक अभिभावक बुझि धमकबैत किछुटा उठा नञि रखलथिन डाकडर। एतेदिन ओ सभ की करैत छल, बैसल घास कटैत छल ने की? पहिने नञि आनि भेलै गोपीक कें? एखन जँ पैर काटि बाद देमए पड़ै?

आपरेशन टेबुल पर पड़ल गोपी कपिलाक हाथ गसिया कऽ पकड़ने छल। ओ तऽ गोंगिया-गोंगिया कनिते छल बीच-बीच मे कपिला सेहो घना उठबैत आ फेर डाकडरक धमक खा चुप भऽ जाइत। परीक्षा निरीक्षा शेष कऽ डाकडर बड़ भयानक बात कहलथिन — गोपी के राखि जाए पड़तै। ओना ओ इहो कहलथिन जे रखनाइ वा नञि रखनाइ गोपीक बापक मरजी, कोनो जोर जबरदसती नञि छइ।

असपतालक बरण्डा पर परामर्श सभा बैसल। डाकडरक धमकओने रासू उदास छल, ओ फेर कोनो बात नञि बाजल। भऽ सकैए एतेकालक बाद गोपीक हालात जानि सेहो मन खराप भऽ गेल होइ। घर मे गोपी कानए लागल - मौसी गे मौसी, हम अइजग नञि रहबै गे मौसी, हमरा लेने चल। आर बाहर कुबेर, गणेश आ जुगल गम्भीर भेल बतिआए लागल जे आब की कएल जाए। ओना सलाह परामर्शक कोनो मतलब नञि होइ छइ। डाकडर जेना कहलथिन तकर बाद गोपी के नञि रखने उपाय नञि, तैयो ओ सभ अज्ञ ओ डेरबुक, गामक लोक किने, नीक जकाँ सलाह परामर्श बिनु कएने कोनो निर्णय कइए ने सकैछ।

गोपी के महिला वार्ड मे भरती करा देल गेलै। तकर बाद आर ओकरा सभ के गोपी लग रहबाक उपाय नञि छलै। फेर उएह चारि बजे ओ सभ आबि छौंड़ी सँ भेंट कऽ सकैछ।

गोपी कपिला के किन्नहु नञि छोड़तै। कानि कानि ओ कहए लगलै - मौसी गे मौसी, हमरो लेने चल गे मौसी - हमरा कहाँ छोड़ने जाइ छैं?

चलैत-चलैत ओ सभ नदी घाट पर घुरि गेल। बाट मे थोड़े चूड़ा मुड़ही कीनि लेलक। एते बेर धरि ओ सभ किछु ने खएने छल।

चुपचाप ओ सभ जलखै केलक। आब? आब ओ सभ की करत?

जुगल के रुकबाक उपाय नञि छलै। नाओ ओकर भाड़ा ठीक भेल छइ। सकाले देवीगंज जेबाक बात। कुबेर की एखन गाम घुरत? गामक घाट पर सभ के उतारि जुगल सोझे देवीगंज रमाना देत।

कुबेर कहलकै — तों सभ जो। बेर मे छौंड़ी के एकबेर बिनु देखने हम नञि जाएब।

रासू कहलकै — हमहूँ रुकै छी, आँइ?

कुबेर कहलकै — नञि रासू, तोंहू चलि जो। हम अपने कहाँ रहब तकर ठीक नञि - तों रहि की करबैं?

गणेश रहए चाहलक, किन्तु कुबेर तकरो बुझा-सुझा जएबा लेल राजी करओलक। कपिला तऽ अबस्से घुरत तें ओकर रहनाइ वा गेनाइक बाते ने उठलै। कपिला सेहो ने किछु बाजल। किन्तु अन्ततः कपिलाए नाओ पर नञि चढ़ल। ओहो बेरधरि रहत, आर एक खेप गोपी कें बिनु देखने ओ की घुरि सकैछ? मौसी-मौसी कहि छौंड़ी हाकरोस करैत हेतै। केओ ओकरा टस सँ मस नञि कऽ सकल। कुबेर कते कहलकै जे अपने ओ कहाँ रहत तकर कोनो ठीक ठेकाना नञि ताइपर स्त्रीलोक संग मे रहने जे कते असुविधा, कते हंगामा - आ फेर लोके की कहतै? मुदा कपिला कोनो बात पर कान-पात नञि देलक।

नाओ चलि गेलै।

कुबेर मुह फेरि देखलक, नदीक बसात जेना कपिला के स्पष्ट केने हो। साड़ी देहक संग मिलि गेल छइ। बैगनीए रंगक साड़ी पहीरि कऽ जे आइयो ओ बहराएल अइ से तऽ कुबेर एतेकाल लक्ष्ये नञि कएलक। आब ख्याल पड़ने ओकरा जेना असंतोषक बोध भेलै। कपिला के लऽ कऽ एखन ओ की करत, कहाँ जाएत? की मतलब छइ कपिलाक? खगते की छलै ओकर रहबाक?

की देखै छहो माझी? कोन सोच मे पड़ल छहो? कपिला पुछलकै।

तोरा तकर की? कुबेर बाजल।

पिताइ किए छहो ? हे उएह देखहक जहाज अबै हइ।

ओहीठाम नदी तीर पर ठाढ़ ओ सभ देखैत रहैए। चक्राकार घुरि जहाज जेटी पर आबि कऽ लगै छइ। आइ कते भीड़ छइ जहाज मे। आइ शेष पूजा छइ, देश-देशान्तरक लोक घर घुरि रहलए। आर कुबेरक भाग देखू, बेटी कैं विदेशक एइ असपताल मे छोड़ि हत्बुद्धि जकाँ नदीतीर पर ठाढ़ भेल अइ। कहाँ जाएत, की करत तकर ठीक नञि! भों-भों करैत जहाज चलि पड़लै। नदीक आलोड़ित पानि ढेउ जकाँ उठि तीर पर पछार खेलक। बेटी लेल एहिना ढेउ उठै कुबेरक मन मे।

हठात् कपिला पुछलकै — माझी, पाइ-कौड़ी अनने छहो ने ?

हँ।

कत्ते ?

ताइ सँ तोरा कोन काम ?

हमरो लग थोड़े हइ, लगने कहिहऽ। कपिला अपन आँचरक खूँट मे बान्हल कैंचा देखओलकै।

कुबेर हँ नञि किछु ने बाजल। जेटी खाली देखि कने कालक बाद ओही पर छाँह मे ओ सभ जा कऽ बैसल। कुबेर कपिला दिस नञि तकैए। एकर बाद एक बीड़ी धरा सोंठैत रहैए - मिनटे-मिनटे बीड़ी पिनहार जेना ओ कोनो पैघ लोक हो।

घुरबऽ केना माझी ? कने काल बाद कपिला पुछलकै।

पता ने! तोहर जे काण्ड-करखाना! तोरा लऽ कऽ जे की करब ?

हमरा लागी फिकिर नञि करहो माझी।

एतेकाल बाद की सोचि कुबेर हँसल। बड़ अबोध छैं तो कपिला। घरबला सुनतौ तऽ की कहतौ सोचलिही ?

कहौक।

हऽ, कहौक। कलंक किनबाक साध सोलहो आना बुझाइछ कपिलाक। कुबेर गम्भीर भेल मूड़ी हिलबैछ। ई तऽ नीक बात नञि। एक आङन मे जे सभ रहैछ, ओकर सभ के केबल दुर्नाम किनबाक लेल एइठाम एना पड़ल रहबाक कोनो माने नञि होइ छइ। खाली गोपीक लेल की कपिला रहि गेल ? गोपी के ओ एते सिनेह करै छइ के जानए। कपिलाक मन बुझबाक खेमाता भगवान कुबेर के नञि देलखिन।

बेर खसलापर दुनू गोटा असपताल गेल। एइबेर प्रथमे कुबेर के बुझेलै जे कपिला रहि कऽ नीके कएलक। एइ तरहें कपिला जकाँ गोपी के बोल भरोस देल ओकरा बुते कहाँ पार लगितै। तकर अलाबे गोपी के लऽ कऽ डाकडरक जे काण्ड - कपिला नञि रहने साहस कऽ कऽ के रहितै गोपी लग ? गोपीक ठेहुन पर हाड़ेटा नञि टुटल छइ, एकटा बेस पैघसन बाँसक कमची पैसि गेल छइ माउसक भीतर। पैर फुलि तकरा अढ़ केने छइ। डाकडर बेरिया मे तकरा खीचि कऽ बहार केलनिहें, तकर बाद जतबादूर धरि सम्भव हाड़ के अपना जगह बैसा - डाँड़ सँ पैर धरि काठक तखता दऽ बैंडेज कऽ देलनिहें। कुबेर से सभ नञि देखलक - बाहर बैसि केबल गोपीक आर्तनाद सुनैत रहल।

ओ दुनू जखन असपताल सँ बहरा बाट पर आएल तखन साँझ पड़बा मे बेसी देरी नञि छलै। दूर मे विसर्जनक बाजा बजैत छलै। एखन ओकरा सभ के गामे फिरए पड़तै। एइठाम कहाँ बिताओत राति ? कालि फेर कुबेर आबि गोपी के देखि जेतै। नदी घाट पर जा कुबेर एक-एकटा कऽ नाओ तकलक जे कतौ कोनो चिन्हार माझी भेटि जाइ। चिन्हार माझी दू चारिटा भेटलै अबस्से मुदा आइ विजयाक साँझ मे तऽ केओ नाओ खोलत नञि। देवीगंज दिस जकरा सभ के जेबाक छलै से सभ दिने-देखार चलि गेल छल। तखन गहनाक एगो नाओ खुजतै। कुबेर के मन होइ तऽ भाड़ा दऽ कऽ जा सकैए। नञि तऽ कालि सकाल धरि अपेक्षा करओ, जे कोनो नाओ ने किए केतुपुर दिस जाओ, कुबेर ओइ सँ गाम घुरि सकैए।

कते नाओ जेतै कालि, भाड़ा दऽ कऽ किए जेबह कुबेर भाइ ? कहैत कोनो चिन्हार माझी कुबेर के अपना नाओ पर राति कटबाक अनुरोध केलकै। केबल चिन्हार माझी किए, पद्मा नदीक माझी अइ ओ, पद्मा नदीक जे कोनो माझीक नाओ पर राति बीच रहबाक अधिकार ओकरा जन्मगत छइ, किन्तु एइठाम राति बितओनाइए जे मोसकिल। कपिलाक संग एकठाम राति काटि कालि ओ गाम मे केना मुह देखाओत ? कोन विपत्ति मे जे धऽ देलकै ओकरा कपिला।

भाड़ा दऽ गहनाक नाओ मे गेनाइ छोड़ि दोसर उपाय नञि। कते भाड़ा लेतै के जानए। पुछला पर गहनाक माझी कहलकै - सोनाखाली होइत किनारे-किनारे ओ सभ देवीगंज जाइछ, पद्मा पार कऽ कऽ कुबेर के ओ सभ केतुपुर मे उतारि दऽ सकै छइ। हासाइलक चओर धरि ओ सभ ई किनार धेने जाएत, कुबेर ओइठाम उतरि सकैए। भाड़ा लगतै माथा पिछु तीन आना।

हासाइलक चओर सँ केतुपुर तीन कोस सँ कम नञि हेतै। राति-बीच कपिला एते दूर चलि सकत वा नञि - सन्देह। कुबेर पुछलकै — की करी कपिला ?

कपिला कहलकै — आइ नहिञे गेली ? कालि बिहाने गोपी के देखि मेला घुरब।

आ रहब कहाँ ? नाओ पर ?

से कि सम्भव छइ ? नाओक माझी गुण्डा ने बदमास - के जनैए। कपिला की नदी घाट पर उदाम नाओ मे सुतल रहि सकत ? उएह तऽ घाटक होटल देखाइ पड़ै छइ ओतै - घर भाड़ा लेल जाए।

आर की करत कुबेर ? दर दाम कऽ छओ आना मे एगो पैघ घरक एक कात करची टाट सँ बेढ़ल कनेटा जगह भाड़ा केलक। दरजा वा झाँप किछु नञि, ढुकबा लेल कने फाँक छोड़ि देल गेल छइ। घर मे पँतियानी सँ मोट-मोट पटिया ओछाओल - अतिथि लोकनिक रात्रिशयनक व्यवस्था। घेरलाहा जगह एकेगो पटिया मे आच्छन्न। बाहर एगो उदाम घर मे खेबाक व्यवस्था। भनसा घर मे सेहो कएकटा पीढ़ी बैसाओल। घरक माझठाम एगो करिऐल शीशावला लालटेन राखल - बाँकी सभठाम नमका घेंटवला डिबिया।

कुबेर जा उदाम घर मे बैसि खा आएल। घरक बाहर लोकदिस पीठ केने आकाशक नीचा बैसि कऽ खेलक कपिला। तकर बाद कुबेर एक पैसाक पान किनि अनलक आ बेढ़लाहा जगह मे बैसि दुनू पान चिबाबै लागल चुपचाप। दिनभरि कत्ते दौड़-बड़हा झंझट-झमेला गेलैए, दुपहर मे नहेनाइयो नञि भेलै। पेट मे भात पड़लै - आस्ते आस्ते दुनू झुकए लगैए। आर कने राति चढ़ने कुबेर हुलकी दऽ देखैए, किछु लोक कपड़ा माथ तऽर धऽ पटिया पर सुति रहल, कोनो पटिया पर केओ-केओ बैसल चिलम पीबि रहलए।

कुबेर उठि ठाढ़ होइछ, बजैछ - सुत कपिला।

तों कहाँ जाइ छहो ?

जाएब कहाँ ? ओइ पटिया पर जा कऽ सुतै छी।

डेराएल दबले कंठे कपिला कहै छइ — नञि, नञि जाहो माझी।

कुबेर की तमसा जाइए ? जोर सँ पुछै छइ — तऽ की करू हम ?

डेरेबै माझी।

आर की करत कुबेर, फेर ओ पटिया पर बैसि जाइए। कपिला अपन चद्दरि के नुड़िया ओकरा गेड़ुआ बना दै छइ। ओकरा अपन माथ तर देबा लेल एगो चटुआ छइ। कुबेर के सुति रहने कपिला अपन केश खोलि ओकरा आड़ुर सँ

सरिअबैत-सरिअबैत बजैए — गोपी लागी परान उड़ल अइ माझी। छौंड़ी डरे भरिसक कनैत-कनैत परान तेजने हेतै।

बुझना जाइछ जे कपिला कनैए।

की जानि कहियाधरि छौंड़ी नीक हेतै आ घर घुरतै। बिहान ओकरा छोड़ि केना घुरबै माझी ?

कुबेर काठ भेल पड़ल रहैए। एइठाम कपिला कनैए, गाम पर भऽ सकैए कनैत होएत माला। बाट दिस तकैत की जानि कते की सोचैत होएत। आर गोपी की करैत होएत से जेना सोचलो ने जाइ छइ।

दोसर दिन भोरक पहिने नित्र टुटलै कपिलाक। ओ हाफी करैत उठि बैसल। हिला डोला कऽ कुबेर के उठओलक। टाटीक बाहर रातुक अतिथि सभ एखनो फोंफ कटैत, खाली होटलक मालिक बाहर दुआरि लग मटियातेलक काठक वक्सा पर बैसल चिलम पीबैत। भनसा घर मे खबासिन चूल्हिक छाउर बहार करैत छलै। सुतल कुकूर कपिला के देखिते उठि ठाढ़ भऽ नाङड़ि पटपटबए लागल।

मृदु मधुर शीत पड़लैए। कुबेरक चद्दरि पहिरि पहिने कपिला नदी मे डूब दऽ आएलि। तकर बाद नहाए लेल गेल कुबेर। कुबेर के घुरि आएबाधरि कपिला, ओइ बेढ़ला जगह मे नुकाएल छलि। पुरुषक नजरिक आइ बड़ लाज होइ छइ कपिला के। दिनक इजोत मे ओकरा बुझाइ छइ जे दुनियाँभरिक लोक जनैए जे जकरा लग ओ राति मे सुतल छलि से ओकर घरबला नञि छइ।

मुरही आर बतासा किनि कुबेर घुरि आएल। दु फँक्का फाँकि कपिला बाजलि जे आर ओ नञि खाएत। नञि खाओ, कुबेरक अपने पेट मे बड़ जगह छइ। आस्ते-आस्ते मुरही बतासा शेष करैत ओ बाजल - चल कपिला, जाइ असपताल।

रौद तखन उठले छलै। एते सकाल ओ सभ गोपी सँ भेंट नञि कऽ सकल। नओ बजे धरि असपताल मे बैसल रहए पड़लै। तकर बाद घण्टाभरि गोपी लग बैसि, ओकरा बोल भरोस दऽ घाटपर धुरि आएल। जहरक सार नुरुलक नाओ काठक बोझ उतारि देवीगंज फिरल जाइत छलै - ताही नाओ पर ओ सभ उठि बैसल।

गामक घाटपर नाओ सँ उतरि कुबेर बाजल — तों आङन जो कपिला, हम कने गणेश लग सँ भेल अबै छी।

आङन मे जे झड़-झमेला, कन्ना-रोहटि हेतै तकर पहिल झाँट कपिलेक उपर

दऽ जाओ। कपिला किन्तु असगर आङन जाए लेल राजी नञि भेलै - खोंझाइत कहलकै — बाहरे मरदबा!

तखन आर किछु नञि बाजि कुबेर हन-हन करैत घरमुहा बिदा भेल। पछुआ गेलि कपिला। बाट मे जकरे सँ भेंट होइ सएह उत्सुकता सँ गोपीक मादे पुछै - मुह घुमा परिहास, मुह झाँपि हँसनाइ, कटु वचन किछुओ ककरो सँ नञि प्राप्त भेलै कुबेर के। एहन की सुनाम छलै गाम मे कुबेरक जे कपिलाक संग अनजान जगह मे राति बितओलाक बादो से सुनाम अक्षत अम्लान छइ ? की बात छइ ? चलैत-चलैत हठात् कुबेर के मन पड़लै, दुइए गोटा तऽ नञि, गोपी लऽ कऽ तऽ तीन गोटा ने भेल। गामक लोक तऽ ओकरा आ कपिला के होटल मे करची टाट सँ बेढ़ल निर्जन जगह मे रहबाक कल्पना नञि ने केने हेतै - गोपी के सेहो ओकरा लोकनिक संग होएबाक बात सोचने होएतैक। तें ककरो मन मे संदेहक अवकाश नञि।

कुबेर ठाढ़ भेल। बाजल — देख कपिला, केओ पुछने कहियही जे राति असपताले मे रही, गोपी लग।

कपिला मुह चमकबैत कहलकै — दूर हो! फुसि बात हमरा बोलऽ नञि आबै छऽ माझी।

एतबा कहि कने पहिने जेना कुबेर चलै छल तहिना हन-हन करैत कपिला अगुआ गेलि। के जानए की छइ कपिलाक मन मे! मना नञि मानि कालियो अमिनबाड़ी मे रहि गेल, आइ मना नञि मानि साँच बात बाजए चाहैए। बाजओ। पुरुष मानुस अइ कुबेर, ओकरा कथिक डर ? कपिलाक सत्यवादिताक फल जँ ककरो भोगए पड़तै तऽ से भोगत ओ अपने।

आङन जा कुबेर देखलक जे माला लग बैसि कपिला विस्तार सँ अमिनबाड़ीक गप कहि रहलए। कातक चटाइ पर ओ बैसि रहल। माला के सभ किछु कहि देतै ने की कपिला! होटल मे राति बीच रहबाक बातो ? कपिला कहैत जाइत छइ साँझखन जे केहन विपत्ति मे ओ सभ पड़ल छल। असपताल मे रहए नञि देलकै, घुरि कऽ आएल तऽ नाओ सेहो नञि, आब जाओ तऽ कहाँ जाओ। शेष मे एक मुखतार बाबू दया कऽ कऽ ओकरा लोकनि के आश्रय देलथिन। की नाम छलै मुखतार बाबूक माझी ? मुह फेरि कपिला कुबेर सँ पुछलकै।

कुबेर थतमत करैत बाजल— की जानि ?

पुछलहो नञि ?

कुबेर मूड़ी हिलओलक।

दू दिन गोपी के देखए गेनाइ नञि पार लगलै। जीविका उपार्जन मे व्यस्त भेल रहल कुबेर। तेसर दिन भोरे माला शुरू कऽ देलकै - बाप रे बाप, केहन कठोर छइ कुबेरक हिरदे! छौंड़ी के जे ओ कहाँ राखि आएलए, आर की ओकर खोजो-खबरि नञि लेल जेतै ? जिनगी भरि लेल की छोड़ि अएलैए छौंड़ी के ? एना जे निफिकिर भेल अइ कुबेर ?

भरि राति मछबारि कऽ कुबेर तखने आङन घुरल छल। खा-पीबि दुपहर मे ओ रमाना होएबाक बचन दऽ माला के शान्त कएलक। तकर बाद सुतै लेल गेल पीसीक घर। सुति उठि नहा कऽ आबि ओ टेढ़ आँखिए कपिला दिस देखैत रहल। की जानि कपिला आइ संग जाए चाहत वा नञि ? कपिला किछुओ ने बजैए - एक बेर सोझा आबि फेर अन्तर्धान भऽ जाइछ।

खाए लेल बैसि कुबेर कहै छइ, खेलाक बाद अमिनबाड़ी रमाना हेबै कपिला।

आइ नञि घुरबहो ?

पता ने! भऽ सकैछ जे होटले मे रही।

होटल मे किए ? रहिहऽ, मुखतार बाबूक ओइजग रहिहऽ।

बाजि कपिला हँसैछ। लाजे माथ झुकओने खाइत रहैए कुबेर। नञ्, कपिलाक मनक थाह पाएब कुबेरक बश नञि। ओ कखन की बाजत कखन की करत, किछुओ अन्दाज नञि लगाओल जा सकैछ।

खा-उठि कुबेर अपन मैलहा चद्दरि देह पर लऽ जएबा लेल तैयार भेल। बड़ गम्भीर भऽ गेल अइ ओ, जेना ओकर कोनो पैघ अपमान भेल होइ जे होएबाक नञि चाहैत छलै। बड़ कठोर अइ कपिला, बड़ दुर्बोध ओकर व्यवहार।

विदा होएबाकाल कुबेर के चारि आना कैंचा दैत कपिला कहलकै - गोपी के फल कीनि दिअहो माझी। तकर बाद माला दिस घुरि पुछलकै — माझी जरे जइयौ दीदी ?

माला कहलकै - तोरा जाइके कोन काम ?

तकर बाद कपिला उदास भेल बिहुँसैत कुबेर दिस ताकि पुछलक — माझी की बोलै छहो ?

कुबेर मूड़ी हिला झटपट बहार भऽ गेल। अमिनबाड़ी ओ पहुँचल बेरखन। कपिलाक देल पाइ सँ ओ स्टीमर घाट पर समतोला किनलक आर फेर गेल गोपी के देखै लेल। नदी तीर पर ओ घुरि आएल साँझखन। आइ गाम घुरबाक नाओक अभाव नञि, तैयो जानि ने किए कुबेर के घुरबाक मन नञि होइ छलै। बड़ी राति

धरि नदी तीर पर बैसल रहि ओ भात खएबा लेल होटल पहुँचल। खाइत काल ओ सुनलक जे बजार मे आइ भसान यात्रा होइ छइ। आइ कुबेरक संग नञि रहने ककरो डर नञि हेतै। खा-उठि ओ बजार दिस डेग बढ़ओलक।

बजार मे टीनक छाओनीक नीचा जाइठाम तर-तरकारीक दोकान बैसै छइ ओही ठाम यात्राक आसर लागल रहै। बेश लोकक जुटान। कुबेर एक कात मे बैसि रहल। पान बीड़ीक दोकान छोड़ि एते राति मे के आन-चीजक दोकान सजओने रहत। वेश्या सभ सेहो आएलए यात्रा सुनै लेल। पेसादार कोनो दल नञि छइ आलू-पेयाजु, नून-तेल बेचनिहार लोक सभक सौखीन दल। कतेको तऽ प्राय: पढ़ौ-लिखौ ने जनैए, एकरा-ओकरा सँ पढ़ा कऽ सुनि सुनि पार्ट मुखस्थ कएने होएत। कतेको कें कठिन शब्दक तऽ उच्चारणो ने कएल होइत छइ। शब्द के तोड़ि-मरोड़ि कऽ तेना बजैछ जे हास्यास्पद भऽ जाइ छइ, कथ्य आ साधु भाषाक जेना एक अपरूप खिच्चरि। पोशाक परिच्छेदक जेहने अभाव तेहने अभिनेता निर्वाचनक बुद्धिक। बालक लखीन्दर लग ओकरा सँ हाथभरि नम्मा बेहुला निर्विकार भावे पार्ट बजैए। आबाज पातर होएबाक कारणे आर चमत्कार मौगियाही अभिनय कऽ सकैए सोचि ओकरा बेहुलाक रोल देल गेलैए - आर किछु देखबाक प्रयोजन नञि।

तैयो राति जागि लोक सभ भसान यात्रा देखैए— एकबेर नञि, अनेको बेर। टुटल हारमोनियम आ फुटल तबलाक संगत, मशालक लाल इजोत, आलू-पेयाजु बेचैवला, नून-तेल बेचैवला अभिनेता, तैयो एइ यात्रा लेल केहन आकर्षण। कुबेर थीर भेल बैसल रहैछ। आस्ते-आस्ते अभिनय चलैत रहै छइ, मा मनसा एगो गीत गबै छथि, चाँद सौदागर दूटा बात बजैए। मुइल लखीन्दर उठि एगो गीत गाबि फेर मरि जाइए। कखन केना कोन दृश्यक आरम्भ होइ छइ, साँपक काटल लखीन्दर लेल बेहुलाक बहुल विलापक पश्चात् फेर मा मनसा किए गीत गाबि-गाबि चाँद सौदागर के डेरबैत छथि जे हुनकर पूजा नञि देने लखीन्दर के साँप कटतै - से सभ बुझबाक प्रयोजन नञि पड़ै छइ। कुबेर मन सँ यात्रा सुनैए। रातिक शेष मे यात्रा शेष भेने पेयाजुक जाइ खलिया बोरापर ओ बैसल छल ताही पर सुति रहैए। किन्तु बेसी सुतबाक सुयोग ओकरा नञि भेटै छइ। सकाल होबए सँ पहिने ओकरा ठेलि ठालि उठा देल जाइत छइ। ओइठाम आब दोकान लागत।

बेस देरी सँ ओ गाम घुरैछ। देखैए जे आङन मे पाहुन आएल छइ। कपिलाक स्वामी श्यामादास।

प्रकाण्ड नम्मा-चओड़ा जुआन लोक, घेंटधरि झुलैत माथक बाबरी-केश, पचकल नाकक नीचा एक जोरा उद्धत मोंछ - खाम्ह मे ओंगठि ओकर बैसबाक भाव-भंगी देखि बुझना जाइछ जेना विश्व ब्रह्माण्ड मे ओ ककरो परबाहि नञि करैत हो। कुबेर उदास भऽ जाइए। की जानि किए आएलए श्यामादास!

श्यामादासक अएबाक उद्देश्य जनबा मे बेसी विलम्ब नञि भेलै। ओकर सगही स्त्री मरि गेलै। ओ कपिला के लऽ जाएत। कखन जाएत ? बेर खसला पर कखनो विदा भऽ सकैए - ताइ लेल की ? कुबेर जँ अबदार कऽ एकदिन रहि जाए लेल कहै - श्यामादास के ताइ मे आपत्ति नञि होएतै।

बैसल-बैसल ओ सभ गप-शप करैत रहैए। एक समय कपिला आबि घरबलाक कान मे की सभ खानगी बात कहलक फिसफिस कऽ फेर हँसैत चलि गेल। पीसीक घर मे ढुकबा सँ पहिने उनटिक कऽ आँखि नचा एगो दुर्बोध्य इशारा ओ केलक।

एते अबेर कऽ कुबेर घर घुरलए, कपिला तऽ एकोबेर खएबाक बात नञि कहलकै ? तऽ की कुबेरक भूख पियासक बात मन रखबाक प्रयोजन नञि रहलै कपिला कें ? गोपीक बातो तऽ ओ नञि पुछलकै ?

आइ कुबेरक देहक चाम बड़ रुक्ख लगै छलै। कते दिन सँ तेल नञि लगओने छल। श्यामादास आएल छइ तें बुझाइए आइ फेर कपिला चपचप कऽ नारिकेरक तेल लेलकए। करिया एकटा सीसी मे विलासिताक ई उपकरण कपिला सदा सर्वदा तैयार रखैए। कोनो उपलक्ष भेने माथ पर सीसी उनटि लैए। श्यामादास के बैसय लेल कहि कुबेर कपिला सँ कने तेल मङलकै। कपिला की केलक, तीमने रन्हबाक तेलवला बाँसक माली लेने आएल आ कहलकै — लैह माझी, हाथ ओरऽ। कुबेरक हाथ ओरने ओ उपरे सँ माली उनटा देलकै - कुबेरक हाथ मे एको ठोप तेल नञि खसलै।

कपिला बाजल दैया रे दैया, तेल तऽ छित्ते ने हइ। बाजि की हँसी कपिलाक!

कुबेर किछुओ ने बाजल। बाँसक माली ओकरा हाथ सँ छीनि ओइ दुपहरिया मे भुखले पियासले गामक दोकान सँ दू पाइक तेल कीनि अनलक। ओसारा पर बैसि कपिला के देखा-देखा बड़ी काल धरि सगरो देह रगड़ि-रगड़ि ओ तेल मालिस केलक। अपना देह के जेना ओहो कपिलाक केशे सन चपचप बना कऽ छोड़त।

ओइदिन दिन भरि ओ कपिलाक संग बात नञि कएलक।

किन्तु साँझक बाद माछ मारै लेल जाइत काल ओ पीनीक गोला लेब बिसरि

गेल। नाओ पर जा असगरे ओ प्रतीक्षा मे बैसल छल तैखन गणेश ओ धनंजय आबि योग देलकै - तकर बाद मृदु ज्योत्स्ना मे पद्माक रहस्यमय वक्षपर नाओ भासि गेल, किन्तु पीनी पहुँचाबै लेल केओ ने अएलै।

प्रात भेने कपिला के संग लऽ श्यामादास चल गेल।

●



सात

हिलसाक समय शेष भऽ गेलै। धनंजयक तीन गोट नाओ हिलसा माछ पकड़बाक काज मे लगाओल गेल छलै। एकटा नाओ पर ओ अपने रहैत छल आ बाँकी दूटा पर रहैत छलै ओकर दुनू बेटा। आसिनक अन्हार मे एगो नाओ टूटि गेलै। आब एगो नाओ ओ रखलक माछ पकड़ै लेल आ दोसर लगओलक भाड़ा खटबाक काज मे। बेटा दुनू माछ धरतै आ अपने ओ एकटा लोकक संग नाओ खेबत।

कुबेर के धनंजय पसिन नञि करै छइ। गणेश के ओ अपन नाओक माझी बनै लेल कहलकै। किन्तु गणेश एहन बोका जे से गेल पुछै लेल, सलाह लेबै लेल कुबेर लग।

कुबेर खिसिया कऽ कहलकै - जो- जो, खटै गऽ अजान का'क नाओ पर। हमरा किए पुछै छैं ? अजान का... बेसी अपन ने तोहर ?

कुबेरक अनुमोदन नञि केने जे बात हेबाक नञि - धनंजय के गणेश कहि आएल जे ओकरा नाओ पर ओ असगरे माझीगिरी नञि करत। कुबेर यदि करै तखने ओहो करत ने तऽ नञि। सुनि धनंजय कहलकै — जो मर गऽ तखन। पचास गो माझी राखब हम, कलबला (इंजनबला) जहाज बुझि लेलैं ने की ?

गणेश से नञि जानए। चिरकाल ओ कुबेरक बात पर निर्भर कऽ आएलए। नाओ कलबला होइ वा खेबैबला, कुबेर जाइठाम नञि गणेशो ताइठाम नञि। कुबेरक

ओसारा पर बैसि ओ निश्चिन्त मने चिलम सोंटए लागल, आ गम्भीर चिन्तित कुबेर सोचए लागल जे आब ओ की करत। करत ओ माझीगिरीए ताइ मे संदेह नञि, तैयो गम्भीर चिन्तित सन हाव-भावक संग आन किछु करबाक मादे सोचनाइ ओकरा सभ दिन नीक लगै छइ। कपिला के चल गेलाक बाद कुबेरक अभाव क्रमशः बढ़लैए। घरक लक्ष्मी जेना चल गेल होइ कपिलाक संग, पूर्णरूपें जेना ओकर भूखक निवृति आर होइते ने होइक। समय सेहो खरापे जाइ छइ। चीज वस्तुक दाम चढ़ल जाइ छइ। बरिसकालक एकटा फसिल नष्ट भऽ गेलै। पटुआक खेतीक चलते आमन धानक फसिलो कमे भेलैए। चासी (खेतिहर) लोकनिक घर मे धान नञि, कैंचा-कौड़ी नञि, छइ खाली पटुआ- कुबेरक घर मे तऽ सेहो नञि। पटुआ पर चासीक अनिश्चित जीवन मरन, कुबेरक जीवन धारण सुनिश्चित माझीगिरी पर, सेहो ठीक सँ जुटिते ने छइ। कुबेर के यदि एगो नाओ रहितै। पद्माक घाटे-घाटे ओ तखन अबस्से अपन जीविका जुटा लैत, आनक नाओ पर लग्गा चलेबाक भरोसे बैसल नञि रहैत।

आइ कालि भोरखन कऽ नदीवक्ष पर पसरल रहैछ कतिका कुहेस, यदिओ अगहन आबि गेल छइ। पानि तर सँ माथ उठओलकए बाट-घाट कतौ-कतौ रबी-राइक पेंपी हुलकी दैछ, कतौ-कतौ बीया बोओगे कएल गेलए। राति मे कने-मने ठण्ढा पड़ै छइ, देहपर कपड़ा लेबए पड़ै छइ।

कुबेरक मन बड़ खराप छइ। किछु नीक नञि लगै छइ। गोपी असपताल सँ घुरि एलैए। ओकर टुटलाहा टाङ सक्कत् भऽ गेल छइ, ओ चलि नञि पबैए। भविष्य मे फेर कतौ हाड़ तोड़ि ठीक कऽ देने भऽ सकैछ ओ नङड़ाइत-नङड़ाइत चलि सकए, चलनाइ ओकर कोनो दिन स्वाभाविक नञि हेतै। जुगल के जमाए बनेबाक आशा आर नञि। छौंड़ी के बियाह देबाक आ ताइ बावद किछु पेबाक भरोसो शेष।

कोन उपाय हेतै गोपीक ?

रासू बीच-बीच मे अबै छइ। गोपीक अवस्था देखि जे ओ बड़ दुखी अइ से नीक जकाँ बुझल जाइछ। गोपीक ठेहुनक भविष्यक मादे डाकडर की कहलकैए से ओ खोधि-खोधि कऽ पुछैत रहै छइ। एक-एक दिन ओ अपनो दाबि-दुबि परीक्षा करैए। कते सावधानी सँ जे ओ गोपीक ठेहुन छुबैत रहैछ।

एमहर माला हठात् रासू के वेश खातिर केनाइ शुरू केलकए। जुगल भेल अवस्थापन्न लोक, गोपी दिस ओ आर घुरियो कऽ ने ताकत। चार-चूल्हि विहीन रासू सम्भव छइ गोपी के ग्रहण करए।

बड़ असमंजस मे पड़ल अइ रासू। आइ ओ चाहने सहजे गोपी के पाबि सकैछ। एको पाइ दहेजो ने देबए पड़तै। किन्तु ओ की एही गोपी के पसिन केने छल, एइ पंगु छौंड़ी के ? नाङड़ माला के लऽ घर बसओने अइ कुबेर, दुखी नञि अइ ओ। गरीबीक कारणे ओ अबस्से कष्ट पबैए किन्तु पारिवारिक जीवन ओकर कामना करै योग छइ। गोपीक संग भऽ सकैछ ओहो एहने सुखी संसार बसा सकए। तैयो मन ओकर आगू पाछु करै छइ। नङड़ी बहु! सम्भव छइ जे जीवन मे कोनो दिन ओ ठाढ़ नञि भऽ पबै। जँ उठबो करतै तऽ लाठी धऽ नङड़ाइत चलतै। पैरक पंगुत्त्वक कारणे भऽ सकैए जे ओकर देहो ने भरै आ चिरकाल कुत्सित देखाइ।

शेष पर्यन्त गोपीक पैरक अवस्था केना की रहै छइ से देखि निर्णय लेबा लेल प्रतीक्षा केनाइयो विपत्ति जनक। असपतालक डाकडर जँ टाङ पहिले सन कऽ दइ ? मुइल लोक के डाकडर बचा लै छइ। एगो टूटल टाङ ठीक केनाइ ओकरा लेल असम्भव नञि छइ। तखन रासू के की कुबेर जमाए बनाबए चाहत। अपसोच कऽ कऽ मरए पड़तै रासू के तखन।

ठीक भऽ जेतै से बात नञि बजलै डाकडर ? रासू पुछै छइ।

हऽ, कुबेर जवाब दै छइ।

किन्तु ई बात रासू विश्वास नञि कऽ पबैए। गोपीक पैर जे किछु दिन मे ठीक भऽ जेतै, रासू के से विश्वास दिएबाक तत्त बेसी आग्रह देखबैए कुबेर जे रासूक मन मे संदेह पैसि जाइ छइ।

हठात् एक दिन ओ अमिनबाड़ी चलि जाइए। असपताल जा पुछताछ करैए—कहै छइ जे ओ गोपीक अपन लोक अइ, कोनो तरहें की गोपीक पैर पहिने जकाँ नञि कएल जा सकै छइ ? डाकडरक सामने कलजोड़ि ठाढ़ भेल रहैए। ओ जेना गोपीक कते दुखी, कते आकुल आत्मीय हो।

नञि, गोपीक दरदी सम्बन्धी के तेहन कोनो भरोस नञि दऽ पओलथिन डाकडर।

रासू उदास मने गाम घुरि आएल। फेर ओ देखए गेल गोपी के। जड़कालाक कुहेस सन उदास लगै छइ छौंड़ी के, रोगाएल- ट्याएल मुह मे दू गोट आँखि दपदप करैत। एगो खढ़क आँटी पर टुटलाहा टाङ राखि ओछाएन पर ओंघराएल पड़ल।

रासू ममता बोध करैए। मयनाद्वीप मे एक-एक कऽ स्त्री-पुत्र के हेरा जाइ निष्ठुर बेदना सँ ओकर हृदय विदीर्ण भऽ गेल छलै, तेहन बेदना लाख-लाख स्त्री-

पुत्र के हेरओनहु आर कोनो दिन ओ अनुभव नञि करत - गोपीक टाङ देखि मनटा मात्र केनादन करए लगै छइ।

एक दिन सकाले होसेन मियाँ कुबेरक ओइठाम आएल। बिहुँसैत पुछलकै — काम नै मिललऽ कुबेर भाइ ? कुबेर माथ हिलबैत बाजल — नञि।

होसेन बाजल - जान उपछ के तोरा आर के चाहै छी, कैसे अच्छा कर सकबऽ सेहे सोचैत रहली। काम करिहऽ हमरे साथ ?

कुबेर मने-मन डेरा गेल। की मतलब छइ होसेन मियाँक! उपकरि कऽ काम देबए चाहैए किए ? होसेन मियाँक उपकार लेने अन्ततः मंगल नञि, कुबेर से बात नीक जकाँ जनैए। कोन स्वार्थ सिद्ध करै लेल होसेन के जे कखन ककर प्रयोजन होइ छइ सएह खाली केओ ने जनैए। कुबेर सोचलक, नञि होसेन मियाँक नाओ पर ओ काज नञि करत। किन्तु से बात बाजल नञि जा सकैछ। ओकर मृदु मुसकी भरल मुह दिस ताकि जते डर होइ छइ कुबेर के, ओही डरक वशीभूत भऽ ओकरे भरि पाँज कऽ धरबाक खगता बोध ततबे बेसी। ओना आइधरि ओ एकर कोनो अपकारो नञि केलकैए - बरन् उपकार केलकैए ढेर बेसी।

कुबेर बलहु आग्रह देखबैत बाजल जे होसेन मियाँक नाओ पर काम पओने ओ बाँचि जाएत। ओ जेना जनैत नञि छल जे कुबेर राजी भऽ जाएत, होसेन मियाँ तहिना खुसी भऽ गेल। मानुस वश करैक कते कएदा जे ओ जनैए! कुबेर के कोन काज करए पड़तै कते की ओ पाओत ताइ सभ बातक कोनो चर्च नञि भेलै। होसेन खाली कहलकै जे बीच-बीच मे कुबेर के दस पन्द्रह दिन लेल घर-आङन छोड़ि जाए पड़तै - जाए पड़तै पद्माक दूरतम बन्दरगाह पर, जतए-जतए होसेन मियाँक बेबसाए छइ। कथिक बेबसाए होसेन मियाँक ? से के जनैए। से प्रश्न के करतै ? कुबेर खाली हामी भरैत गेल— ओकरा आपत्ति नञि छइ। सपरिवार मयनाद्वीन गेनाइ छोड़ि जहाँ जाए लेल कहौ कुबेर तहाँ जाएत, जे करै लेल कहौ सएह करत। बदला मे जीविकाटा भेटक चाही।

कुबेर के गणेशक बात मन पड़ै छलै। एकरे खातिर ओ धनंजय नाओ पर असगरे काज करब नञि गछलक। आइ गणेश के छोड़ि होसेन मियाँक नाओ पर एकरा काज लेनाइ की उचित हेतै ? कुबेर उकस पाकस करैए। गणेशक बात जेना ठोरधरि आबि अँटकि जाइ छइ, बाजि नञि पबैए। दोस्ती निमाहै मे जँ अपने काज फसकि जाइ! तकर अतिरिक्त ओकरा संग गणेशो होसेन मियाँक खप्पर मे पड़ओ से कुबेर के पसिन नञि।

तैयो गणेशोक कोनो उपाय हेबाक चाही। कुबेर सेप घोंटैत पुछलकै — गणेश के नञि लऽ सकै छी मियाँ भाइ ? ओ बलगर अइ, पकिया माझी अइ गणेश। बुद्धि कने भोथ अबस्से छइ किन्तु मलहटोली मे ओकरा जकाँ लग्गा ठेलब आ पतबार खेबब आन ककरो बुते नञि पार लगतै।

होसेन कहलकै — बजा अनिहऽ गणेश के।

अखिनते ?

हँ, जा। बा-चित कैए जाइ।

कुबेर अनिच्छाक संग उठि गेल। होसेन मियाँ के असगर घर मे छोड़ि जाइत ओकरा भरोस नञि होइ छलै। गणेश के लेने घुरला पर ओ देखलक, एही बीच खबरि पाबि अमिनुद्दी आबि होसेन मियाँक बगल मे बैसल अइ। अमिनुद्दी के देखि चिन्हले ने जाइ छइ। इएह कए दिन पहिने जहरक बेटाक संग ओ अपन बेटी के बियाहने छल। स्त्री-पुत्रक अपमृत्युक पश्चात् एना धड़फड़ कऽ बेटीक बियाह लेल सभ मना केने छलै, मुदा ओ ककरो बात नञि मानलक। जे कने-मने बन्धन छलै, अधीर भऽ ताइ सँ मुक्त भऽ गेल। आब ओ की करत से उएहटा जनैए।

कुबेर के देखि अमिनुद्दी बाजल -- मयनाद्वीप जा रहल छियौ कुबेर, कहल-सुनल माफ करिहे - मन मे कुच्छो ने रखिहे।

मयनाद्वीप जाइ छऽ ? किए ?

तऽ आर कहाँ जेबै ?

कुबेर आ गणेश विह्वल भेल अमिनुद्दी दिस तकैत रहल। अपन सभ किछु हेरा रासू एक दिन मयनाद्वीप सँ घुरि आएल छल, एइठाम अपन सभ किछु हेरा अमिनुद्दी आइ मयनाद्वीप जा रहलए। अमिनुद्दी के लऽ जेबा लेल होसेन बहुत दिन सँ चेष्टा करैत छल, एतेदिनक बाद ओकर मनकामना पूरा भेलै। होसेनक कोनो इच्छाए की अपूर्ण रहबाक नञि ? डरे ओ सभ होसेन मियाँ दिस ताकि नञि पबैए। बुझाइ छइ जेना आसिन मासक अन्हर नञि, होसेन मियाँ स्वयं आमक गाछ खसा अमिनुद्दीक कुटीर चूर-चूर कऽ देने छलै। लोक सभ बजै छइ जे केओ-केओ भूत-प्रेत पोसने रहै छइ। होसेनो पोसने अइ वा नञि के जनैए। एक दिन जे ओ होसेन मियाँक जेबी सँ पाइ चोरओने छल जे बात मन पड़िते जेना ओकर छाती धड़कऽ लगै छइ। जकर एहन अलौकिक शक्ति छइ से कि चोरीक बात नञि जनने होएत ? घरक चार नञि, सम्भव छइ जे होसेनक पोसा अशरीरी

शक्ति ओइ दिन गोपीक पैर तोड़ि देने होइ। आङन मे नञि रहबाक कारणे कुबेर बाँचि गेल। मेघौन अमावस्याक अन्हार सन अतल कुसंस्कार उमड़ि-घुमड़ि किछु कालक लेल कुबेरक मन के आछन्न कएने रहै छइ।

कनेकाल बाद अमिनुद्दी उठि गेल। तखन होसेन कुबेर आ गणेश के बुझेबाक चेष्टा केलक, मयनाद्वीप गेने अमिनुद्दीक नीके हेतै। एइठाम ओ दुख शोक मे डूबल रहत, ताइ सँ ओइठाम जा फेर सँ बियाह दान कऽ घर संसार बसेनाइ की नीक नञि हेतै ओकरा लेल ? मयनाद्वीप कि पहिने सन छइ ? आइ कालि जंगल साफ भऽ ओइठाम एखन नगर बसल छइ।

होसेन मियाँक चल गेलाक बाद कुबेर आ गणेश बड़ी कालधरि बैसल बतिआइत रहल। भविष्यक मारिते रास जल्पना कल्पना। चाकरी पाबि दुनू खुसी भेल। देबा-लेबा लेल होसेन मियाँ कंजूस नञि अइ। कहाँ-कहाँ जाए पड़तै, लग्गी ठेलनाइ छोड़ि आर की-की करए पड़तै - एखन ओकरा सभ के तकरे चिन्ता।

किछु दिनक बाद होसेन मियाँक बजाहटि एलै।

कुबेर आ गणेश सबेर सकाल खा-पीबि नदी घाट पर हाजिर भेल। घाट पर होसेन मियाँक एगो बड़की नाओ बान्हल छलै। नाओ पर आर दू गो माझी बैसल छलै - ओहो सभ हिन्दू। होसेन मियाँक व्यवस्था नीक छइ। एके नाओ पर हिन्दू आ मुसलमान माझी रहने ओकरा सभक भानस-भात, खेनाइ पीनाइ मे असुविधा हेतै तें ओ अपन तीनटा नाओ मे सँ दूटा पर अगबे मुसलमान माझी रखने अइ आ एइ नाओपर रखलकए हिन्दू माझी। ओइ दुनू माझीक नाम छइ शम्भू आ बगा।

ओइ समय नदी मे कने मने कुहेस छलै। ओकरा लोकनि के करूआरि धरै लेल कहि होसेन पतबार धेलक। नाओ चलल देवीगंज दिस। देवीगंज मे होसेन उतरि गेल। घण्टाभरि बाद आबि ओ कुबेर के लग बजओलक। कहलकै जे कलकत्ता सँ बीड़ीक चलान एलैए तकरा नाओ पर अमिनबाड़ी पहुँचा देबए पड़तै। ओइठाम गिरिधारी साहाक गद्दी मे खबरि देने ओ सभ माल उतारि कऽ लऽ जेतै, तकर बाद कुबेर नाओ लऽ घुरि आओत केतुपुर। दोसर आदेश नञि भेटब धरि नाओ केतुपुर मे बान्हल रहतै।

सभ के संग लऽ होसेन रेलक माल गोदाम गेल। टाका दऽ माल खलास केलक, कुबेरक हाथ मे तीनटा टाका दैत चुपचाप जेटीपर जे स्टीमर बान्हल छलै सोझे ताइपर चढ़ि गेल।

होसेन मुह सँ किछु नञि कहलकै तैयो ककरो बुझबा मे भाङठ नञि रहलै जे समस्त भार ओ कुबेर के देने गेलैए। कुबेरे आगूक सभ व्यवस्था करत। पहिने तऽ कुबेर एकदम सँ अभिभूत भऽ गेल, ई केहन सम्मान ओकर, की सौभाग्य। एते पैघ एगो नाओ, तीन-तीनटा जबरदस्त माझी, तीन-चारि सए टाकाक माल - एइ समस्त किछुक उपर असगर ओकरे कर्तृत्वक अधिकार। सभक बटखरचाक टाका पर्यन्त होसेन मियाँ ओकरे जिम्मा लगा गेलैए।

माल उठबै लेल कहैत जेना कुबेर के बकारे ने फुटलै। डेराइते ओ एकबेर सभक मुह दिस तकलक। होसेन मियाँक पक्षपात सँ पता ने ओ सभ कते खिसिआएल हेतै।

तकर बाद कुबेर चुपचाप एगो पैकिंग केस उठा लेलक। शम्भु पुछलकै — जलपानी नञि देबही कुबेर ?

कुबेर जँतले कण्ठ बाजल— पहिने माल नाओ पर लदा गेने नञि हेतै ?

से हेतै। धीरे-सुस्ते ओ सभ बीड़ीक केस सभ नाओ पर लादए लागल। काज मे ककरो जेना अंगे ने लगैत होइ। काज सँ बेसी गप कऽ कऽ कुबेरक संग अपनैती जमेबाक चेष्टा ओकरा लोकनिक अधिक। एकेटा केस राखि आबि बगा कुबेर लग एगो बीड़ी दाबी कऽ बैसल। ओकरा सभक देखादेखी गणेशो जेना देह नेरा देलक। कुबेर मने-मन विरक्त भऽ उठल मुदा मुह सँ किछु बजबाक साहस नञि भेलै।

माल बोझाइ भऽ गेलाक पश्चात् कुबेर चूड़ा-गुड़ कीनि सभ के देलकै। बैसल-बैसल तेना आराम सँ ओ सभ चूड़ा चिबबए लागल जेना आजुक लेल समस्त काज शेष कऽ लेने हो। नाओ खुजलाक बादो ओकरा लोकनिक शिथिलता नञि घटलै। तेना ने करुआरि चलबैत छल जेना सक्के ने लगैत होइ।

कुबेर बाजल — कने अंग लगा कऽ काज करै जाह, हाथ चलाबह।

शम्भु बाजल — किए ?

कुबेर साहस कऽ क कहलकै - किए की ? अमिनबाड़ी जाइ मे कि भरि दिन लगा देबहक ? होसेन मियाँ सुनने की कहत ?

शम्भु बाजल — होसेन मियाँ किए सुनतै ?

बाजि शम्भु हँसल। करुआरि पकड़ि छाती फुलबैत बाजल - होसेन मियाँक डर होइ छऽ ने कि कुबेर भाइ ?

कुबेरक परिचय एतेकाल ओ सभ पाबि गेल अइ। आब ओकरा सरदार कऽ केओ ने मानतै, संगबे जकाँ बात करतै। कुबेर बड़ उदास भऽ जाइए। कते पैघ पद पर होसेन मियाँ एकरा बैसा गेल छलै – ई एते जल्दी तकरा गमा बैसल। पहिने-पहिने जखन ओ सभ खातिर करैत अपनैती जमेबाक चेष्टा केने छलै, तखने कने दूरत्त्व बना राखि चलने नीक होइतै। गणेश पर्यन्त ओकरा लोकनिक संग मिलि एकरा सँ ठठ्ठा करैत छइ।

रोआब सँ बाजत ने की ? डर देखाओत ? ओ सभ निश्चिते खिसिया जेतै, किन्तु ताइ सँ एकर की बिगड़तै ? स्वयं होसेन मियाँक निर्वाचित प्रतिनिधि अइ कुबेर। तैयो ई जोर सँ नञि बाजि पबैए। ई जे किछु कहै छइ, सभ हँसि कऽ उड़ा दै छइ। नाओ आस्ते-आस्ते आगू बढ़ैए।

अमिनबाड़ी पहुँचै मे बेर खसि पड़लै। गिरिधारी साहाक दोकान मे खबरि तऽ अबस्से देल गेलै किन्तु माल खलास करै लेल ओइदिन केओ अएलै नञि। राति मे होटल मे खा कुबेर नाओपर सुति रहल। शम्भु ओ बगाक संग जा गणेश शहर मे जे कतऽ राति बितओलक से बेर-बेर पुछलो पर नञि पता चललै। तीनू आदमी रसिकता करैत हँसए लागल। मने मन बेस खिसिया गेल कुबेर। ई की तमासा गनेसिया ओकरा संग करै छइ ? जे बोकबा आजीवन ओकर खुसामद करैत रहलै, संग दोषे एकेदिन मे एना बिगड़ि गेलै ?

कने दिन उठला पर दोकानक लोक आबि माल लऽ गेलै। कुबेर आर देरी नञि कऽ नाओ खोलि देलक। केतुपुरक लगीच अएने दूरे सँ घाटपर होसेन मियाँक सभ सँ बड़का नाओ बान्हल देखाइ पड़लै। देखिते कुबेरक मुह सुखा गेलै। एते देरी हेबाक कारणे जानि ने होसेन मियाँ की कहतै! शम्भु ओ बगा सेहो हठात् काजुल ओ आज्ञाकारी बनि गेलै। घाटक लग अबिते झप-झप करुआरि चलबए लागल। नाओक गति बढ़ि गेलै।

होसेन मियाँ नाओक सामने बैसल चिलम पीबैत छल। छतरीक भीतर माटिक मुरुत सन उदास बएस चालिसेक एक पुरुष, दू गोट माझ बएसी स्त्री आ तीनटा छओंड़ा-छौंड़ी बैसल छल। देखला सँ लगै छल कोनो मुसलमान परिवार। कुबेर ओकरा लोकनि के नञि चिन्हि पओलक। होसेन मियाँक कुटुम परिवार जे नञि छइ से सहजे बुझल जा सकैए। फाटल चीटल, मैल-कुचैल कपड़ा पहिरने, दुबर पातर देह, सुखाएल मुह – गरीबीक चिरपरिचित छाप।

डेराइते कुबेर होसेन मियाँ दिस तकलक, किन्तु होसेन मियाँ विरक्तिक

मिसियोभरि लक्षण बिनु देखओने अपन दाढ़ी सहलबैत केवल एक बेर पुछलकै – माल खलास हो गेलऽ ?

कुबेर रसीद ओकरा हाथ कऽ दै छइ। तकर बाद एक टाका दस आना घुरबैत कहलकै जे बाटक खर्च बाबत एक टाका छओ आना लगलैए। एतबा कहैत ओ फटाफट हिसाब जोड़ओनाइ आरम्भ करैए। बेसी नञि, तीनटाका मे सँ ओ मात्र दू आना चोरि कएने छल, तैयो ओकर छाती धड़कए लगैत छइ। होसेन बिहुँसैत कहै छइ — रुकऽ भाइ, रुकै – हिसाब दिहे ने बाद मे।

से दिन छुट्टी।

कालि फेर जाए पड़तै।

एइ बेर लगपास कतौ नञि, एकदम सँ चाँदपुरो सँ आगाँ मेघनाक मोहाना दिस। गन्तव्य स्थानक निस्तुकी होसेन नञि केलकै। कुबेरक पुछलापर बिहुँसैत जवाब देलकै — धड़फड़ी कथिक! चाँदपुर जा कुबेर सिकड़ी फेकओ, ठीक समय पर स्वयं होसेन पहुँचि नाओक भार लेत; कहि देतै जे कोन बाटे चलतै नाओ ओ कतए जा अन्त हेतै यात्राक।

एइ बेर माल नञि, मानुस यात्री। होसेनक नाओ सँ जे मुसलमान परिवार आएलए – उएह सभ।

कुबेर आ गणेश कते दिन मे घर घुरत से कहल नञि जा सकैछ। घरक खरचा-वरचा दऽ जेबा लेल होसेन दुनू गोटा के पाँच गो कऽ टाका देलकै।

घर घुरतीकाल कुबेर गणेशक संग कोनो बात नञि केलक। गणेशक उपर बड़ तमसाएल अइ ओ। गणेश संग-संग चलैत अलाए-बलाए बजैत रहैए मुदा कुबेर चुप्पी सधने रहैछ, ओकरा दिस तकबो ने करैए। गणेशक मोट बुद्धि, कुबेर जे तमसाएल छइ से आभास ओकरा भेलै ठीक घर लग पहुँचि कऽ।

आभास होइते ओ उदास भऽ बाजल— पिताएल छऽ ने कुबेर भाइ ?

कुबेर कहलकै – जो-जो आङन जो, बेकार बकतूति किए करै छैं।

कहैत ओ हन-हन करैत अगुआ गेल। भुखाएल रहबाक कारणे गणेश तखन तऽ आङन चल गेल मुदा खा-पीबि तुरन्ते हाजिर भेल कुबेर लग। कुबेर किछु ने बजैए, घुरियो ने तकैछ। गणेश सोचि-बिचारि चिलम साजि दू-एक-दम खीचैत ओकरा कुबेर दिस बढ़बैत बाजल धर' कुबेर भाइ।

कुबेर हुक्का लऽ लेलक किन्तु तैयो किछु बाजल नञि।

असमंजस मे पड़ल गणेश कानए-कानए सन मुह भेल बाजल - इएह होइ कुबेर भाइ, आँइ ? ठीक छइ जाइ छी हम - नञि एबऽ फेनू।

तखन ओकरा क्षमा करैत कुबेर पुछ्लकै- कालि राति कहाँ छलै ?

प्रश्न सुनिते गणेश भभा कऽ हँसि देलक। फेर फिस-फिस कऽ बाजल — बड़ चलाक मौगी कुबेर भाइ, की जे गीत गबैए।

पिरीत केलिऐ पागल भेलिऐ सखी, आ गे सखी।

कुबेर कहलकै - दूर हो अभगला, चलित्तर खराप भेल छौ, आँइ ? किए गेल छलैं ?

गणेश प्रतिवाद करैत बाजल— चलित्तर खराप माने ? गीत सुनै मे कोन दोष छइ ?

टाटीक पाछु सँ माला भरिसक सुनै छलै, कहलकै - एक बेर फेनो कहौक तऽ माझी। फेनो कहौ गीत।

कुबेर दमसबैत कहलकै - चुप रहौ, गीत सुनै के काम नञि छइ।

कने कालक बाद चाँदपुर यात्राक बात उठलै। टाटीक अढ़ सँ हाथ पर भर दऽ घुसकैत बहरा कऽ माला लग आएलि। मुसलमान परिवार के होसेन मियाँ जे कहाँ लऽ जएतै तकर अनुमान सभ लगा चुकल छल। के जानए कोन गाम सँ ओकरा लोकनि कँ पकड़ि अनलकए होसेन मियाँ! केओ किछु सिखा देतै सोचि ओकरा लोकनि कँ नाओ सँ उतरौटा नञि देलकै। आदमी सोझ नञि अइ होसेन मियाँ! मरओ गऽ, एकरा सभ के की ? ई सभ भेल माझी, पाइ दऽ जे केओ लग्गी ठेलए कहतै तकरे हुकुम मानि पद्मा मे नाओ भसा देत। मनुक्ख होइ वा माल, नाओ मे की छइ से जनबाक दरकार नञि।

बेर मे गणेशक खोज मे उलुपी अएलै, कहलकै जे जुगल आएलए।

की खबरि जुगलक ?

सात दिनक बाद ओकर बियाह। चारि कूड़ी टाका काटर दऽ सोनाखालीक रूपसी कन्या के ओ घर अनैए।

नीके बात। आनओ। कुबेर के की! आसिनक अन्हर बिहारि मे ओकर सभ आशा-भरसे उड़िया गेलै। चारि कूड़ी टाकाक भाग ओकर रहितै तऽ आनक नाओ पर लग्गी ठेलि, माछ पकड़ि मरबे किए करैत जिनगीभरि।

उलुपी अपसोच करैत बाजलि - एहन कपार गोपीक। एक बरिस सबुर नञि रहलै, पैर तोड़ि लाङड़ भऽ गेल। कते पाप कएने छलि पूरुब जनम मे के जानए!

कुबेर कहलकै — किए जुगला छोड़ि आर लोक नञि छइ देश मे ?

उलुपी मुह चमकबैत बाजलि — के बियाहतै लेङड़ी छौंड़ी के ?

कुबेर क्रुद्ध दृष्टिञे उलुपी दिस तकलक, बाजल नञि किछुओ।

ओइदिन राति मे फेर हठात् गोपीक टाङ मे दर्द उपकलै। छौंड़ी की सहजे निस्तार नञि देतै ? भरिसक अधलाह समय मे जनम भेल छलै ओकर! भोरे-भोर जखन कुबेर आङन सँ बहार भेल, गोपी दरदे कनैत छलै। बैसल रहबाक उपाय नञि छलै कुबेर के। बेर बसात भेने तमाकूक पात आनि टाङ मे बान्हि देबाक बात कहि, बाट मे गणेश के हाक दैत उदास मने ओ नदी तीर पर हाजिर भेल।

होसेन तखन घाट पर नञि पहुँचल छलै। शम्भु ओ बगा तखने उठल छल, हाफी करैत छल। छाओनी मे मुसलमान परिवार ओहिना मुरुत जकाँ बैसल। राति मे की ओ सभ सुतबो ने कएलक ? मूड़ी सँ पैरधरि चद्दरि ओढ़ने आर एक गोटा के बैसल छइ नाओ पर! कपड़ाक पोटरी राखै लेल नाओ पर उठिते कुबेर ओकरा चिन्हि गेलै। अमिनुद्दी।

हमरे आर जरे जेबहो ने कि अमिनुद्दी भाइ ?

हँ।

बेटी कनै नञि छऽ ?

अमिनुद्दी गछलकै - हँ। कानैत रहलै।

दूरक बाट, नाओक रस्सी, लग्गी, करुआरि सभ परीक्षा कऽ कऽ देखलक कुबेर। एगो तखता लऽ कऽ भीतर कते पानि उठल छलै से नपलक। किछु जारनि, पीनी, नारिकेरक खोइआ, चाउर दालि, तेल, नून, दूटा पितरिया हाँड़ी, दू गोट लोहिया, कएकटा कसकुटक लोटकी कालिए संग्रह कऽ कऽ राखल गेल छलै - सभ वस्तुक तदारुकी केलक कुबेर। दायित्व की थोड़ छइ ओकर। एतै पैघ अभियानक जे परिचालक अइ ओ।

तदारुकी शेष कऽ कुबेर बैसि कऽ एगो बीड़ी धरओलक आ ध्यान सँ देखए लागल छाओनीक भीतरक परिवार के। केहन मनमरु जे देखाइ छइ ओकरा सभ के सकालक मद्धिम इजोत मे! ककरो मुह मे बकार नञि। सभ जेना चिन्तित हो,

डरे सकदम। धीया-पुता पर्यन्त मे जीवनक स्पन्दन नञि! गाम छोड़ि, देश छोड़ि निरुद्देश्य यात्राक विषाद ओकरा सभ के आच्छन्न कएने छइ।

कने कालक बाद कुबेर पुरुषलोक के पुछलकै — नाम की मियाँ ?

ओ नहुए सँ बाजल — रसूल।

घर कहाँ ?

मालूक चर।

बात करैत ओकरा नीक नञि लगैत छइ जानि कुबेर चुप भऽ गेल।

होसेन मियाँक अबैत-अबैत चारुकात इजोत भऽ गेल छलै। तैखन मलहटोलीक अनेको लोक घाट पर आबि हाजिर। उलुपी आएलए काँखतर कलसी दबने। घरबला के विदा कऽ ओ पानि भरि घर घुरत। लखा ओ चण्डी अबिते कुबेर सँ एगो कऽ पाइ मङने छलै, नञि भेटने दुनू मुह लटकओने ठाढ़ अइ। विदा होएबा काल बाप सँ एहन निष्ठुर व्यवहारक ओ सभ आशा नञि कएने छल। रासू सेहो आबि नाओपर उठि बैसल अइ। एहिना ओहो एक दिन सकाले मयनाद्वीपक उद्देशे रमाना भेल छल। किन्तु से बात भरिसक आइ रासू के मन नञि छइ। निर्विकार चित्ते ओ होसेन मियाँ सँ बीड़ी माङि धूमपान करैए। उपकरि कऽ बेर बेर कुबेर के सुनबैए जे ओकरा चिन्ता करबाक प्रयोजन नञि छइ, ओकर गरहाजिरी मे सभक देखभाल ई करत। कहियाधरि घुरबह माझी ? तकर कोनो ठीक नञि ? कोनो बात नञि, रासू जखन गाम अइ-घर परिवार लेल कोन चिन्ता कुबेर के ?

नाओ खुजनहि हो। कुबेर के बटखर्चाक पाइ दऽ होसेन मियाँ अपने नाओ सँ उतरि गेल। टाकाक रकम कुबेर के अवाक कऽ देलकै - की दरिया दिल होसेन मियाँ! कुबेर के ओना डरो भेलै। एतेरास टाका सम्हारि कऽ राखब, हिसाब कऽ कऽ खरचा करब - ई सभ ओते असान काज नञि। सभ सँ अस्वस्तिक बात ई जे टाका हाथ पड़िते ओ सोच मे पड़ि गेल जे तीन टाका मे सँ यदि दू आना अपना लेल बचाओल जा सकैछ तऽ एतेरास टाका मे सँ कते बचाओल जा सकैछ ? कालि सँ रहि-रहि कऽ ओ इएह बात सोचै छल - सोचै छल जे एइबेर कते टाका होसेन ओकरा हाथ कऽ देतै, बटखर्चाक टाका ककरो अनका हाथ तऽ ने दऽ देतै - तेहनो आशंका जे नञि छलै से बात नञि। आइ टाका पाबि ओ किछु कालक लेल अभिभूत भेल रहल। एते विश्वास होसेन के छइ ओकरा पर ? होसेन मियाँ सन लोको के ओ फाँकी दऽ पओलक से सोचि कने गर्व सेहो होइ छइ ओकरा अपना पर। न्, लोक ओहो सर्वशक्तिमान नञि अइ।

कुबेर ई नञि जनै छल जे तीन टाका मे दू आना सँ बेसी फाँकी देबाक साहस ओकरा नञि छइ से जानिए कऽ होसेन मियाँ ओकरा विश्वास करै छइ। पाँच गो टाका कुबेर कोनो दिन चोरी नञि कऽ पाओत। खाली साहसेक अभाव नञि, दू आना बेर जे विवेक ओकर चुप्पी सधने छलै, पाँच टाका बेर उएह गरजए लगतै।

टाका सभ डाँड़ मे खोंसि कुबेर लखा ओ चण्डी दिस तकलक। तकर बाद दू गो पैसा ओ फेकि देलक छओंड़ा सभ दिस। पैसा उठा दुनू पलेभरि मे अदृश्य भऽ गेल।

एहने समय देखल गेल हबो— डकार एगो छौंड़ी घाटदिस दौड़ल अबैए। ओकरा देखिते नाओ पर बैसल अमिनुद्दी कछमछाए लागल। होसेन कहलकै - नाओ खोल कुबेर।

शम्भु खुट्टी सँ नाओक डोड़ी खोलि ओकरा पकड़ने ठाढ़ छल, ओ फानि कऽ नाओपर चढ़ि गेल। अमिनुद्दीक बेटी जखन घाट पर एकदम सँ पानिक किनार लग आबि ठाढ़ भेलै, नाओ ता ससरि गेल छलै। बापजान-बापजान कहैत व्याकुल भेल छौड़ी तेना ने चिचिआए लगलै से बुझि पड़ै जे नदी मे कूदि पड़तै। उलुपी छोड़ि घाट पर दोसर कोनो स्त्रीगण छलैक नञि जे ओकरा पकड़ितै। उलुपी काँखतर कलसी लेने पानि लेबए आएलए, अमिनुद्दीक बेटी के ओकरा छुबाक उपाय नञि छइ। किन्तु एखन से बात विचारबाक समय नञि। उएह छौंड़ी के पँजिया कऽ रखलकै। अमिनुद्दी चिकरि-चिकरि बेटी के कहए लगलै जे ओ घुरि आओत, दू दिनक बाद ओ निश्चिते घुरि आओत।

बसात सिहकै छलै। शम्भु ओ बगा पाल उठा देलकै। तकर बाद केतुपुर घाट दूर सँ दूरतर होइत अदृश्य भऽ गेलै। कुबेर अमिनुद्दीक लग जा पुछलकै - बेटी के कहि कऽ नञि आएल रहक ?

अमिनुद्दी मूड़ी डोला देलकै।

करुआरि चलेबाक प्रयोजन नञि छलै, आस्ते-आस्ते बसातक गति बढ़लै आ पाल फुलि गेलै। कुबेर तखन निश्चिन्त भऽ बैसि अपन राजपाट ओ प्रजावर्ग दिस ताकि देखए लागल। विशाल राज- बैसबाक, सुतबाक स्थानक अभाव नञि, केबल प्रजागण सुखी नञि। माझबएसी महिला - खोज लऽ कुबेर जानि पओलक जे ओ रसूलक बहिन छइ, विदा हेबा सँ पहिनहि कानब आरम्भ कएने छलि। कते गाम ओ सभ पार कऽ आएलए किन्तु एखनो रहि रहि कऽ आँखि पोछैए।

दिन चढ़ए लागल छलै। कुबेर सकल के पनपिआइ बाँटि देलकै। अङना सँ बहार हेबाकाल मन केनादन करै छलै, एखन तते खराप नञि लगै छैइ कुबेर के। नदी सँ ओकरा बड़ सिनेह छइ। नदीक वक्ष पर भासैत चलबा सन सुख दोसर नञि। एकक बाद एक कतेरास लंच ओ स्टीमर दूनू कात दऽ ढेउ सिरजैत अगुआ जाइ छइ आ आगुक नाओ सभ पछुआ जाइछ। नदीक एकटा छोड़ि दोसर तटरेखा कतौ नञि। कतौ नदीक दोसर तीरक गाछ बाँस सभ अस्पष्ट देखाइ दै छइ। काक चील पक्षी सभ लगातार पानि मे झपट्टा मारैछ। बगुला सभ एखन एकक शिकारी – साँझखन हेंज बनाओत। स्टीमर, नाओ, भकौआ जल मे, अकास मे चिड़ै-चुनमुनी ओ मेघ भासल जाइए। तीर दिस तकने बुझि पड़छै जेना पानिक सीमा मे माटिक तीर भूमियो मंथर गतिञे चलि रहल हो पाछाँ-पाछाँ।

तैयो नदी छोड़ि सभ किछुक बहुलता। अकासक रंगीन मेघ ओ भासमान चिड़ै, दरकल तीरक शुभ्र कासफूल ओ श्यामल तरुलता, नदी वक्षपर जीवनक संचालन, ई सभ किछु यदि नहियो रहए तैयो एइ विशाल एकाभिमुखी जल स्रोत के पद्माक माझी जीवन भरि सिनेह करत। मानवी प्रियाक यौवन सभ दिन नञि रहैछ, मुदा पद्मा तऽ चिरयौवना थिक। वैचित्र्य ? तकर की प्रयोजन ? के खोजैए नव पिरथी, के चाहैए पद्माक रूप रंगक परिवर्तन, केबल भासल जएबाक अतिरिक्त मोह!

सकाल मे सनगर बसात छलै, तकर बाद बसात दिसा परिवर्तन कएलक। ताइ सँ कोनो तेहन विशेष असुविधा नञि भेलै। करूआरि चलएबा मे कोनो कष्ट नञि। नदीक स्रोत अपनहि नाओ के ठेलने लेने चलैछ। पता चलतै घुरती मे, स्रोतक विपरीत नाओ ठेलबा मे दम तऽ बहार हेतै — एखन ने आरामे आराम।

दुपहर मे नाओ लगा भानस-भातक आयोजन कएल गेल। दू गोट चूल्हि खुनि दूटा हाँड़ी मे भात चढ़ाओल गेल। लगेक एक गाम सँ आनल गेल तरकारी। अपना सभ लेल भानसक भार कुबेरक उपर छलै। पासहि भानस करैत रसूलक बहिन नसीबन के देखि कुबेर मने-मन अपसोच कएलक। सोचलक मुसलमानक रान्हल खएबा मे कोन दोष, ऊँच भूमिक गाम मे जेसभ जमीन जोति गुजर करैछ तकरा सभ मे रहौक धर्मक भेद-भाव, पद्मा नदीक सकल माझी-- तऽ एकेधर्मक। गणेश, शम्भु ओ बगा संग मे नञि रहने कुबेर असगर लेल थोड़बे भानस करए बैसैत।

खएला पीलाक बाद फेर नाओ चलल। राति नओ-दसक लगभग नदीक किनारेक सुषुप्त एक गामक लग ओइ दिनक लेल यात्रा स्थगित कएल गेल।

तेसर दिन बेरिया भेटलै पद्मा ओ मेघनाक संगम। एइठाम नदी सागरे सन पारापारहीन। साँझ मे विलम्ब नञि देखि कुबेर नाओ बन्हलक। एमहर ओ पहिनहु आएल छल तथापि नदी नीक जकाँ चिह्नल नञि छलै। साँझक बाद नाओ चलेबाक ओकरा साहस नञि भेलै।

तकर परात चाँदपुर मे नाओ लागल।

नीके ना एतेदूर आबि जेबाक आनन्द जेना कुबेरक मन मे समाइते ने छलै। आब होसेन मियाँ के आबि गेने ओ पूरा निश्चिन्त भऽ सकैए। जहाज घाट पर स्टीमर लगने यात्री लोकनिक बहरेबाक मुह लग जा ठाढ़ भेल रहैछ कुबेर। मोटा-चोटा लेने देश-विदेशक कतेको महिला-पुरुष ओकर सोझा दऽ रेल टीशन दिस चलि जाइछ। कुबेरक उत्सुक आँखि तकैए होसेन के। समस्त यात्री के उतरि गेलाक बादो किछु खन ओ ठाढ़ भेल रहैछ।

होसेन आएल तीन दिनक बाद। रातुक स्टीमर सँ। बाट हेरैत-हेरैत कुबेर अस्थिर भऽ उठल छल। होसेन के देखिते ओकर समस्त अस्थिरता आलोपित भऽ गेलै। निर्भय, निश्चिन्त, रहस्यमय, सदानन्द मानुसक संग-साहचर्ये समस्त उत्तेजना पलहि मे शमित भऽ जाइछ। कठिन कार्य साधन करबाक गर्व, आगामी कर्तव्य पालनक चिन्ता, किछुओ अवशिष्ट नञि रहैछ। से सरिपहुँ। कुबेर के नीके ना चाँदपुर नञि पहुँचनहु होसेन के कोनो फर्क नञि पड़ितै। ओ बिहुँसैत कहितै, दरिया मे नाओ डुबा अएलह कुबेर भाइ ? नीके कएलह!

होसेन नाओ पर आबि बैसल। सब केओ ओकरा घेरि लेलकै। छौनी मे बैसल नसीबन ओ रसूलक बीबी घोघतर सँ देखए लागलि। होसेन पर नजरि पड़िते आर घोघ तानि लेलक।

विहुँसैत होसेन सबहक कुशल-क्षेम पुछलकै। दाढ़ी पर हाथ फेरैत कौतुक करैत रसूलक छओ बर्खक बेटी के बीबीजान कहि संबोधित करैछ। अमिनुद्दी के बेटीक समाचार पुछला पर कहै छइ जे ओकरा ई बहाल तबियत घरक काज-उदेम करैत देखि आएलए। से ने कि दुशमन कहि होसेन के मारिते गारि देलकै।

अमिनुद्दीक आँखि डबडबा जाइ छइ। अल्ला जाने मियाँ, फिरबाक उमेद नञि सोचि मन केनादन करैए।

होसेन कहै छइ फिरै चाहने बाजऽ मियाँ, कल्हे जहाज पकड़ा देबऽ। नाखुस रहने काहे जेबऽ।

अमिनुद्दी किछु ने बजैए खाली माथ हिला दैछ।

तब काल तोरा सबहक निकाह करा दी।

अमिनुद्दी अकचकाइत बजैछ कल्हे किए ? मयनाद्वीप मे ने- दू मासक बाद!

होसेन बाजल — मयना द्वीप मे मोल्ला कहाँ मिलत। राज-बाड़ीक अजीज साहेब कहै छथ जे मयनाद्वीप मे सए आदमी आ एगो मसजिद भेने आ हिन्नू के जमीन नञि देने ओ जा कऽ रहि सकै छथ। से नञि पार लागत मियाँ। हिन्नू नञि लेने मानुस कहाँ मिलत। हिन्नू लऽ गेने मसजिद नञि बनाएब। केना बनाएब कहऽ। मुसलमान मसजिद बनाएत, हिन्नू बनाएत मन्दिर। नञि मियाँ, हमरा द्वीप मे से सब सम्भव नञि।

सब केओ अभिभूत भेल सुनैत रहैछ। होसेनक मुहे मयनाद्वीपक कथा कुबेर कहियो ने सुनने छल। आइ होसेनक मुहे सब सुनैए जे ओइ द्वीप खातिर ओकरा कते दरद छइ। नीलाम मे द्वीप किनलाक बाद ओइठाम जनपद बसेबाक ओ सपना देखैए। जिनगी मे ओकर आर कोनो दोसर उदेस नञि, कामना नञि। हजार-डेढ़ हजार लोक ओइठाम चलत-फिरत, कतौ कोनो कोन मे बिगहोभरि जमीन पड़ल नञि रहतै - मरबाक पहिने ओ एतबेटा देखि जाए चाहैछ। ओ कते धन आ समय व्यय केलकए एइ द्वीपक पाछाँ। मयनाद्वीपक भूत सबार नञि भेने आइ ओ कतेक पैघ लोक भेल रहैत। एक संग ओकर एतेरास लाभक धंधा चलि रहल छइ से सोचिते अल्लाक करुणाक परिचय पाबि माथ झुकि जाइ छइ। मयनाद्वीप मे सबठाम एकदिन निश्चित मानव जीवनक प्रवाह बहत सोचि जे काज मे होसेन हाथ दैछ, खोदाताला तकरा सफल कऽ दै छथिन। टाका-पैसा नञि रहने एहन कठिन काज केना सम्पन्न कएल पार लगितै ?

की कहै छऽ रसूल, निकाह भऽ जाइ काल ?

रसूल बाजल — हम की कहिअ मियाँ, तोरे जे मन होअ।

होसेन कहलकै — बहिन की कहै छऽ, पुछहक।

रसूल छौनी मे जा बतियाँ आएल। नसीबनक मत छइ। अमिनुद्दी गुमसुम बैसल रहैछ। मने-मन की जेना सोचैत रहैछ बन्दरगाहक आलोकमाला दिस देखैत। कुबेर चकित भेल होसेनक हरेक भाव-भंगिमा लक्ष्य करैछ। की प्रतिभा लोकक, केहन मनक जोर! जतए जते थाकल-हारल लोक पबैए, समेटि बटोरि अपन द्वीप मे बसओने जाइछ। राज्यस्थापन आ प्रजावृद्धिक ओरियाओन दिस वेश सजग दृष्टि ओकर। होसेनक उद्देशे भरिसक सएह छइ। अमिनुद्दी सन जीवन-युद्ध मे

क्षत-विक्षत, आशा-उत्साहहीन लोकक असल मे ओकरा प्रयोजन नञि। ओ सब एकर द्वीप के नव-नव नर-नारी सँ भरि देतै — ई तकरे प्रतीक्षा मे अइ।

देर राति होसेन विदा लेलक। तखन नाओ पर जल्पना-कल्पनाक अंत नञि। प्रथम विस्मय कटलाक बाद अमिनुद्दीक संग सब हास-परिहास जोड़ि देलक। मजाक करबा मे बड़ ओस्ताद अइ शम्भु। ओकर एक-एकटा बात पर नाओ मे हँसीक फुहारा उड़ए लगलै। छौनीक भीतर रमणी दुनू पर्यन्त बीच-बीच मे खिलखिला कऽ हँसैत आँचर सँ मुह झाँपए लागलि।

दोसर दिन अमिनुद्दीक संग नसीबनक निकाह भऽ गेलै। तकर बादक दिन खेती-बारीक सरंजाम, तीन-चारि बोरा आलू, एक कनस्तर सरिसोक तेल, काठक एगो बकसा भरती नून, कएकटा सस्ता बिलेती कम्बल, एक मोटा कपड़ा-लत्ता आदि अजस्र जिनिस-पत्र सँ होसेन नाओ भरि देलक।

रातिक शेष भोर होइते बाजल — नाओ खोल कुबेर भाइ।

कोन दिस जेबै मियाँ भाइ ?

होसेन बाजल — समुन्दर!

दिनभरि एही तीर धेने नाओ चललै। केतुपुरक पद्मा मे जे नाओ कुबेर के विशाल बुझाइ छलै, एखन से केराक कोसा सन लगै छइ। दोसर दिन बेर मे नोआखाली जिलाक नारिकेरक गाछ सँ भरल तीरभूमि लग नाओ बान्हल गेल। एमहर कुबेर कहियो ने आएल छल, विस्मयक संग ओ होसेन के पुछलकै, समुन्दर कि इएह छइ ? होसेन एगो नकसा बहार केलक। आङुर दऽ दऽ ओ कुबेर के मेघनाक मोहानाक द्वीप सब देखाबए लागल - सिद्धिद्वीप, विदौद्वीप, सन्दीप, हातिया प्रभृति। आर पश्चिम मे मानपुरद्वीप, दक्षिण शाबाजपुर, बन्दोरा द्वीप। आर ओ जे छोट-छोट बुनका सब देखल जाइछ, बाइस नम्बर मोटका लाइनक उपर, ओ सब भेल मानिक द्वीप समूह। चिन्हि पबैए कुबेर ? आर ओमहर पूब-पश्चिमक बाइस नम्बर लाइन आ उत्तर-दक्षिणक एकानबे नम्बर लाइन जाइ बुनका सँ एक दोसर के अतिक्रमण करैछ, ताही बुनकाक कने उत्तर-पूब मे ओ जे एगो हरियर बुनका देखल जाइछ, तकरे नाम छइ मयनाद्वीप। कुबेर जनैछ जे ओकरे नाम छइ मयनाद्वीप! आर घण्टा दसेक नाओ खेबने ओ सब नोआखालीक तीरभूमि के छोड़ि पाओत, तकर बाद हातिया दहिना राखि धन-मानिक द्वीप आ बाबनाबाद द्वीपक संयोग रेखाक संग बेयालिस डिगरी कोण बनओने पूब-दक्षिण दिस नाओ खेबने भरिदिन मे मयनाद्वीप पहुँचल जा सकैछ।

कुबेर के नीक जकाँ बुझै मे नञि अबै छइ। ओ हाँ केने रेखा ओ आखर सब दिस देखैत रहैए। बीच-बीच मे दिअर आ पानिक अन्तर तेना देखाओल गेल छइ जे ओ किछुओ ने बुझि पबैए।

होसेन मियाँ जे केहन दक्ष नाविक अइ से दिक - चिन्हहीन समुद्र-वक्ष पर ओकर नाओ परिचालन के देखि सहजे बुझल जा सकैछ। नाओक छऽ गोट माझी डाँड़ धेने रहल। दिनान्त मे रक्तिम सूर्य समुद्रक अगम जल मे डूबि गेल। पूब मे वेश दूर पर करिया बुनका सन एगो द्वीप छोड़ि केवल आकाश आ जलराशि देखाइत छलै। रातियो मे डांड़ चलओनाइ बन्न नञि। पार लगा कऽ दू-दू गोटे के दू घण्टा विश्रामक अवकाश। अपने होसेन मिनटोभरि लेल आँखि नञि मुनलक। सबके सब फिरीसान। कुबेर सोचए जे नाओ खेबै मे एहन थकनी ओकरा कहियो ने बुझाएल छलै।

सकाल मे चारुकात निविड़ कुहेस पसरल देखल गेलै।

होसेन बाजल - करुआरि छोड़ कुबेर, सिकड़ी फेकै।

तत्त बेसी डोड़ी खीचि लंगर समुद्र तल मे जा ठेकल जे कुबेर के भेलै जेना लंगर पताल पहुँचि गेल हो। कुहेस मे नाओ चलेबाक उपाय नञि। धनमानिक द्वीपक नजदीक ओ सब आबि गेल अइ। कुहेस मे देखि नञि पेबाक कारणे पासकाटि दूर निकलि गेने बिपत्तिक आशंका! एइ द्वीपक अवस्थान देखिए कऽ ठीक कएल जेतै बाबनाबाद द्वीपक संग एकर संयोग-रेखा आ तकर बाद कम्पासक सहयोगें सोझे अगुआएल जा सकैछ मयनाद्वीप दिस। दिनभरि नाओक अवस्थानक पता चलि पओतै तइ मे संदेह। अपेक्षा करऽ पड़तै रातिक। राति मे तारा सभक उगने अपन अद्‌भुत यंत्रक सहयोगे आकाश दिस देखि होसेन कहि पाओत जे कोन दिस आ कते दूर पर धनमानिकद्वीप नुकाएल छइ।

जानै छऽ मियाँ, कलबला जहाज छइ ने, कते बेग मे चलै छऽ से कि पता चलै छइ। घण्टा मे कए माइल चललै, समुद्रक कोनठाम एलै - सब हिसाब केने पता चलैए। दाढ़ी सहलबैत बजैए होसेन आ सब के अभय दान दैत कहैए, डेराइ के कोनो दरकार नञि, दस बजैत-बजैत कुहेस छटि जेतै। आज-कल रोज बिहने कुहासा रहै छइ। एकरा कोन कुहासा कहै छइ माझी ?

बैसल-बैसल होसेन खीसा कहैछ आ सब केओ ध्यान सँ सुनैछ। लगैछ जेना केतुपुरक कोनो मड़ैआ मे होसेनक अड्डा बैसल हो। एक बेर एहने कुहेस मे ओ समुद्र मे भौतिया गेल छल। तीन दिनधरि लंगर फेकने पानि-बीच पड़ल

रहल। अन्त मे पिबाक पानि शेष भऽ गेने पियासे कण्ठ सुखा कऽ बैसि गेल छलै। तकर बादे होसेन कम्पास किनलकए, तारा देखि नाओक अवस्थान निर्णय करबाक यंत्र, चटगाँव मे। होसेन जखन जहाज पर काज करैत छल ताही समय एक साहेब कप्तान लग ओ एइ सब यंत्रक उपयोग सिखलक। एखन होसेन बड़का-बड़का जहाज चला सगर संसार घुरि आबि सकैए।

संसार ओ कि नञि घुरल अइ। ह, से अबस्से कहबाक जोग खीसा। बीस बर्खक वयस मे ओ घर सँ पड़ाएल छल, तकर बाद अदहा जिनगी तऽ ओ देश-विदेश घुरिए कऽ बितओने अइ - नदी ओ सागर मे।

बेश दिन चढ़ला पर आस्ते-आस्ते कुहेस साफ भेलै। लंगर उठाओल गेल। घण्टा दू-एक बाद दूर मे देखल गेलै धनमानिक द्वीप। कम्पास सामने राखि होसेन पतबार धेलक। परात भेने सबेर सकाल मयनाद्वीप पहुँचि ओ सब लंगर फेकलक।

इएह थिक मयनाद्वीप। पाँच-छऽ बर्ख सँ जाइ रहस्य निकेतनक कथा ओ सब सुनैत आएल अइ। कुबेर तऽ जेना एके नजरि मे समस्त मयनाद्वीप के देखि लेबए चाहैछ। द्वीपक किछु अंश अण्डाकार, किछु त्रिकोण। द्वीपक दीर्घतम परिसर प्रायः एगारह मील - होसेन अपने नापि कऽ देखने अइ। जाइठाम नाओ भिड़ल छलै, तेमहर कनेटा अंश साफ कऽ क बस्ती बसाओल गेल छइ। खेती होइ छइ बाकी सगरो जंगल। पश्चिमभर असंख्य नारिकेरक गाछ - समस्त द्वीप मे नञि छिड़िया गाछ सब एकेठाम घोदमेद भेल माथ उठओने अइ किए से पता ने।

जमीन अत्यंत नीच, एते नीच जे मन भेने जे कोनो दिन समुद्र सहजहि समस्त द्वीप के ग्रास कऽ सकैछ। द्वीपक माझ मे मीलभरि नाम एगो नोना पानिक छाड़नि। समुद्रो सँ जेना गँहीर, नहरि काटि मिला देने समुद्रक पानि आबि भरि जेतै। छाड़निक कतबहि मे कनेटा धान चासक जमीन तैयार कएल गेल छइ। अद्‌भुत फसिल होइ छइ छाड़नि मे आ तकर पास-पड़ोसक जंगल मे असंख्य साँप छइ, किन्तु जन्तु -जानवर कोनो नञि। रासू जे बाघ-सिंहक गप केने छल से सब मनगढ़न्त।

होसेन मियाँक उपनिवेशक लोकसंख्या सए सँ थोड़ नञि, किन्तु तकर तीन भागे छोट-छोट छओंड़ा-छौंड़ी, जकरा सब मे अधिकांश एही द्वीप मे जनमल अइ। मलेरिया ओ साँपक संग युद्ध मे एखनो होसेन जय-लाभ नञि कऽ सकलए, अविरल संग्राम चलि रहल छइ जंगलक संग। एइठाम बड़ बेसी अन्न उपजाओल नञि जाइ छइ, जिनगीक अनेको प्रयोजनीय वस्तुक लेल सागर-पथे यात्रा करए पड़ैत छइ सभ्य जगतक। अविराम खटनी एइठाम, नाना असुविधा एइठाम, जीवन

एतए निर्मम ओ नीरव। रासू जकाँ कतेको तऽ पड़ा गेल। होसेनक पाँच बर्खक प्रयासक बावजूदो तऽ तीस सँ बेसी परिवार अपन नीड़ नञि बना सकल एइ द्वीप मे। अमिनुद्दी आ रसूल के धेने आब द्वीप मे गृहस्थ परिवारक संख्या होइछ बत्तीस मात्र।

कतेक कठिन काज मे जे होसेन मियाँ आत्मनियोग केने अइ, केहन सीमाहीन जे ओकर धैर्य ओ अध्यवसाय से कुबेर आब नीक जकाँ बुझैए। एइ गँहीर जल-जंगले भरल मनुक्खक बासक अनुपयुक्त द्वीप, जकर नोनामाटि मे धान छोड़ि आन कोनो पसिल नञि होइछ, सजमनि-कदीमा फड़ैछ चोकटल कठुआएल खीरासन छोट-छोट, तइठाम एइ मुठ्ठीभरि नर-नारीक बस्ती बसेनाइओ होसेन मियाँ छोड़ि आनक बसक बात नञि। सन्दीप, हातिया, धनमानिक, बाब्लाबाद आदि जनबहुल द्वीपक गप कुबेर सुनने अइ। मयनाद्वीप यदि मनुक्खक बास जोग रहितै तऽ ओही सब द्वीप जकाँ कहिया ने एतौ गाम बसल रहितै। ई केहन कुत्सित एगो द्वीप होसेन बीछि लेलक। भऽ सकैछ सस्ता मे भेटि गेल होइ, तें। स्वास्थ्यकर, उर्वर द्वीप कीनि जमिदारी स्थापनाक टाका होसेन कहाँ पबैत ? तेहन जनहीन द्वीपे वा कतऽ छइ ?

द्वीप देखि अमिनुद्दी आ रसूल बड़ उदास भेल। ओकरा लोकनिक मुहे फिरि जेबाक बात सेहो दू-एक बेर सुनल गेलै। ओना होसेनक सामने ओ सब किछु ने बजैछ। बजलो ने जा सकै छइ। कते उपकार जे होसेन ओकरा लोकनिक केने हेतै तकर हिसाब नञि। अमिनुद्दी तते कर्ज लेने अइ जे कहियो सोध भेनिहार नञि। ततबे किए, बीबीए कि फेर ओकरा कपार मे जुटितै जँ होसेन नञि दितै! नसीबन सन बीबी! रसूल के जहलक मुहथरि लग सँ घुरा अनने अइ होसेन, गाम फिरने के जानए जे फेर जहले जाए पड़ै। प्रतिदान मे ओकरा लोकनि सँ तऽ आर किछुओ ने चाहैछ होसेन। खाली ओ सब एइठाम बास करओ, सपना साकार होउक होसेनक। एही बीच ओकरा सब लेल घर बन्हनाइ आरम्भ भेल अइ, दया कऽ कऽ ओइघर मे ओ सब बास करओ, होसेन ताही मे कृतार्थ। जंगल साफ कऽ कऽ जते जमीन ओ सब खेतीक उपयुक्त बना पाओत सब ओकरे लोकनिक सम्पत्ति हेतै। मालगुजारी वा चासक फसिल, कोनो किछु मे होसेन दाबी नञि करतै। अपन-अपन जीविका जते दिन अर्जन नञि कऽ पाओत ओ लोकनि, तते दिन सेहो जोगार करत होसेन। घर ओ घरनी, अन्न-वस्त्र, भूमि ओ तकर मालिकाना - सब तऽ पओलह, आब खाली मेहनति करबऽ आ धीया-पुता जनमेबह, एतबो नञि पार लगतह ?

होसेन लग तें केओ फिरि जेबाक बात ठोर पर नञि लबैछ। जे फिरि जाइछ, से जाइए चोर जकाँ पड़ा कऽ।

होसेन तकरो सब के माफ कऽ दैछ। भेंट भेने रासू जकाँ जंगल साफ करैक मजूरी दै छइ। होसेनक कोनो जोर-जबरदस्ती नञि, अन्याय ओ ककरो प्रति नञि करैछ। दण्ड ओ तकरे सब के दै छइ जे सब भीषण ओ मर्मान्तिक शत्रुता करैछ, अकारणे क्षति करए चाहैछ, विघ्न उपस्थित करए चाहैछ होसेनक सपना साकार होएबाक बाट मे।

किछु दिन होसेन द्वीप देखैत आ द्वीपक लोक सभक संग भाव-विनिमय करैत बिता देलक। खेत सभक धान कटा गेल छइ। कोलाकोली सरिसो, बदाम आ मटर बाओग कएल गेल छइ। मुरै, पालक, कोबी आदि गत बर्ख नञि बाँचल छलै। एइ साल कएक बिघा जमीन मे एक प्रकारक नव खाद दऽ परीक्षाक लेल थोड़-बहुत चास भेलैए, की हेतै से कहल नञि जा सकैछ।

आर भीतर दिस द्वीपक माटि रबी-राइ चासक उपयुक्त छइ वा नञि से देखबा लेल थोड़े जगह परिष्कार कएल जाइ छइ। सबेर सकाल कोदारि कुड़हरि लेने एक दल लोक जंगल मे आधकोस पएरे जाइछ, निर्वाचित स्थानक गाछ-पात काटि साफ करैछ, शावल सँ कोरि गाछक सीर उपाड़ि फेकैछ — तकर बाद, भरि दिन मच्छर ओ कीड़ा-मकोड़ा सँ कटबा, देह-हाथ फुला साँझखन घुरि अबैछ। सृष्टिएक दिन सँ एहि द्वीपक जे कुमारि वनभूमि तकर छातीक एक मुठ्ठी माउस जेना कपचि लेल गेल होइ, चारुकात निविड़ वनक मझ परिष्कृत जगह तेहने वीभत्स देखाइछ।

कए दिन पहिने की ने एकटा गोलमाल भेल छलै द्वीप मे। होसेनक अनुपस्थिति मे मारितेरास लोक जमा भेल घोंघाउज करैत। अस्पष्ट दू-एकटा बात कुबेरक कान मे पड़लै। बिपिन नामक साठि बर्खक एक बृद्ध के होसेन एइठामक माइनजन बनओने छइ। ओकरे घेरि बेसी घोंघाउज होइ छलै। कुबेर के लग जाइते किन्तु सब चुपचाप भऽ गेलै। तकर बाद एक दिन साँझक समय, काज-कर्म शेष कऽ कऽ सब जखन घुरल, होसेन तखन अपन स्वतंत्र कुटीरक ओसारा पर बैसि खुसी-खुसी हुक्का पिबैत छल, बिपिन भण्डा फोड़लक। बाजल-नालिस अइ एकटा।

नालिस! होसेनक मुह गम्भीर भऽ गेलै।

बिपिन धीरे-धीरे सब बात खोलि कऽ कहलकै। जनी-जाति संबधित

लज्जास्पद घटना। मात्र छऽ मास भेलै एनायेत एइ द्वीप मे आएलए, एतबे दिन मे ओ सब के तंग कऽ कऽ छोड़ि देने छइ। पहिने-पहिने जकरा तकरा संग ओकरा कलह बझितै। एक दिन तऽ ओ निरीह दुर्बल गगन घोष के मारि अधमरु बना देने छलै - तखन सब मिलि खुब फज्झति केने छलै। तकर बाद सँ ओ वेश संच-मंच छल तें होसेन के नञि कहल गेलै। किन्तु कएदिन पहिने ओ जघन्य अपराध कऽ बैसलए। बसीर मियाँक बहु बचहन छइ। किछु दिन सँ एनायेत ने कि ओकरा तंग करै छलै मुदा डरे ओ ककरो किछु कहै नञि। तकर बाद एकदिन दुपहरिया मे सब केओ जखन काज मे बाहर गेल छल, एनायेत बसीरक घर ढुकि गेलै। बसीरक बहुक चिचिएनाइ सुनि बगलक अकबरक बीबी दौड़लै तें ओइ दिन बेचारी बाँचि गेल।

होसेन बाजल - हरामीक बच्चा के काटि दरिया मे काहे ने फेंक देलऽ ?

बिपिन स्वीकारलक जे से ओकरा सब बूते नञि पार लगलै, तखन मार-पीट खूब कएल गेलै। कनेकाल चुप रहलाक बाद सकल के बजा आनै लेल कहलकै होसेन, एनायतो जइ सँ आबए। कनिएँ काल मे सबके सब हाजिर। कोनो-कोनो महिला सेहो कौतुहलक संग आबि कने हटि कऽ ठाढ़। विचार हेतै एनायेतक! ओकरा छुरी-फाँसी देतै आकि दरिया मे फेकि देतै होसेन, के जानए।

एनायेतक वयस बेसी नञि छइ। बलिष्ट युवक अइ। मयनाद्वीप मे एहन आर दोसर नञि। तेजीक संग आबि ओ होसेनक सामने जा कऽ बैसल, निर्भय निश्चिन्त। होसेन एकरा ओकरा सँ दू-एकटा बात पुछलकै आ रुष्ट नजरिए एनायेत दिस देखए लागल। ओ बेर-बेर बाजए लागल की अपसोस, की अपसोस!

तकर बाद ओ एनायेत सँ कैफियत तलब कएलक।

एनायेत कहलकै — जबरदस्ती नञि करलिऐ मियाँ।

होसेन पुछलकै — जबरदस्ती नञि केलही, बसीरक घर काहे ढुकलही तों ? जनानी दिस नजर काहे देबही ?

हमरा देख ओ एक दिन हँसल रहलै।

अरे तों आदमी छें ने बैल ? भाइ समझ हँसल होतौ। देश-गाँ छोड़ि हियाँ द्वीप मे रहै छें, हियाँ भाइ-बहन ने की जनानी-मरद! काम ठीक नञि कएले मियाँ। तीन दिन बान्ह रखबौ तोरा, खाना-पीना बन्न।

होसेन मियाँक हुकुम होइते सब मिलि ओकरा ओसाराक खुट्टा सँ बान्हि

देलकै। ढीले कऽ बन्हलकै। होसेन मियाँक हुकुम सँ कसगर एइ द्वीप मे कोनो रस्सीक बान्ह नञि। बन्हन खोलि पड़ेबाक हिम्मत एनायेत के नञि हेतै। पड़ा कऽ जाएत कहाँ।

होसेनक कुटीरक बगले मे एगो घर कुबेर आ ओकर संगी सब के रहै लेल देल गेल छलै। ओइ दिन वेश राति बितला पर बाहर गेने इजोरिया मे कुबेर देखलक जे होसेनक ओसारा पर बन्दी एनायेत थारी मे भात-खाइए आ लग मे कोनो जनानी बैसल छइ। पैर दबने चुपचाप ओ होसेनक घरक पछुआर मे गेल आ खिड़की दऽ आस्ते सँ आवाज दऽ ओकरा उठओलक।

सब सुनि होसेन हफिआइत बाजल — हँ, जो सुतै गऽ कुबेर। आर सुन, अन्हरिया रात, की देखले, की सुनले से मने मे राखी, बाजै के काम की ?

बाजि होसेन करोट फेरि सुति रहल।

एते पैघ काण्ड के एना अनठा होसेनक करोट फेरि सुति रहब आइ सरिपहुँ कुबेर के छगुन्ता मे धऽ देलकै। बात ओ बुझि पओलक द्वीप छोड़ि घुरबाक दिन। बुढ़बा बसीर आबि नाओ पर उठि बैसल मुदा ओकर कमसीन बीबी रहलै द्वीपे मे। बसीर एइ द्वीपक बसिन्दा अइ। बर्ख पाँचेक सँ ओ एइ द्वीप मे सस्त्रीक रहि रहल अइ। धीया-पुता नञि भेलै बसीर के - एकोटा ने। पाँच बर्ख मे जे एकोटा लोक-संख्या नञि बढ़ा सकल द्वीपक, किछु बर्ख मे कबर मे जाएत, एहन लोकक कोन प्रयोजन होसेन के ? बसीर आब अपन बीबी के तलाक देत। तकर बाद यथा समय एनायेतक संग ओकर निकाह हेतै। एनायेत के आर एगो बीबी छइ जे शीघ्रे होसेन के उपहार देतै एगो नव टटका मनुक्ख, मयनाद्वीपक एक टुक भविष्य। तैयो आर एगो बीबी होउक एनायेत के, सार्थक होउक दुनूक अनुचित असामाजिक प्रेम। पाँच बर्ख धरि जे रमणी जननी नञि बनि सकल, कोर भरौ तकर सन्तान सँ, लोक बढ़ौक होसेनक साम्राज्य मे।

गाम छोड़लाक तीन सप्ताहक पश्चात कुबेर आ गणेश फिरि आएल। चाँदपुर मे ओकरा सबके उतारि होसेन अपने नाओ लऽ कऽ कतौ गेल। होसेनक मुसलमान माझी सब चाँदपुर मे ओकर बाट हेरै छलै।

एही बीच गोपी के लऽ कऽ अनेक काण्ड भऽ गेलै। कुबेर जाइ दिन गेल छल ताही दिन गोपीक पैर भयानक भावें फुलि गेलै। घर मे पुरुष-पात नञि, असमंजस मे माला कनैत-कनैत अस्थिर भेल छल। बाद मे रासू आबि सब व्यवस्था केलकै। गोपीक लेल जे रासू कते की कएलक से सए मुहे बाजिओ कऽ

माला शेष नञि कऽ पाओत। ताही दिन ओ गोपी के अमिनबाड़ी असपताल लऽ गेलै, रातिए मे गोपीक आपरेशन भेलै। एखनो ओ असपताले मे अइ। रासू प्राय: ओकरा देखै लेल जाइ छइ। डाकडर भरोस देलकैए। हाड़ तोड़ि ओकर नसक ओझरी छोड़ा ठेहुन ठीक कऽ देल गेलैए। कने-मने झखेनहु आब ओ चलि-फिरि पाओत।

कुबेरक फिरबाक खबरि पाबि रासू आएल। कुबेरक मुहे दू-एकटा कृतज्ञताक कथा सुनिते ओ गलि जाइछ। माथ कुड़िअबैत ओ कएक बेर सेप घोंटलक आर फेर हठात् बाजि उठल – गोपी तों हमरा देबऽ माझी ?

कुबेर गम्भीर भऽ जाइछ। ओ कहै छइ जे एते जल्दीबाजी किए। एखन तऽ गोपी असपताल मे पड़ल अइ, पहिने घुरि तऽ आबओ। रासू तैयो जिद करै छइ। ओकर पैर ठीक भऽ जेबाक बात सुनलाक बादे सँ ओ उताहुल भेल अइ। एखने कुबेर सँ गछा नञि लेने कोन ठीक जे ओकर मन बदलि जाइ। गोपीक पंगुता छुटनाइ जखन निस्तुकी नञि छलै तखने पकिया बात नञि कऽ लेबाक अनुताप होइ छइ रासू के।

अन्त मे कुबेर कहैछ, बिहान कहबौ रासू।

राति मे ओ मालाक संग परामर्श कएलक। ठीक भेलै जे रासू जँ डेढ़ कूड़ी टाका नगद आ दू कूड़ी टाकाक गहना दै गोपी के तखने ई बियाह भऽ सकै छइ। तइ सँ कम मे नञि हेतै।

दोसर दिन आएल रासू। कुबेरक माँग सुनि ओ झमा कऽ खसल। बाजल, एते टाका कहाँ सँ आनब ?

से कुबेर की जनैछ। एतबो टाका यदि ओ बियाह मे खर्च नञि कऽ पाओत तऽ तकर बाद बहु के की खुआएत ?

रासू मूड़ी झुकओने रहैछ। माला ओकरा मुह दिस देखि जेना ममता-बोध करैछ। कुबेर के इसारा सँ लग बजा फुसुर-फुसुर कऽ टाकाक परिमाण किछु कमा दै लेल कहै छइ। किन्तु कुबेर स्त्रीक परामर्श पर चलनिहार नञि। ओ अविचलित गम्भीर मुह बनओने बैसल रहैए, टाट मे ओङठल आँखि मुनने जेना निन्न पड़ि गेल हो।

बड़ीकाल बाद रासू बाजल – अच्छा देबऽ।

बाजि कऽ ओ उठि जाए चाहैए किन्तु तखन कुबेर ओकरा खातिर कऽ क बैसबैछ। साग्रह मयना द्वीपक खीसा शुरू कऽ दैछ। रासू के ने कोनो उत्सुकता

छइ ने ओ किछु बजैए। की भऽ गेलै रासू के! ओकर एते दिनक सपना साकार होमए जा रहल छइ तैयो ओ आह्लादित किए ने अइ! चिलम साजि कने दम लगा कुबेर हुक्का कात मे राखि भीतर चल गेल। कए दिन पहिने हुक्का पिबैकाल दुनू छीना-झपटी कएने अइ, किन्तु एखन तऽ रासू ओकर भावी जमाए, ओकरा हाथ कऽ हुक्का नञि देल जा सकैछ।

दिन तीनेक बाद कुबेर अमिनबाड़ी जा गोपी के देखि आएल। असपतालक खेनाइ खा आ बिछान पर पड़ल-पड़ल ओकर रोहानी पलटि गेलैए। परिष्कार-परिच्छन्न रहबाक कारणे रंग सेहो निखरलैए। दिन सातेक बाद ओ असपताल सँ छुट्टी पाओत।

समयक अनुसार ठण्ढा पड़ए लगलै। मलहटोलीक बुढ़-बच्चाक देहक चाम रूक्ख भऽ पपड़िआए लगलै। मालाक चाम किन्तु चिरदिने मोलाएम छइ, केहनो ठण्ढा पड़ौक, ओकर देह कहियो ने फटै छइ। भरिसक कपिलोक नञि फटैत हेतै। जतबा तेल ओ खर्च करैए देहक पाछाँ। खेतक पलाँकी सागक पात सब मे जे सहज सरल लावण्य फुटल छइ, भऽ सकैछ कपिलाक देह मे तकर अभाव नञि होइ। ओहो तऽ मालाएक बहिन ने। माला सँ हजार गुन बेसी सओखीन।

काज उदेम नञि रहने कुबेर दूरे-दरबज्जे टहलान दए समय कटैछ। पीतम माझी दुखित पड़ल अइ। बुढ़ाड़ी मे ओकर सेवा-टहल केनिहार केओ ने, जुगी तें बापलग आबि गेल अइ। पीतम बेटीक सेवा तऽ ग्रहण करैछ किन्तु दिन-राति ओकरा गारि-सराप दैते रहैछ, किछु उठा नञि रखैछ। जुगीक हाथक पानि पिबि चिरदिन नरक मे सड़बाक सेहन्ता जे ओकरा नञि छइ तकरे घोषणा सदतिकाल करैत-करैत जखन कण्ठ सुखा जाइ छइ तऽ फेर जुगीएक हाथे देल पानि पिबि कण्ठ भिजबैछ। पीतम के बहुत पाइ-कौड़ी छइ, बजैत रहैए जे ओही टाका-कौड़ीक लोभे ने कि जुगी ओकर सेवा-टहल करै लेल अएलैए, किन्तु तकरा ई एगो फुटल-कौड़ियो ने देतै। जतबा जे ओकरा छइ, सब ओ कालिए बाबू लोकनिक जिम्मा लगा देत। ओकर पड़ौआ बेटा घुरि अएने उएह सब पाओत। पीतमक बेटा जे दिन ने घुरलै।

रासू एक दिन पीतम के देखै लेल आएल छलै, मुदा पीतम ओकरा दुर-दुरा कऽ बैला देलकै। राता-राती खून कऽ कऽ मयना द्वीपक फिरता डकैत जे ओकर सर्वस्व लुटि लेतै, तेहन बोका नञि अइ पीतम। रासू लग अएने ओकर टाङ तोड़ि देतै। अपन सुखलाहा दुनू हाथ उठेबा मे पीतम के कष्ट होइ छइ, रासूक टाङ ओ केना तोड़ि पाओत से उएह जानए!

कुबेर लग रासू अपन मनोवेदना व्यक्त करैछ। पीतमक ओ एकमात्र भागिन अइ, तकरा पीतम तेजि देने छइ। कते दुख-कष्ट सहि ओ मयनाद्वीप सऽ घुरि आएल, दू दिन घर मे रहौ तक नञि देलकै, निर्विकार बाट पर बैला देलकै। एखन मरैक समय लग रहि ओकर सेवा-टहल करै लेल व्याकुल अइ रासू, ताहू मे बुढ़बा ओकरा संदेह करतै, घर ढुकए नञि देतै! ततबे नञि, पीतमक ओ अपन भागिन छइ, बुढ़बाक टाका पैसा, आङन घरक एक अंश की ओकरा भेटनाइ उचित नञि। सब किछु ककरा दऽ जेतै बुढ़बा ?

कुबेर बाजल, बेटा लेल राखि जाएत — बजैए।

रासू बजैछ, बेटा! से कि जीबै छइ ? कहिया ने गंगाक पेट मे समा गेलै।

बैसल-बैसल दिन कटैए कुबेर। गामक जुआन-जहान सब जीविका अर्जन लेल बाहर चल जाइछ, गाममे रहि जाइए बच्चा, बुढ़ आ स्त्रीगणक दल। कुबेर पाकल मुहक हा-हुताश आ नरम कण्ठक कोलाहल सुनैत रहैछ। भेंट होइते हीरू मलाह अनन्त बाबूक नाम लऽ कुबेर के परिहास करै छइ। कोनो दिन कुबेर तमसाइए, कोनो दिन ओकर मन दुखी भऽ जाइ छइ। आइ कते दिन सँ अनन्त बाबू गाम मे नञि छइ। कलकतिया बाबू, मलहटोली मे रातुक स्कूल खोलबाक नामे दू-चारि दिन कुबेरक आङन आएल छलथिन – आइयो से बात मन रखबाक कोन प्रयोजन? केबल कुबेरेक आङन तऽ नञि! कोन बतहपन माझिल बाबू के धेने छलनि से नञि कहि। मलहटोलीक लोक सभक संग अंतरंग होएबा लेल समय नञि असमय नञि, आबि हाजिर होइतथि। अङने-अङने घुरि देशक नामे की सब दुर्बोध्य बात सब बजितथि! कते दिन तऽ निर्जन दुपहरिया मे कते आङन सँ बहराइत कुबेर अपने हुनका देखने अइ। तखन केबल ओकर पंगु असहाय स्त्रीटाक संग हुनक नाम किएक सनैए हीरू।

हीरू के कुबेर मारतै एक दिन। बेदम कऽ कऽ मारतै। दुरे -दरबज्जे घुमि समय बितबैए कुबेर, मन नञि लगै छइ। जगा माझीक घरबालीक जेना कपिलाक चलनाइ के नकल करैए। भिजल कपड़ा पहिरने बाट चलैत-चलैत चौंकि पाछाँ कुबेर के देखि ओकरा नजरि मे संदेहक सोह फुटबाक पहिने अन्यमनस्कता नञि भंग होइ छइ कुबेरक। अपरतिभ होमए पड़ैत छइ ओकरा। नकुलक घरक सोझा बैरक गाछ तर एक दिन कपिला के काँट गड़ल छलै। झुठेक काँट। ओह ! करैत कुबेर के भरिपाँज कऽ पकड़बाक बहन्ना कपिलाक। केतुपुरक दुर्गा-दर्शन कऽ घुरबाक समय जे की छलनामयी बनि गेल छलि कपिला।

गोपी के आनैक लाथे एक दिन कुबेर भोरे-भोरे गाम सँ बहार भेल। श्यामादासक घर आकुर-टाकुर गाम पैदल चलने बारह-तेरह मीलक बाट। आरि-धुर धेने टेढ़-मेढ़ बाट चलैत कते बेर कुबेर सोचलक जे घुरि जाए। आकुर-टाकुर पहुँचि एगो पोखरि मे हाथ-मुह धोइ लेल उतरैत घाट पर सँ सोझे अमिनबाड़ी दिस चलनाइ स्थिर केलक कतेबेर तकर ठीक-ठेकान नञि। तैयो अन्तधरि श्यामादासक दरबजे पर जा शेष भेलै ओकर बाट।

श्यामादास तखन खेत गेल छल, किन्तु ओकर मा-बहिन आङन-घर भरने छलै। कपिला एइठाम घोघवाली बहुरिया। श्यामादासक मा पाहुन के आदर यत्न सँ बैसओलक। कुशल-क्षेमक संगहि एमहर अएबाक कारण जिज्ञासा केलकै। श्यामादासक घर आङन देखि कुबेर मने-मन दुखी भऽ उठल छल, नीक जकाँ जवाब नञि दऽ पाओलक। चारिटा बड़का-बड़का घर श्यामादासक, चारुकात नीपल-पोतल चकचक करैत। घर मे हुलकी देने कते जिनिस देखाइ पड़ै छइ - काठक सन्दूक, बेंतक पौती-पेटार, बासन-कुसन। ओसाराक एक कात धानक ढक, दोसर कात बड़दघरा। लक्ष्मीवान घृहस्थक घर-संसार, कुबेरक टुटली मड़ैयाक तुलना मे बैकुण्ठपुरी। छाती मे धक दऽ लगै छइ कुबेर के। एही बैकुण्ठपुरीक लछमी ओकर टुटली मड़ैया मे साग-भात खा किछु दिन कटा आएल छलै से सोचि आइयो अकास-कुसुमक रचना करैछ ओ। ओकरा होइ छइ जे लछमीक मन आइयो पड़ल छइ केतुपुरक ओकर ओही टुटली मड़ैया मे। केहन बोका अइ कुबेर।

कपिला पुछलकै, की हाल-चाल माझी ? की सोचि एला ? धीया-पुता आर नीके नाहित हइ ने ?

डोरिया साड़ी पहिरने अइ कपिला। केशक तेल सँ कपार चपचप करै छइ। देह जेना उछलल जाइत होइ कपिलाक, बरिसकालक पद्मा जकाँ। कते खुसी लगैए कपिला। अपन मैल-कुचैल कपड़ा-लत्ता, चद्दरि दिस देखि लाजे दौड़ि पड़ा जेबाक मन होइ छइ कुबेर के।

कनेकाल एमहर-ओमहरक गप-शप कऽ कपिला चलि गेल भानस-भात करै लेल। आर किछु खन बतिआ ओकर सासुओ प्रस्थान केलक। आङनक दू-एकटा नेना-भुटका कुबेर लग घुरैत-फिरैत रहल - फेर ओहो सब चल जाइछ। कुबेर असगरे बैसल रहैछ। बोका, अपरोजक, अकाजक कुबेर। मयना द्वीपक एनायेत ओ बसीरक बात मन पड़ै छइ कुबेर के। मन पड़ै छइ इजोरिया राति मे होसेनक कुटीरक ओसारा पर बन्दी एनायेतक भात खाएब। जकरा कारण द्वीपक लोक सभक हाथें कतेको बेर से मारि खेने अइ, तकरे आनल भात। होसेनक

कृपा सँ कए दिन बाद ओकरा दुनूक मिलनो हेतै – प्रकाश्य, सामाजिक, आइन संगत मिलन। केहन आश्चर्य भाग्य लेने एक-एकटा लोक दुनियाँ मे जन्म लैछ। बैसल बाटक ठेही सँ देह भसिआइ छइ कुबेरक। आधा सुतल आधा जागल अवस्था मे ओ सपनाइत रहैछ, रचना करैत रहैछ अकास-कुसुमक। सर्वशक्तिमान होसेन मियाँ के ओ जेना कहने हो जे कपिला के पओने सपरिवार ओ मयनाद्वीप जा बास करत। गणेश के सेहो ओ राजी कराओत जेबाक लेल। होसेन अपन चिरंतन हँसी हँसैत जेना कहैत होइ – सेहे करबै कुबेर भाइ, ला देबऽ कपिला के। तकर बाद एक दिन –

कपिला आबि पुछै छइ, रहबऽ ने की माझी ?

कुबेर कहैछ, न्।

— दू दिन रहि ने जाहो। एलहो किए से तऽ कहबे ने केलहो।

सुबचनीक हाट जेबै सोचि निकलल रहिऐ कपिला। तें सोचल जे तोरा देखने जाइ।

कपिला बिहुँसैत बजैछ – सुबचनीक हाट की आइ लगतै ?

कुबेर विवर्ण भऽ बजैछ, नञि तऽ ?

— हटिया पर जा के सुति रहऽ गऽ माझी, बिहान हाट कऽ क घरे जइह' – कहि कपिला भनसा घर चल जाइछ। कुबेर उठि अङना मे अबैछ। सजमनिक मचान लग जा ओ ठाढ़ होइए। लाजे ओकर मुह बुझाइ छइ जेना मचान पर औन्हल करिया कोहाक छाँह पड़ैत होइ। कपिला सँ ओ केना सकत! पद्मानदीक बोका माझी से। कपिला ओकरा एक हाट पर किनि दोसर हाट पर बेचि देने छइ, अनेक दिन पहिने।

दुपहरिया मे आङन घुरला पर श्यामादास के कुबेर के देखि खुसी भेलै। दुनू गोटे पोखरि सँ नहा आबि संगे खाइ लेल बैसल। मेहमान आएल छइ तें कपिला आइ रंग-विरंगक चीज बनओने अइ। किन्तु खेनाइ मे कुबेरक रूचि नञि छलै। ओकर एना हठात् अएबाक कारण श्यामादास सेहो जानए चाहलकै। एइबेर कुबेर एक आश्चर्य फूसिक रचना केलक। होसेन मियाँक मयनाद्वीप मे जा बास करए चाहत एहन केओ जँ श्यामादास के बुझल होइ। ओइठाम बास करै लेल बहुत रास सुबिधा छइ। आङन-घर, अन्न-वस्त्र, जमीन-सब एखन मङनीए भेटतै। दस-बीस बर्ख बाद द्वीप मे बस्तीक बिस्तार भेने नामक लेल किछु मालगुजारी बान्हल जेतै जमीनक, जमीनक अधिकार वंशानुक्र मे रहतैक। श्यामादास जँ किछु

लोक के एइ सुवर्ण सुयोगक मादे कहै आ केओ जँ राजी होइ जेबा लेल तऽ कुबेर के खबरि कऽ दै, बड़ उपकार हेतै।

श्यामादास अवाक होइत बाजल — चाह बगानक ठीका लेलहो ने कि माझी भाइ ?

चाह बगान! केहन चाह बगान! चलओ ने श्यामादास, देखि आओत मयनाद्वीप। आइए चलओ।

तों काहे ने जाइ छहो मयनाद्वीप ? श्यामादास पुछलकै। कुबेर थतमताइत बाजल — जेबै। हमहूँ जेबै।

आइ रहि जेबा लेल कुबेर के बड़ आग्रह केलकै श्यामादास, किन्तु कुबेर के ने कि रहबाक उपाय नञि। गामे-गाम घुरि ओकरा मयनाद्वीपक वार्ता प्रचार करए पड़तै।

सुबचनीक हाटक बीचे दऽ अमिनबाड़ी जेबाक बाट। हाटक शून्य छावनी सब खाँ-खाँ करैत छलै, बाट कातक स्थायी दोकान ओ आढ़त सब मात्र खुजल छलै। एगो खएबाक दोकानक सामनेक लड़बड़ बेंच पर कुबेर बैसि रहल। बड़ जाड़ होइ छलै कुबेर के, देह गमगम करै छलै आ आँखि सेहो दुखाइ छलै। हुड़मुड़ केने जे बोखार आबि रहलैए तकर बहुत पहिने ओकरा अन्दाज लागल छलै। बेंच के रौद दिस घीचि चद्दरि ओढ़ि ओ सुति रहल। दोकानक छाँह कुबेर के अतिक्रमण करैत हाटक छज्जा सब पर उठि गेलै। कुबेर ओहिना पड़ल रहल बेंच पर। अन्त मे एगो हलुआइ ओकरा हाक देब आरम्भ कऽ देलकै।

बोखारक आहटि पाबिओ भोज खेने छल, अवस्था बड़ सोचनीय भऽ गेल छइ कुबेरक। कपिलाक स्वामी श्यामादासक अवस्था नीक देखि ओ गरीब बाट पर आबि गेल छल। बोखार जे एना चढ़ि जेतै तकर अन्दाज नञि छलै। माथक बीच जेना धोनि लागल होइ आ सों-सों शब्द होइत होइ। कहाँ कोन हाल मे पड़ल अइ सेहो बीच-बीच मे गोलमाल भऽ जाइ छइ — समुद्रक तरंग, दुर्गापूजाक आलोक, झांझनक टाटक बाहर अन्हार मे सुतल पंक्तिबद्ध लोक, बेर-बेर जालक खसब-उठब, झाकक झाक दपदप माछक छड़पब-कुदब- सब एकाकार भेल जाइ छइ। हलुआइक मुह पर सँ चद्दरि हटा देने कुबेर आरक्त आँखिए ओकरा दिस देखैत रहैछ, बड़बड़ाइत रहैछ, श्यामादास के खबरि देबही - आकुरटाकुरक श्यामादास।

साँझक बाद कुबेर फिरिगेल कपिला लग। एकरा विछान पर सुता एगो

मोटसन केथरी ओढ़ा कपिला भानस करै लेल गेल। अन्हार घर मे असगरे सुतल रहल कुबेर।

शेषराति मे घाम भऽ कुबेरक बोखार उतरि गेलै। ताही संग ओकर निन्न सेहो टुटि गेलै, फेर निन्न नञि भेलै। एक असह बोतुआइन गंध सँ ओ बड़ बेसी अस्वस्ति-बोध करए लागल। कने फरीछ होइते ओ उठि बैसल। छोट-छीन घर, घरक आधा भरल पटुआक ढेरी आ मुहेलग बान्हल प्रकांड एकटा बोतो, पड़ल-पड़ल पाजु करैत, दाढ़ी हिलबैत।

शरीर बड़ दुर्बल लगै छइ कुबेर के। आस्ते-आस्ते उठि ओ बाहर भेल। कपिला ओसारा गोबरबै छलै, पुछलकै - मन केना छऽ माझी ?

कुबेर आस्ते सँ बाजल — बोखार नञि अइ। हम आब जाएब कपिला।

एखने जाएत कुबेर, एइ भोर मे! आइ बरु नहिञे गेल दुर्बल देह लऽ क। कने नीक भेने कालि गेने नञि होइतै। अन्ततः कने किछु खाइयो कऽ तऽ जाओ। एखने दूध दूहि कपिला औंटत, कने दूधे पी कऽ जाओ!

नञि, कुबेर नञि खाएत किछुओ। प्रयोजन नञि छइ। बोतो ओ पाटुक सौरभे ओकर पेट भरि गेल छइ। उदास कुबेर मूड़ी हिलबैए। पद्मानदीक कूल छोड़ि दस मील दूर चलि आएल अइ ओ, मन केनादन करै छइ। पद्माक बसात देह मे नञि लगने, केतुपुरक मछाइन गंध नाक मे नञि पड़ने, ओ स्वस्थ नञि हएत।

कपिला नीपब छोड़ि पुछलकै — राग केलहो माझी ? राग नञि करहो। घर भरती लोक, आर घर नञि रहलै जे तोरा सुतै लागी दितऽ।

कुबेर बाजल - हँ रे कपिला हँ, ढंग करए जनै छें ने। तोहर ढंग देखि देह मे अगराही लगैए।

अगराही लागै छऽ माझी ? अगराही लागै छऽ ?

हँ लगैए! तों कि हमरा माल-जाल बुझै छें, ठठ्ठा करै छें हमरा संग ? चिन्हि गेलियौ तोरो कपिला, तोरो चिन्हि गेलियौ - परनाम केने जाइ छियौ।

कपिला फुसुर-फुसुर कऽ कहलकै — चुप करहो माझी, चुप करहो, लोक सुनतै। जाइ के ह तऽ जा, आर की कहबऽ तोरा ? तब एगो बात कहि दै छिअ माझी, तोरा हमरे किरिया हऽ, दीदी के सब खेरहा कहियहो। कहियहो जे कपिला पर-घरक इस्तीरी, परक शासन मे कपिलाक मुह मे बकार नञि हइ। मेहमान कहाँ

रहतै, की खेतै, कपिला के से के पुछै हइ ? दोषी बनाबहो, सराप दहो, किन्तु ई बात दीदी के अबस्स कहियहो - हमरे किरिया हऽ तोरा, कहियहो।

ककरा संग बतिआइ छें कनियाँ ? घरे सँ सासु पुछलकैं।

कपिला जँतले कण्ठ कहै छइ, जाहो माझी! आएल छलहो काहे तों!

अमिनबाड़ी असपताल सँ गोपी के संग लऽ जलपथ होइत कुबेर गाम घुरल। ओकरा दुबरैल देखि माला बेर-बेर पुछै जे की भेल छलै ओकरा, फिरबा मे एते देरी किए भेलै ? प्रश्न सब अनठा देलक कुबेर। थोड़ समय मे बहुतरास विचित्र अभिज्ञता कुबेर के जेना नव लोक बना देने होइ। नदी ओ नदीतीरक ओकर दीर्घ जीवनक कएकटा मास चिरस्मरणीय रहतै। कहाँ छलै कपिला, कहाँ ओ आसिनक अन्हर, कहाँ छलै मयनाद्वीप! सब जेना एक संग दल बान्हि ओकरा जीवन मे आएल होइ!

गाम घुरि कुबेर देखलक जे रासू एही बीच पीतमक संग मिलान कऽ लेने अइ। जुगी के बेटा जन्म लेलकैए, पीतम के आर के देखितै, तें से काज रासू पओलकए। जुगीए जकाँ रासू के सेहो ओ शापान्त करैत रहैछ। रासू चुपचाप बुढ़बाक सेवा-टहल करैत रहैए, ने तमसाइए आ ने दुखी होइछ। रासूक धैर्य देखि कुबेर खुसी होइछ। पीतम के ढरने सम्भव छइ रासू किछु टाका-कौड़ी पाबए, ताइ सँ गोपिएक लाभ हेतै। तें पीतम के देखऽ गेने ओकरा लग थोड़-बहुत रासूक प्रशंसाओ कऽ अबैछ कुबेर। बजैछ, रासूक मन साफ छइ, दया-माया छइ ओकरा हिरदै मे। नकुल-टकुल जकाँ पाजी ओ नञि अइ। पीतम सब सुनैए, किन्तु विश्वास नञि करैछ। अरे तो नञि चिन्है छिही ओकरा कुबेर। डकूबा कोनो दिन हमरा छाती मे चक्कू भोंकि हमर सब धन-सम्पति लऽ पड़ाएत-हरमजादा! तों कोन ताल मे छें।

कुबेर प्रतिवाद करैछ, नञि-नञि, रासू तेहन नञि अइ। बड़ नीक लोक अइ रासू।

कए दिन बाद होसेन मियाँक घुरि अएने बैसारीक दिन शेष भेलै कुबेरक। रंग-विरंगक बेवसाय छइ होसेनक, धान, बीड़ीक पात, तमाकू, गुड़, चीनी, मसाला - एक-एकबेर एक-एक रकम बोझाइ कऽ कऽ कुबेर एक बन्दरगाह सँ दोसर बन्दरगाह धरि यातायात करैत रहैछ। गोयालन्दक दोसर तीर पर एक बेर सात सए बकरी-छागर हाजिर। दिन भरि कुबेर ओकरा सब के नदी पार करओलक।

छागरक गंध सँ बेर-बेर ओकरा मन पड़ै कपिलाक ओइठाम एक कष्टकर राति बितेबाक बात। परक घर मे परक शासन मे निरुपाय निर्वाक कपिला जाइठाम ओकरा पटुआ राखल, बोतो बान्हल टुटल भाङल घर मे सुतै लेल देने छलै।

तकर बाद एक दिन चाँदपुर जेबाक हुकुम भेलै। जल्दी-जल्दी जाए पड़तै, दिन-राति नाओ खेबि जेबाक बात। गणेश विरक्त भऽ भनभन करए लागल। शम्भु ओ बगा बहुत दिन सँ होसेनक अधीन काज करैए, ओ सब किछुओ ने बाजल, जानलगा करुआरि चला कुबेर के अवाक कऽ देलकै। होसेन के आब कने-कने चिन्हऽ लगलैए कुबेर। ओना तऽ समयक हिसाब मे होसेन कने शिथिल अइ, नाओक खेप मे माझी सभक देरी केने ओ किछुओ ने बाजत। शम्भु ओ बगा तें करुआरि धरिते देह नेड़ा दैछ, कुबेर के ओ सब मोजर नञि दैछ, किन्तु होसेन जखन कहतै जे तेज चलओनाइ जरुरी छइ तखन शम्भु आ बगाक समस्त शिथिलता विलुप्त भऽ जाइ छइ। तेना ने करुआरि चलाओत ओ सब जेना देह पर भूत सबार भेल होइ। कुबेर मने-मन स्वीकार करैछ। ठीके, एही तरहे काज लेबऽ पड़ै छइ लोक सँ, एहने कौशल सऽ। कने-मने देरी भेने जखन किछु बिगड़ै नञि छइ तखन माझी सभक संग बकतुति करैक कोन प्रयोजन ? जल्दीबाजीक समय तऽ दू बेर कहए नञि पड़ै छइ, कने इंगित पबिते सुस्तैल माझी सब हठात् बेसी कर्मठ भऽ उठैछ।

होसेनक बहुमुखी प्रतिभाक परिचय प्रतिनियत पबैए कुबेर। विस्तृत ओकर कर्मक्षेत्र, एतऽ-ओतऽ छिड़िऐल ओकर जीवन, असम्बद्ध ओकर चलनाइ-फिरनाइ, तैयो चतुर्दिक सामंजस्य, सब निमयबद्ध। एक गोट जटिल विशृंखला जेना सब किछु शृंखलाबद्ध कऽ देने होइ।

चाँदपुर मे नाओ पर योग देलक होसेन मियाँ। एहू बेर नाओ चलल मयना द्वीपे दिस। नोआखालीक उपकूलक एगो छोट-छीन गाम लग नाओ बान्हल गेल। ओइ पर बोझाइ कएल गेल नारिकेर। बोझाइ शेष होइतहि किन्तु नाओ खोलबाक हुकुम नञि देलकै होसेन। दू दिन ओहीठाम निष्कर्मा भेल पड़ल रहल ओ सब।

तेसर दिन साँझक समय नदीक मोहाना दिस सँ मसुरी बोझाल विराट एक नाओ आबि भिड़लै। तइपर सँ चटगाम बासी एक बुढ़ मुसलमान उतरि आबि बड़ीकाल धरि होसेनक संग बतिआइत रहल। तकर बाद तिरपाल मे लपेटल कोनो सामान ओइ नाओ पर सँ एइ नाओ पर आएल। होसेन तकरा वेश यत्न सँ छाओनीक बीच पाटातनक भीतर नुका रखलक। फेर होसेन आ ओ बुढ़बा मुसलमान तीर पर उतरि गेल। होसेन गनि-गनि कऽ कएकटा नोट ओकरा हाथ मे देलकै आ फेर नाओ पर आबि बाजल - नाओ खोल कुबेर भाइ।

कुबेर के बड़ कौतुहल होइ छलै। पाटातनक नीचा की नुका कऽ रखलकए होसेन ? होसेन के पुछबाक साहस नञि भेलै कुबेर के। राति चढ़ने नाओ लगा भानसक ओरियान करबा काल ओ चुपचाप शम्भु सँ पुछलक।

शम्भु कहलकै - हफीम मियाँ, हफीम। चुप रह।

हफीम! तऽ की होसेन नुका कऽ हफीमक धंधा करैछ ? ई तऽ नीक बात नञि छइ। सभ दिस सँ कते ने आमद छइ होसेनक, तखन एहन असत काजें कमेबाक चेष्टा किए करैछ ओ ? ततबे किए, चोरीक हफीमक धंधा तऽ कोनो साधारण बात नञि भेलै। पकड़ल गेने कोन उपाय हेतै ? कुबेर कें डर होमए लगलै। होसेन मियाँक संग जाइदिन ओ थेलक ताही दिन सँ ओ जनैए जे एक ने एक दिन आफत अएबे करतै, एकदम सँ सर्वनाश भऽ जेतै। आइ कुबेर आफतक असली रूप बुझि पओलक। आइ ने कालि हाथ मे हथकड़ी लगतै आ तकर बाद दू-दस साल जहलक बाहर खोजनहु कुबेर नञि भेटत।

छाओनीक भीतरक जगह होसेन मियाँ दखल केने अइ। नाओक उन्मुक्त अंश मे होगला पातक टाटीक तर माझी सब सुतैछ। पड़ल-पड़ल कुबेर मारिते रास चिन्ता केलक। एक बेर सोचलक जे एइ खेप गाम फिरने फेर ओ होसेन मियाँक नाओ पर काज नञि करत। जहल गेनाइ सँ भूखे मरि गेनाइए नीक। किन्तु भूखे मरबाक अनुभव छैक कुबेर के। होसेन मियाँक संग थेलाक बादे पहिले-पहिल ओ सम्पन्नताक सुख बुझलकए। ई काज छोड़ि देने जे ओकर की अवस्था हेतै से सोचिते ओ बुझि जाइए जे जानि-बुझि दारिद्रय के वरण करबाक हिम्मत ओकरा नञि छइ। क्षोभे कुबेरक आँखि नोरा गेलै। ई केहन अन्याय होसेन मियांक! ई झंझटिया काजक अतिरिक्तो तऽ ओकरा लग काजक अभाव नञि छइ, ताइ सब काज मे नञि लगा किए ओ एइ झंझटिया काज मे घीचि अनलकै कुबेर के ? कुबेर फेर सोचैए, एइ सब भयंकर काज मे जँ ओकरा मदति करए पड़तै, विपतिक भाग जँ भोगए पड़तैक, तखन लाभक अंशो तऽ भेटक चाहिऐ। जकरा जहल जेबाक सम्भावना हरदम बनले रहै छइ से की खाली करुआरि चलेबाक मजूरी पाबए ?

मने-मन कुबेर होसेनक संग झगड़ा करैए। कल्पना मे ओ बेड़-बेड़ एहन घटना सब घटबैत रहैछ। होसेनक गलती बुझा देने ओ वेश अनुतप्त होइछ, चटपट डाँड़क करिया बेल्ट सँ एक बंडिल नोट बहार कऽ कऽ ओ कुबेर के दैछ! चारुकात सँ बड़का-बड़का चारिटा घर उठबैए कुबेर, बड़दघरा बनबैए, धानक ढक बनबैए, चार पर सजमनिक लत्ती चढ़ा दैछ। तकर बाद एकदिन कपिला के लेआओन करैछ।

कपिलाक पैर दुनू गछारने बजैछ जे ओकरा बिनु हिया फाटि गेल छइ कुबेरक - हे कपिला, हमरा छोड़ि जुनि जो, जुनि जो तों हमरा छोड़ि - हम जे मुइल जाइ छी तोरा बिनु।

केतुपुर पहुँचि एक अचरजक बात सुनलक कुबेर।

पीतमक घर मे चोरी भऽ गेलैए।

निशाभाग राति मे घर मे सेन्ह देलकै चोर। एगो पैघ तमघैल भरती टाका घरक कोनो कोन मे गाड़ि रखने छल पीतम, चोर के से जनबाक बात नञि छलै। तैयो ओतै सेन्ह दऽ चोरबा घैला लऽ गेलै।

टाकाक शोक मे बड़ झमान भऽ गेल अइ पीतम। चोरीक मादे ओ रासुए के सन्देह करैछ। रासू जे अपने सेन्ह देलक से बात ओ साफ-साफ नञि कहैछ, तखन चोरक साटि मे जे ओ छल तइ मे संदेह नञि छइ पीतम के। घरक भेदिया नञि रहने घैलक संधान केना पबैत चोर ?

पीतमक गारि गंजन सँ कहियो तामस नञि केलक रासू। किन्तु एइबेर चोरिक अपवाद देवामात्र पीतम के ओ नीक जकाँ अनुचित-उचित सुना चलि गेल। इहो वेश संदेहजनक।

ओ जेना चोरिक अपवाद सँ नञि, टाका लऽ पड़ाएल हो। एते दिन किए ने गेल तखन, जते दिन पीतम लग टाका छलै ?

कुबेरक जिज्ञासा करए गेने पीतम कानि-कानि चोरबा, रासू ओ दुनियाँ-संसारक विरुद्ध नालिस करए लागल। हाय, ओकर भरि जिनगीक संचय - सात कूड़ी तेरह टाका! कतऽ गेलै ओकर ओ पड़ैया असामी बेटा, बुढ़ बाप मन पड़ने कहियो-ने-कहियो तऽ घुरतै—ताही आशा मे पीतम टाका जमा कऽ कऽ रखने छल। से की चोर के देबा लेल ? अभगला रासूक पेट मे जेबा लेल ?

कुबेर पुछलकै - रासू केना जनलक जे तमघैल कोनठाम गाड़ल छइ ?

से बात पीतम की जानए गेल ? रासू जे शैतान लोक, केना ने केना टोहि पाबि गेल जे तमघैल कोनठाम गाड़ल छइ। रासूक लेल ई कोनो असम्भव बात नञि। तमघैलक पता लगाबए भरिसक ओ आएल छल, पीतमक सेवा-टहल तऽ बहन्ना छलै। भरिदिन ओ घर मे एइ कोन ओइ कोन घुरैत रहैत छल आ गहिकी नजरिए नीचा दिस तकैत रहैत छल। तखनिते संदेह भेल छलै पीतम के। हे दैव तखनिते जँ ओ सबधान भेल रहैत!

कुबेर के विश्वास नञि भेलै जे ई काज रासू केने हएत। तमघैल कतए गाड़ल छइ से जँ रासू के पता रहितै तऽ ओ चोरक संग साटि कऽ कऽ हिस्सेदार किए जुटबैत ? अपने तऽ अनायासे चुपचाप तमघैल उड़ा लित आ खाधि भरि नीपि-पोति दितै। पीतम के पतो चलितै तऽ कते दिनक बाद तकर कोन ठेकान। सेन्ह कटबाक झमेला रासू किए करए जाएत ?

चौकीदार थाना मे खबरि देने छलै। पुलिस आबि चोरिक खोज-खबरि लेलकै। पुलिस के देखि कुबेरक छाती धड़कऽ लगलै। होसेन मियाँक संग एइबेरक नाओयात्रा सँ घुरलाक बाद सँ पुलिसक लेल ओकर चिरन्तन स्वाभाविक भीति अस्वाभाविक रूपें प्रखर भऽ गेल छइ। पुलिस लग पीतम निधोख कहि देलकै जे रासू के ओ संदेह करैए।

रासू सँ बड़ पुछ-ताछ कएल गेलै। ओकर घरक तलाशी लेल गेलै। तकर बाद रासू के हथकड़ी बिनु पहिरओनहि पुलिस चलि गेलै। नञि, रासूक विरुद्ध कोनो प्रमाण नञि भेटलै।

पुलिसक गेलाक बाद पीतमक घरक सामने ठाढ़ भऽ रासू, जे मुह मे अएलै बजैत पीतम के अभिशप्त कएलक। के कहतै जे पीतम ओकर माम छइ।

तकर बाद एक दिन भोरे-भोरे कुबेर लग आबि पुछलकै, कहिया बियाह देबहक ?

कुबेर तैखन संदेह करैत बाजल— की बात छइ रे रासू ? पीतम ककाक टाका की तोंही लेलहीए ?

रासूक मुह कने विवर्ण भऽ गेलै।

ओ बाजल — की कहै छहो लखाक बाउ, आञि ? हमरा टाका नञि है ? हम कि काम-धंधा नहि करै छिकी ?

कोन काम करै छैं तों ?

शीतल बाबू काम देलकैए, बाबू आर के नाओ पर। मामक घर मे चोरी करबै ? एहन बात फेनो नञि बोलिहऽ।

कुबेर कहलकै — तखन सगुनक टाका किए ने दऽ दै छें ?

रासू बाजल — देबऽ। बियाह कहिया देबऽ से पहिले कहऽ।

गोपी नीक भेल जाइत छलि। ओना एखनो ओ नीके ना चलि-फिरि नञि पबैत छलि तथापि आस्ते-आस्ते पैर मे जोर आएल जाइत छलै। मास दिनक

बाद ओकर बियाह कराओल जा सकैछ। किन्तु ताइ सँ पहिने कुबेर के टाका भेटि जेबाक चाहिऐ, बेटीक देह मे गहना पड़क चाहिऐ। रासूक मुहक बात पर निर्भर रहैबला नञि अइ कुबेर।

यथा समय टाका ओ गहना-गुड़िया देबाक बात कहि बिदा भऽ गेल रासू। बात कहि गेल ओ अनायासे, जेना बाबू लोकनिक नाओ पर काज पाबि ओकर टाकाक चिन्ता शेष भऽ गेल होइक, ओ जेना राताराती पैघ लोक भऽ गेल हो। इएह टाका ओ गहनाक बात सुनि एक दिन ओकरा मुह पर कालिमा घनीभूत भेल छलै, आइ से निर्भय निश्चिन्त।

माला बजैछ - रासू के जेना केनादन लगैए, हमरा डर होइए माझी।

कुबेर कहैछ, डेरेबाक काम नञि एकरा।

आँइ ? बाजि माला चुप भऽ जाइछ।

कुबेर गोपी के शोर पाड़ैछ। ओकरा लाठी पर भर दऽ कऽ चलै लेल कहै छइ। गोपी बड़ कष्टे उठि कऽ ठाढ़ होइए, कोनोना दू-एक डेग चलैए। कुबेर तीक्ष्ण दृष्टिञे देखैत बजैछ - ठीक भऽ जेतै गोपीक माए, एकदम ठीक भऽ जेतै गोपीक पैर। रासूक संग किए बियाह देबै ?

आर रासू के जे कहलकै ?

कुबेर एक गाल हँसैछ। बजैए — ई मौगीक जाति ने बुझै नञि छइ। रासू के हाथ मे रखने छी। जँ छौड़ीक पैर ठीक नञि भेलै तखन तऽ ओकरे संग बियाह देबै, आ जँ ठीक भऽ जेतै —

महाउत्साहे कुबेर असपतालक देल औषध गोपीक ठेहुन मे मालिस करैत रहैछ। जोर-जोर सँ रगड़ैत रहैए कुबेर आ छटपटाइत रहैए गोपी। कुबेर दमसबैत बजैछ - चुप, चुपचाप बैसल रह। जोर सँ मालिस नञि करबौ तऽ छुटतौ केना? मालिस करैत-करैत ओ बीच-बीच मे ओकर ठेहुन दबा-दबा परीक्षा करैए। बजैछ, फुलनाइ कमलैए ने गोपीक माए ?

हँ, कम तऽ बुझाइए।

बाजि माला उत्सुक नजरिए गोपीक पैर दिस देखैत रहैछ। बड़ीकाल बाद कने लजाइत बजैए — एगो सेहन्ता रहलै माझी, बोलिऐ ?

हँ, एहिना भनिता करैछ माला। ओकर तमहा मुह कने रंगीन देखाइ छइ। आस्ते-आस्ते ओ कुबेर के जिज्ञासा करैछ, असपतालक जे डाकडर गोपीक पैर

ठीक कऽ देलकैए से की मालाक पैरक नञि किछु कऽ सकैछ ? एक बेर जा कऽ देखा एने होइतै। डाकडर जँ नञि किछु कऽ पाओत, नञि करत, मालाक बड़ इच्छा एक बेर जा देखा अएबाक। की कहैए कुबेर ?

कुबेर गम्भीर भऽ बजैछ, एकर पैरक किछु ने भऽ सकै छइ गोपीक माए।

किए ? हैतै ने किए ? माला पुछै छइ। अहा, एकबेर देखा अएबा मे दोषे की ? डाकडर यदि कहै जे किछु ने हैतै, अपने काने सुनि आबि निश्चिन्त भऽ जाएत माला। एक बेर लऽ तऽ चलौक कुबेर ओकरा, एको मिसिया माया जँ होइ ओकरा लेल कुबेरक छाती मे, एक बेर लऽ चलौक सदर असपताल। कुबेर की जानत जे नाङड़ पैर लऽ कऽ भरि जिनगी केहन दुख पोसि रखने अइ माला अपना मन मे।

नञि ? कुबेर नञि लऽ जेतै ? हाय रे कुबेरक पाथर हिरदे। मालाक आँखि नोरा जाइ छइ। आकुति-मिनती करैत ओ कहैत रहैछ जे बेटी खातिर कुबेर दस खेप असपताल जा-आबि सकैए, माला के एक बेर, मात्र एक बेर लऽ जाइ मे ओकरा आपत्ति। हँ, बड़ पाप केने छलि पछिला जनम मे माला, तें एइबेर एहन जरल कपार लऽ जनम लेलक। कोरक बच्चा के दूध छोड़ा माला नीचा उतारि दैछ। घुरिकऽ बैसैत चौकठि मे ठक-ठक माथ ठोकैछ आ कानि-कानि मृत्यु के आवाहन करैछ, आ मृत्यु एहन निरदय जे माला सन कपरजरौनी दिस घुरिओ ने तकैछ।

चुप रहौ, चुप रहौ गोपीक माए।

किए, किए चुप रहत ओ ? कुबेर के माया छइ ने कि माला पर ? ओ तऽ कपिला जकाँ भंगिमा करैत नञि चलि सकैए जे तकरा लऽ कुबेर अमिनबाड़ीक असपताल जाएत, होटल मे महाआनन्दे राति कटा आओत।

कुबेरक मुह विवर्ण भऽ गेलै। बाजल — ई की बजै छइ गोपीक माए ? खून कऽ देबै एकरा से कहि दै छिए हम। फेर सुर बदलि बजैछ — असपताल जाइ खातिर कानैक कोन काम छइ, अँए ? जाए चाहै छइ तऽ लऽ जेबै ने! जे मुह मे अबै छइ से बाजि पित्त नञि चढ़ाबौ।

माला हिचुकैत बजैछ, लऽ जेतै ? ठीके लऽ जेतै ?

लऽ जेबै।

किन्तु माला के अमिनबाड़ी लऽ जेबाक पलखति कुबेर के नञि होइत छइ। एखन होसेन मियाँक काजक अन्त नञि। हरदम चलान अबै छइ, चलान जाइ

छइ। एइ साल जोर दमे बेवसाय आरम्भ कएने अइ होसेन। बीच मे फेर खेप नाओ लऽ कऽ ओही नोआखालीक उपकूल जाए पड़ल छलै कुबेर के, नारिकेर आ चोराइ हफीमक चलान आनै लेल। एइ बेर हफीम पहुँचा गेलै एगो स्टीमलंच। लंच पर एक साहेब आएल छलै, होसेन मियाँक तकर की खातिर। हफीमक पोटरी लऽ नाओ चलबैत भरिबाट एगो आतंक पैसल रहलै कुबेरक मन मे। पछिला बेर घुरला पर होसेन मियाँ सब माझी के दस गो कऽ टाका बकसीस देने रहै। ऐहू बेर देतै ताइ मे संदेह नञि, किन्तु टाकाक बात सोचि मिसियो भरि आनन्द नञि भेलै कुबेर के।

गणेश पुछै छइ, की सोचै छहो कुबेर भाइ ? औंघाइ छहो किए ? मियाँ भाइ हाफीम खुआ देलकऽ ने की ?

कुबेर कहै छइ चुप गदहा।

गणेश बजैछ — कुकीक मतारी रूपाक बाला मङैए कुबेर भाइ। सोचै छी जे एइबेर मियाँभाइ टाका देने कुकी माए के बाला गढ़ाइए देबै। गणेशक खुसी जेना समाइते ने होइक। कुबेर के धकिअबैत बजैए, होसेन मियाँक नाओपर काम लऽ बड़ निमन केलऽ, टाकाक मुह देखली।

कुबेर तीक्ष्ण दृष्टिञे सुदूर नदीवक्ष पर देखैत बजैछ — ओ की छइ रे गणेसिया ? पुलिसक लंच ने की ?

हँ।

कुबेर सिहरैत पुछै छइ, कोन दिस जाइ छइ ?

हमरे सबहक दिस अबैत लगैए कुबेर भाइ।

कुबेर विवर्ण मुह लेने होसेन मियाँ लग जाइछ। फिस-फिस कऽ बजैछ, मियाँ साब, पुलिसक लंच।

होसेन बिहुँसैत कहै छइ, करुआरि धरै गऽ कुबेर भाइ। होसेन मियाँ के रहते ककर डर। धार मे जाल फेकि माल निकालत कोन सालाक बेटा ?

हँ विपतिक आशंका भेने हफीमक बण्डिल नदी मे फेकि देनहि खिस्सा खतम। तें भरिसक होसेन मियाँ सब समय नदी पथ सँ हफीमक चलान लबैए, ने तऽ नोआखाली होइ वा चट्टग्राम, रेल, स्टीमर सँ चाँदपुर अएनाइ बेसी सुविधाजनक छइ। कुबेरक डर कने कमलै। तैयो दूर मे पुलिसक लंच दिस सँ ओ नजरि नञि हटा पबैछ। आस्ते-आस्ते लंच जखन लग आबि कात दने चलि जाइ छइ, कुबेर ता साँस बन्द केने रहैछ।

एक दिन सकाल आङन घुरि कुबेर माला के नञि देखि पओलक। बाद मे गोपी कहलकै जे ओ रासूक संग अमिनबाड़ी असपताल गेलैए।

कुबेर तमसाइत पुछलकै, ककरा नाओ पर ?

बाबू आर के नाओ पर।

तीन दिन नदी मे बिता आएल कुबेरक मिजाज गरम छलै। तामसे ओ गुम भेल रहल। गोपी फट-फट विस्तार सँ सब बात कहि गेलै। माला कए दिन सँ रासू के खुसामद करै छलै। कालि मझिला बाबू कोनो मामिला मे अमिनबाड़ी गेलै, ताही सुयोगे बाबू के कहि-सुनि मालाओ रासू संग लागि गेलै।

मझिला बाबू। मझिला बाबूक नाओ पर माला अमिनबाड़ी गेलए ? ओ आँखि गुड़रि छौड़ी दिस तकैए, जेना अपराधी उएह हो।

गोपी डेराइत-डेराइत बजैछ, लखा संगे गेलैए बाउ।

कुबेर दिनभरि आङन सँ नञि टकसल। जिनगी जेना हठात् तीत भऽ गेलैए कुबेरक। समस्त सकाल ओ तामसे माहुर भेल रहल। निधू माझी गप-शप करै लेल अएने अकथ्य गारि-गंजन कऽ भगा देलकै ओकरा। बिनु दोषे चण्डी के डेङा कऽ अधमरु कऽ देलकै। तकर बाद बेर मे तामस कमने एलै विषाद, मन मे खाली इएह होइत रहलै जे माला प्रतिशोध लेलकैए। कपिलाक संग ओ जे एक राति अमिनबाड़ी मे बितओने छल, तें माला मझिला बाबूक संग ओही अमिनबाड़ी गेलए, उपलक्ष उएह, बहन्ना असपताल जेबाक।

साँझ भऽ गेलै माला नञि फिरलै। अन्हार मे मुह नुकओने आएल होसेन। कुबेर के छोड़ि बड़का घर सँ सब के बहार कऽ देलक आ घरक बिचला खाम्ह धऽ उपर चढ़ि होसेन अपने हाथे चारक खढ़ हटा छोट-छोट दू गोट बंडिल नुका रखलक। खाम्हपर चढ़ौ जनैए होसेन, जेना ओकर गुणक अंते ने होइ।

कुबेर चुपचाप ई अद्भुत काण्ड देखैत रहल, बाजल नञि किछु। होसेन उतरि आबि कहलकै, डेरैह' नञि कुबेर भाइ, डर नञि।

मोहासक्त सन भेल कुबेर माथ हिलओलक।

होसेन बैसल। बाजल जे जते दिन ओ पोटरी दुनू नञि लऽ जाइए तते दिन कुबेरक छुट्टी। दिन भरि धर बैसल आराम करत ओ। चार मे घुसिऐल दुनू पोटरीक पहरा अबस्से करत ओ किन्तु बेर-बेर ओमहर तकबाक प्रयोजन नञि। बरु ओमहर एकदमे नञि तकनाइए नीक। नञि, किछुओ नुकाओल नञि छइ

कुबेरक घरक चार मे। अन्हार मे नुका कऽ आइ होसेन नञि आएल छलै। खाम्ह धऽ उपर चढ़ि घरक चार मे ओ किछुओ नुका कऽ नञि रखलकै।

की कुबेर भाइ, सएह ने ? होसेन बिहुँसैए।

हँ कहि कुबेर स्वीकृति दै छइ।

सब सँ विश्वासी, सब सँ निरापद पद्मानदीक एइ माझी के होसेन मियाँ जेना सिनेह करैछ। कते टाका होसेन मियाँक दूर-दूर धरि छिटल-छिड़िऐल छइ, कते पैघ ओकर व्यवसाय, एगारह मील नाम एक द्वीपक ओ मालिक, कुबेर तऽ ओकर चाकर छइ, तैयो कुबेरक फाटल चटाइ पर आराम सँ बैसैए होसेन, बन्धु जकाँ बतिआइए। एखन होसेन के जेना चिन्हले ने जाइछ। होसेनक नाओ पर काज लेबाक पूर्व कुबेर ओकरा मात्र एक मिलनसार लोकक रूप मे जनैत छल। मारितेरास माध्यम सँ जे ओकरा कते टाकाक आमदनी छइ से एखन सोचैत माथ चक्कर देबऽ लगै छइ कुबेर के! मात्र ओ आ गणेश जनैए, केतुपुरक आन केओ नञि जनैछ होसेन मियाँक रहस्य।

पाइबला लोकक संग बेसी मेलजोल नञि छइ होसेनक। ओकरा लोकनिक संग ओ खाली धंधा करैए, माल दऽ टाका लैए – टाका दऽ माल लैए। माझी सब ओकर बन्धु। खाली समय ओ पद्माक दीन-दुखी माझी सबहक संग गप-शप कऽ क बितबैए। टाका भरती फुलल बैग जेबी मे धेने बरसाक राति जीर्ण-शीर्ण चारक नीचा चटाइ पर निश्चिन्त सुति रहैए।

ओइ राति माला नञि घुरलै।

दोसर दिन प्राय: बारहक धत्पत् हाथ पर भर देने हिल-डोल करैत ओ गृह-प्रवेश कएलक। नदी-घाट सँ एतेदूरक बाट एहि तरहें अएबा मे ओकर कपड़ा मे कादो-माटि लेभरा गेल छइ। कुबेर खाए लेल बैसल छल, एक बेर कनडेरिए देखि फेर भोजन मे मन देलक। घरक भीतर जा कपड़ा बदलि माला ओसारा पर आबि बैसलि। कुबेर आँखि उठाइयो कऽ ने देखैछ। चिचिया कऽ पीसी के आर कने भात दऽ जाइ लेल कहै छइ।

माला बजैछ, सुनै छइ।

नञि, कुबेर नञि सुनैए, ओ बहीर भऽ गेल अइ।

माला बजैछ, ई तऽ नहिञे लऽ गेलै, रासू जरे तें असपताल गेल रहलिऐ। एकरा तामस भऽ गेलै ?

कनेकाल जवाबक अपेक्षा करैछ माला। फेर करुण कण्ठे बजैछ, डाकडर कहलकै जे ठीक होइवला नञि है पैर हमर।

आर कते की बजैए माला, किन्तु कुबेर चुप्पी सधने रहैछ। खा कऽ उठि मुह हाथ धो आबि चुपचाप चिलम पिबैत रहैछ। ओहो कि कम जिद्दी अइ।

अन्त मे खिसिया कऽ बजैए माला, किए माझी किए, एते तामस किए ? कहिया, कहाँ लऽ गेलै हमरा ? भरि जिनगी तऽ घरे मे ने रहली, आ एक दिन खातिर जँ बहराइए गेली तऽ तइ लेल तमसेतै किए ?

जाउक ने, घुरौक गऽ मझिला बाबूक संग – हरामजादी, बरजाति।

की बजलै माझी, की बजलै ?

तकर बाद की जे कलह दुनू मे बझि गेलै। पड़ोसी सब दौड़ल आबि थहाथही केने तमासा देख' लगलै। अन्त मे हठात् तमसा कऽ कुबेर चिलम फेकि मारलकै माला के। चिलमक आगि सँ मालाक कोरक शिशु कएक ठाम पाकि गेलै, मालाक नुआ मे सेहो आगि धऽ लेलकै। सिधूक बहिन दौड़ि ओकर नुआ खोलि फेंकि देलकै आ अपन आँचर सँ ओकर लाज झँपलक। दुखिया बेचारी, गुदरी-गुदरी भेल ओकर नुआ।

अङना मे स्त्री पुरुषक भीड़ लागल, ओकरा लोकनिक सामने एक पंगु असहाय स्त्रीक एहन दशा। मालाक दुरबस्था देखि मजा पाबि सब हँसैए के जेना थपड़ी बजओलक। एते काल बाद जेना कुबेरक चेतना जगलै। ओसारा पर सँ आङन मे कुदि गारि-गंजन दैत सकल के आङन सँ बाहर केलक। तकर बाद अपने बला एगो धोती आनि माला के देलकै।

क्रमे-क्रमे जाड़ कमलै।

केतुपुर गाम आ मलहटोलीक बीचक सोती सुखा गेलै। पद्माक पानिओ काफी कमलैए। आस्ते-आस्ते खेत सभ फसल शून्य भऽ खाँ-खाँ करऽ लागल। खुर-पेरिया साफ ओ चिक्कन भऽ गेल छलै। आमगाछ सभ मे नव पल्लव देखना जाइत छलै। देखिते-देखिते देश मे जेना चिड़ै-चुनमुनीक संख्या बढ़ि गेल होइ। हेंजक हेंज बनैया हंस उड़ैत देखल जाइछ। उत्तराभिमुखी नाओ सब पाल तनने दक्षिणक तेज बसात मे तीव्र गतिञे भासल जाइछ, दूर चल गेने अतिथि हंस सब सन रहस्यमय लगैछ। दूध माछ वेश सस्त भेलैए। पद्माक चर सँ कलसीक कलसी दूध अबैछ आ बाजार मे चारि पैसे सेर बिका जाइछ।

जड़काला मे कोकड़ाएल गाम सब अंगैठी मोड़ करैत देह झाड़लकए। साँझ परात माला कपड़ा भाँज कऽ कऽ लखा ओ चण्डी के गाँती नञि बन्हैछ। खालिए देह ओ सब सुखाएल डबरा पोखरि मे कादो-माटि गीजि माछ पकड़ऽ जाइछ। फाटल चाम उठि गेने देहक चाम मोलाएम भेल जाइ छइ। एक मुठ्ठी अतिरिक्त यौवन जेना आएल होइ मालाक देह मे। माला मन पड़िते कुबेरक नित्र उचटि जाइ छइ, कोनो दिन घरे मे, कोनो दिन पद्माक वक्ष पर।

रासूक संग गोपीक बियाहक व्यवस्था किन्तु खारिज भऽ गेल छइ। इहो कीर्ति होसेन मियाँक। सोनाखालीक एगो लड़का होसेन ठीक कऽ देने छइ गोपीक लेल, नाम छइ बंकू, बयस बेसी नञि। एइ दुनियाँ मे बंकूक अपन कहि केओ नञि छइ से ठीके, किन्तु होसेन मियाँ छइ। होसेन मियाँ जकर अभिभावक तकरा अभावे कथिक। बंकू पाँच कूड़ी टाका दहेज मे देतै कुबेर के, गोपी के देतै तीन कूड़ी टाकाक गहना, आ एक दिन मलहटोली मे सबजना भोज।

कुबेर के ई बात बुझबा मे भाङठ नञि छलै जे बियाहक बाद नव दम्पति के होसेन मियाँ मयना द्वीप लऽ जेतै। किन्तु बुझिए कऽ की लाभ ? होसेन मियाँक अवाध्य केना भऽ सकत कुबेर। ततबे नञि, पाँच कूड़ी टाकाक मोह-त्याग करबाक साहस सेहो नञि छइ कुबेर के। बियाह भेने बेटी परक घर तऽ जाइते छइ, लग हो अथवा दूर। गोपी ने कने दूरे जाएत - बहुत दूरक मयनाद्वीप। भऽ सकैए कहियो काल कुबेरक मन केनादन करतै, किन्तु तकर प्रतिकार की ? मन तऽ कतेको कारणे केनादन करैछ लोकक।

खबरि पाबि रासू गारा-गारी कऽ गेलैए। बजलै जे जूबान दऽ कऽ पलटि गेल कुबेर, ओ कुबेरक सर्वनाश कऽ कऽ छोड़तै। ओ भरिसक जुगी के पकड़लक, तकर बाद एक दिन शीतल आबि कते ने ओकालती कऽ गेलै कुबेर लग। कहलकै जे कुबेर के बेसी चाहिऐ तऽ से बाजल ने किए ? सोनाखालीक लड़का जते टाका दै छइ रासूओ तते देतै। गाम मे रासू सन उपयुक्त लड़का अछैत बेटी के दूर देश किए पठाओत कुबेर ?

किए ? एइ किएक जवाब देबाक क्षमता नञि छइ कुबेर के। मयनाद्वीप जा गोपी के बास करए पड़तै से सोचैत जाल मे फँसल हिलसा माछ जकाँ ओकरो मन की छटपट नञि करै छइ ? तैयो ओकरा ई सब कहनाइ बेकार।

एक दिन गोयालन्द मे अधरक संग भेंट भेलै कुबेर के। अधर कहलकै जे कए दिन पहिने कपिला चड़डाँगा आएलए। किछु दिन रहत। घर घुरि कुबेर ताइ

दिन मालाक प्रति वेश सिनेह देखओलक। बाजल जे माला बहुत दिन सँ नहिरा नञि गेलए, ओकरा की मन नञि होइ छइ जेबाक ? मन होइ तऽ बरु चलओ कालि, दू-चारि दिन रहि आओत। माला कहै छइ नञि, नञि छइ ओकर मन नहिरा जेबाक, बाप कि आबै लेल कहलकैए ओकरा? एते दिन सँ जे ओ नञि गेलए, एको बेर की तकरा देखै लेल अएलै। कानऽ कानऽ सन मुह भऽ जाइ छइ मालाक। बजैछ जे उएह खाली मुइल जाइए बाप-भाइक चिन्ता मे, एकरा लेल ओकरा लोकनि के ककरो कोनो माया-मोह नञि छइ। अपने सँ किए जाएत ओ नहिरा ? कुबेर विपन्न सन भेल बजैछ, गेने दोषे की ? बापक घर, अपने जेबा मे कोन लाज ? बिहाने चलओ माला, दू-एक दिन बाद घुरि आओत।

एइबेर माला संदेह करैत पुछै—छइ जाइ लै ई एना जिद किए करै छइ ?

जिद कथिक ? आबेसे कहलिऐ, जिद!

माला पर बड़ तामस होइ छइ कुबेर के। चड़डाँगा जेबाक आर कोनो दोसर बहाना नञि छइ ओकरा लग। जमायक अकारणे सासुर गेने अबस्से कोनो दोष नञि होइ छइ, किन्तु एखन कपिला ओइठाम अइ, हठात् कुबेरक आबिर्भाव देखि जानि ने की सोचि बैसय। बैसल-बैसल कुबेर बहाना सोचैछ आ रहि-रहि क्रुद्ध दृष्टिञे माला दिस तकैछ।

हँ, आइ वसन्तक आदर्श समय केतुपुर मे आएलए। होरी छइ कालि। लखा ओ चण्डी आइए अबीर किनि आनि आङन मे कने उड़ेबो केलकए।

बेर मे पद्माक घाट पर नाओक तदारकी करै गेने कुबेरक मन जेना आर व्याकुल भऽ गेलै। काव्यक मसृण मार्जित व्याकुलता नञि, ओकर भीरु प्रकृतिक संग जतबा मेल खाइछ, ततबे तेज मानसिक अस्थिरता। भरिपेट भोजन भेटने कुबेरक स्वास्थ्य नीक भेलैए, पहिने खेनाइ सँ जतबा शक्ति भेटितै, खर्च करए पड़ैत छलै तकर दसगुन बेसी। एखन सएहटा बन्न नञि भेलैए, विश्रामो वेश भेटै छइ। ताइ सँ जेना मनोक व्याकुल हेबाक क्षमता बढ़लैए आ घटलैए तऽ दुर्बल अभिमान, जे भाँग वा हफीमक नेसा जकाँ कुबेरक मन के कमोवेश शान्त केने रहैत छलै पहिने। नाओ पर बैसि जेना कुबेर बिसरि जाइछ जे कपिला कते निष्ठुर जकाँ, कते दुर्बोध निर्मम खेला केने छलै ओकरा संग। मन पड़ै छइ खाली कपिला, ओकर लीला-चपलता, ओकर हँसी आ इशारा, तेल मे भीजल ओकर केश-कपार आ बैगनी रंगक साड़ी। आर मन पड़ैत छइ श्यामादासक ओसारा भोरे-भोर गोबर सँ नीपैत कपिला के, मालाके कहबाक अनुरोध मिज्झर शेष

कातर कथा सब किए आएल छलहो माझी, पुछने छलै ने कपिला ? हँ ओइ पुछबाक मतलब कुबेर बुझैए। तें फेर जाए चाहैछ कुबेर कपिला लग, एखने जाए चाहैछ। शस्यहीन सुखाएल खेत सब पार करैत हकमैत एकसुरे चड़डांगा, जतए कपिला केश बन्हैत हएत। कुबेर के देखि शीशी टेढ़ कऽ कऽ आर कने तेल ओ अपन माथ मे ढारत। ओकर उत्तोलित दूटा बाँहि, छलनामयी हँसी, बैसबाक दुर्विनीत भंगिमा – सब जेना बताह बना देतै कुबेर के। घाट पर आरो नाओ छइ, माझी छइ। नीक नञि लगै छइ कुबेर के एइठाम रहनाइ, घरो घुरबाक मन नञि होइ छइ। ओ नदीक कातेकात चलब आरम्भ कऽ दैछ, खसबा लेल प्रस्तुत तीरक दरकल अंश सबहक उपर दने। चलैत-चलैत एक समय दस-बारह हाथक घसना ओकरा लेनहि नीचा खसि पड़ै छइ, जतए सँ जड़कलाक पद्माक पानि हाथ पन्द्रहेक पाछु चल गेल छइ। माटिक कोनो खण्ड प्राय: माथ पर आघात दऽ कुबेर के अज्ञान कऽ देलकै। मिनिट दसेक बाद ज्ञान फिरलै कुबेरक। पहिने ओकरा बुझेलै जे इहो जेना कपिलाक कोनो कौतुक हो। तकर बाद वेश कष्टे उठि कऽ बैसैत ओ निश्चेष्ट भेल पड़ल रहैछ। दिनान्तक सूर्य जेना पद्मा के सेहो निश्चेष्ट कऽ देने होइक, दूरक नाओ सब एवं आरो दूरक स्टीमर जेना गतिहीन भऽ गेल हो। बसातक जोर नञि, नदीक कल-कल शब्दो जेना क्लान्त। अपने असम्बद्ध चिन्ता सब के कुबेर नीक जकाँ नञि बुझि पबैए। माथ मे जेना टीस मारैत होइ। माथक बाम दिस सँ जेना कने सोनितो बहलैए। तें एखन केबल गणेशक ओ गीत सब किए मन पड़तै — *पिरीत केलिऐ पागल भेलिऐ सखी, आ हे सखी ?* कुबेर ककरा संग पिरीत कऽ कऽ एना पगलैल अइ ? कपिलाक संग ? हँ, बड़ काँच अइ कपिला। तकरा संग पिरीत। कुबेर की कोनो बच्चा अइ ?

पद्मा मे नहा कऽ कुबेर आङन आएल। भात खा कऽ बैसैत हठात् बाजल, चरडाङा जेबें लखा ?

जेबै बाउ, जेबै।

कालि बिहाने रमाना देव, आँइ ?

हँ, ई बहाना बेजाए नञि। होरीक उत्सव मे मामागाम जाएत छओंड़ा सब। असगर तऽ ओ सब नञि जा सकत, तें कुबेर संग जेतै। ककरो भनको ने लगतै जे कुबेर के कोन आकर्षण खीचि अनलकैए।

माला कहलकै – हे लऽ जेतै तऽ हमरो लऽ चलौ।

कुबेर बजैछ, नञि, एकरा नञि लऽ जेबै। पहिने किए कहलकै जे नञि जेतै ?

बाँचि गेल कुबेर। माला के लऽ कऽ चड़डांगा गेनाइ की असान काज छइ। पहिने राजी नञि भऽ नीके केलकै माला, डोलीक भाड़ा तऽ बँचलै।

माला एखन जाए चाहैए। बेटा सब के लऽ कऽ जँ सरिपहुँ कुबेर चड़डांगा जाएत तखन से किए ने जाएत ? कुबेर तऽ ओकर इच्छा अनिच्छा के बात पुछने छलै, तें ने पहिने ओ राजी नञि भेल छलै। माला आब घरबलाक खुसामद आरम्भ करैए। राति मे कने रागा-रागी, कन्ना-काटी केनाइयो नञि छोड़लक, किन्तु कुबेर अटल। माला किए कहलकै जे ओ नञि जाएत ? कुबेर जखन आवेश सँ कहने छलै तखन बहादुरी देखबैत अस्वीकार किए केलक ? आब मरिओ गेने कुबेर ओकरा चड़डांगा नञि लऽ जेतै। हँ, कुबेरक जिद माला नञि जनैए। की बुझैए ओ कुबेर के ?

पहर राति अछैते कुबेर लखा ओ चण्डी के घीचि-तीरि उठा रमाना भऽ गेल। अपन माथ-कपार पीटैत जाइ लेल घओना पसारलक माला, कुबेर किन्तु घुरियो कऽ ने तकलक। सबेर सकाल ओ सब चड़डांगा पहुँचि गेल। चलैत-चलैत छओंड़ा दुनूक पैर दुखा गेलै। बीच-बीच मे चण्डी के कोरा लऽ चलैक कारणे कुबेर हकमऽ लागल छल। ससुरक ओसारा पर बैसि तौनी सँ ओ घाम पोछऽ लागल। कने कालक बाद कपिला एगो पंखा आनि कऽ देलकै। कुबेर खुसी होइत पुछलकै – केना अएलें कपिला ?

केना देखै छहो ?

काहिल देखाइ छौ तोरा।

हँ, काहिल भेल छी।

कुबेर व्यग्रताक संग जिज्ञासा करैछ, से किए कपिला, कोनो रोग-बलाए ?

मनरोग माझी, मन-रोग। तोरे लागी सोचैत-सोचैत काहिल भेल छी।

बजैत-बजैत आँचर तर सँ बहार कऽ कऽ एक बरुकी हरदि-चून कुबेरक देह पर छिटि दैछ कपिला। ओ हँसैत-हँसैत लोटपोट भेल जाइए। कुबेर बौक भेल देखैत रहैछ। दुख अथवा सुख, कथी के ओकरा रोमांच होइ छइ से नञि बुझि पबैए कुबेर। केतुपुर मे जखन छलि, तखनो एहिना हँसैत छलि कपिला। आकुरटाकुर मे श्यामादासक आङन मे एइ हँसीक आभासो धरि कपिलाक मुह पर नञि देखि पओने छल कुबेर।

कपिलाक हँसनाइ सुनि बैकुण्ठ बाहर अबैछ। लखा ओ चण्डी के संग लऽ कपिला चलि जाइछ भीतर।

श्यामादास लग बैकुण्ठ मयनाद्वीपक बात सुनने छल। ओ उएह बात आरंभ केलक। गप मे कुबेरक मन नञि छलै, ओ अन्यमनस्क भावें बैकुण्ठक बातक जवाब दैत रहल।

रंग-अबीर आ कादो-माटि लऽ गाम मे होरीक उत्सव होइछ, ओना कादो-माटिक परिमाणे बेसी। जन-बोनिहार, माझी-मलाहक टोल, एइठाम रंगक वेश अभाव। वेश दिन चढ़ला पर कादो-माटि मे लेभराएल मूर्ति-समूहक शोभायात्रा बहार भेल गाम घुरै लेल। गदहा सन लघुकाय एक घोड़ा पर विचित्र साज-श्रृंगार केने होरीक राजा वेश कष्टक संग बैसल, गरदनि मे ओकर फाटल पुरान जुत्ता-चट्टीक माला, देह मे गोर दसेक चेथरा-चेथरी भेल अंगा आ चारुकात लटकल कएकटा झाड़न। सोझा दऽ जाइतकाल शोभायात्राक लोक सब कुबेर, बैकुंठ ओ अधर के कादो-माटि लेपने गेलै। अधर ओइ दल मे भिड़ि गेल। ताथै-ताथै नाच, दौड़-बड़हा, हल्ला-गुल्ला आ पोखरि-डबराक कादो उठा जकरा मन होइ फेकि मारनाइ - अद्‌भुत आनन्द होरीक! कने इतस्तत: करैत लखा ओ चण्डी अधरक संग योग देबा लेल पड़ाएल, कुबेरक बारन केनाइ जेना सुनबे ने केने हो।

कादो-माटि धो नहा एबाक उद्देशे कुबेर पोखरि गेल। कपिला भरिसक खबरि पाबि गेलै। कनिए कालक बाद ओहो पोखरिक घाट पर हाजिर।

हमरा रंग नञि देलहो माझी ?

कादो दियौ कपिला ? रंग तऽ नञि अइ।

दूर हो! रंग नञि हइ, कादो देतै! कादो नञि माझी, कादो नञि देबहो से कहि दै छिअ।

कपिला कादो देब मना करैछ किन्तु पैर पिछड़ि कादोए मे ओंघराइत पानि मे जा खसैए। कलसी हाथ सँ छुटि भसिया कऽ कुबेर दिस चलि जाइ छइ। कपिला बजैछ, धरहो माझी, कलसी धरहो।

बजैछ, हमरा किए धरै छहो ? कलसी धरहो ने।

हँ, भीत दृष्टिये चकुआइत कपिला कलसीए जकाँ भसिआइत रहैछ। तहिना भीतसन ओकर स्तन दुनू उब-डुब करैछ। पल खसिते छाती पर आँचर खीचि कपिला हँसबाक भान करैत बजैछ - कुछो बोलै जे नञि छहो माझी ?

कुबेर बजैए — की बजियौ कपिला, दिन-राति मन जे तोरे पर टाङल रहैए।

कपिला पुछलकै — किए माझी ? हमरा पर किए ? हम तऽ अपन

सोआमीक घर गेली ने ? बिसरि जाहो हमरा - मरद आर के मन - कते दिन! गंगा मे नाओ भसा दूर देश चलि जइहऽ - बिसरि जाहो हमरा। छोड़हो आब लोक आर अबै हइ।

हेलि कऽ कपिला कलसी पकड़ि अनैछ। नुआ सरिया भरल कलसी काँखतर दबने पिच्छड़-ढालू पार करैत उपर उठि जाइछ। हँ, घुरि कऽ एक खेप तकैए अबस्से कपिला, भरल कलसीक पानि कने उछलि जाइ छइ।

दुपहर मे खा कऽ उठैत बजैए कुबेर, लखा, चण्डी, चल विदा हो। दिन-देखार गाम घुरबाक अइ।

माला विस्मित होइत बाजलि, आइए घुरि एलै जे!

एकरो नहिरा मे लोक रहै छइ।

बाट चलैत-चलैत लखा ओ चण्डी अधमरु सन भऽ गेल छल। कुबेरो कम थाकल नञि छल। बीच-बीच मे सुस्ताइत चलैत गाम पहुँचै मे ओकरा सब के पहिल साँझ बीति गेल छलै। लखा आ चण्डी दू कओर भात खा सुति रहलै। कपिला चड़डांगा आएल अइ से बात ओकरा लोकनिक मुहे सुनि माला गम्भीर भऽ गेल छलि। कुबेर सँ ओ आर किछु ने पुछलकै। नाङड़ पैर सोझ करैक चेष्टा मे भरिसक एकबेर ओकर मुह विकृत भऽ गेलै। कपिला के गेलाक बाद सँ अपन पंगुताक मादे ओ कने बेसिए सचेष्ट भऽ गेलए। कोंकड़ैल सुखैल पैर के ओ जखन तखन सोझ करबाक चेष्टा करैत रहैछ, कखनो काल दुनू हाथें जोर-जोर सँ पैर के दबैत रहैछ। जन्मे सँ अभ्यस्त रहितो एते दिनक बाद विकलांगता जेना माला के बेसी व्यथित करैत होइ।

घरक दक्षिण मे कने जगह खाली छलै। गोपीक बियाहक पहिने ओइठाम एगो घर ठाढ़ करबाक बात नेआरने छल कुबेर। एतेदिन पलखति नञि छलै, एखन होसेनक चलानक कारबारक मन्दी छइ। गाम पर रहबाक समय पबैए कुबेर। चड़डांगा सँ घुरलाक परात ओ बाबू सब सँ घर बन्हबाक अनुमति लेबै लेल गेल।

कुबेर कि जनैत छल जे अनुमति लेल ओकरा मझिले बाबूक दरबार कर' पड़तै। माथ झुकओने परनाम कऽ हाथ जोड़ि माझिल बाबूक सामने ठाढ़ होमए पड़लै कुबेर के। करुण कण्ठे आवेदन करए पड़लै। घर बान्हत कुबेर। मझिला बाबू हँसैत बजै छथि। तख्त-पोसक सामने जमीन पर चुक्कीमाली भऽ बैसबाक

अनुमति भेटलै कुबेर के, किन्तु युक्त कर मुक्त करबाक नियम नञि। मझिला बाबू मलहटेलीक हाल-चाल पुछलथिन। के केना अइ, ककर की अवस्था छइ, एइ साल माछ केना की पड़ै छइ ? एक समय मलहटोलीक घरे-घर अबरजात छलनि हुनकर। शिक्षा ओ स्वास्थ्य सम्बन्धी ज्ञान बिलहि माझी लोकनिक जीवन-स्तर उन्नततर करबाक झोंक मे आभिजात्य बिसरि गेल छला ओ। शिक्षा तऽ माझी सब के नञि भेटलै तखन दुर्नाम धरि अबस्से भेटलै ओकरा सबहक बहु-धी के। गामे-गाम सोरहा भऽ गेल छलै जे केतुपुरक मझिला मालिक मलहटेलीक रमणी सब के सुआदैत फिरै छथि - मलहटेली ने कि हुनक प्रणयिनीक उपनिवेश थिक। आइ कालि आर मलहटेली दिस जेबाक पलखति नञि होइ छनि हुनका। कोनो माझी सँ भेंट भऽ गेने हाल-चाल पुछि लै छथि। साँझ-परात मलहटेलीक टुटली मड़ैया मे जा समय व्यतीत करबाक समयो जे अपार व्यवधान मलाह सबहक संग माझिल जमिनदारक रहि गेल छल, कोनो मंत्रे से मेटेबाक नञि। माझी सब विरक्त संत्रस्त भऽ उठल छल, नीक करबाक इच्छा सँ बड़का लोक कहिया गरीबक मन जय कऽ पओलक ? जमिनदार साहेब होसेन मियाँ नञि छथि। दुर्नीति, दारिद्रय, अन्तहीन सरलताक संग निम्न स्तरक चालाकी, अविश्वास ओ संदेहक संग एकान्त निर्भय, अन्ध धर्मविश्वासक संग अधर्म के अनायासे सहैत चलनाइ - ई सब जकरा लोकनिक जीवन मे एकाकार भऽ गेल छइ, पद्माक वक्ष पर नाओ भसा जे सब भावुक कवि, उपर मे गरीब छोटलोक, से सब लोकक पता मझिला बाबू के केना भेटतनि ? ई काज सम्भव छइ होसेन मियाँ सन लोकक लेल, मझिला बाबू सँ बेसी टाकाक रोजगार करितो जकर माझित्त्व नञि गेलै।

माला ? हँ, मालाक मादे सेहो जिज्ञासा केलथिन माझिल बाबू। मालाक पैरक जे चिकित्सा चलैत छलै तकर की भेलै ? तकर बाद खलिया जगह मे घर ठाढ़ करबाक अनुमति दऽ कुबेर के ओ विदा केलनि।

माला आइयो मुह लटकऔने छलि। मुदा कौतुहल तऽ दमन नञि कएल जा सकैछ।

की कहलकै मझिला बाबू ?

की कहतै ? एकरा दऽ पुछै छलै।

हँ।

नाओ पर चढ़ा फेर एकरा असपताल लऽ जेतै - से कहलकै।

सहज गमार अइ कुबेर। मन मे एक बेर जे बात पैसि गेलै से सहजे बहराइबला नञि। मझिला बाबूक नाओ पर माला जे अमिनबाड़ी गेल छलि,

कते दिन जे ई बात ओ मन मे पोसने रहत से उएह जनैए। सम्भव छइ माला जखन बुढ़ि भऽ जाएत, विकल पैरे सन ओकर सर्वांग सुखा-ट्टा जेतै तखनो ई बात नञि बिसरत कुबेर। झगड़ा-दन कऽकऽ माला कनैछ। मृत्यु कामना करैछ अपन किन्तु एइ मादे कुबेर कठोर, निर्मम। आन विषय मे मालाक संग ओकर व्यवहार नञि बदलै छइ। पंगु असहाय स्त्रीक जीवन ओकरे वक्षक आश्रय पाबि आइयो उद्वेलित होइ छइ, किन्तु अमिनबाड़ी जेबाक लेल ओ निर्विकार माला के पीड़ित करैछ। भऽ सकैछ आइए राति कुबेर माला के छाती मे साटि मीठ-मीठ बात करत, पद्माक ठण्डा बसात मे जुड़ा मधुमय व्यवहार भऽ जेतै कुबेरक! आ कालि फेर भऽ सकैछ कनओतै माला के मझिला बाबूक नाम लऽ। एहने प्रकृति पद्मा नदीक माझीक, भद्रलोक सन एकसुरा संकीर्णता नञि, विराट विस्तारित सम्मिश्रण।

घर बनै मे दिन दसेक समय लगलै। तकर बाद एक दिन बंकूक संग बियाह भऽ गेलै गोपीक।

बियाह मे कपिला अएलै। ओकरा नञि अएने बियाह मे काज-उदेम के करितै ? माला तऽ पंगु अइ।

ओकरा देखिते कुबेर आनन्द विभोर भऽ बाजए लागल — अएले कपिला, अएले ? कुबेर जे बिसरि गेल अइ चड़डांगाक पोखरि मे की बात भेल छलै कपिलाक संग। किन्तु कपिला सब मन पाड़ि दै छइ। काते-काते पड़ाएल फिरैए कपिला, ढेकी-घर मे ठाढ़ भेल कुबेर इसारा सँ लग बजओने ओ मुह घुरओने रहैछ। ई तऽ छलना नञि, खेला नञि कपिलाक। एइ बेर की जेना सोचि अबैए कपिला, वेश गम्भीर अइ ओ। कने हँसी, दू एगो बातक कंगाल अइ कुबेर, किन्तु कपिलाक हँसी कतऽ ? बात कहाँ कपिलाक मुह मे ?

हरदि लेपैत-लेपैत हरदिए सन पिअर भऽ बियाह भऽ गेलै गोपीक। बर-कनियाँ के बिदा कऽ कुबेर पद्माक नाओपर चढ़ा आएल। गोपी फेर घुरि कऽ आओत। कोनो जल्दबाजी नञि छइ होसेन मियाँ के। बंकू आ गोपी दू मास देशे मे रहओ, तइ मे आपत्ति नञि करतै ओ।

बियाहक बादे कपिला के घुरि जेबाक बात छलै, की ने सोचि से रहि गेलि। किछु दिनक बाद श्यामादास आबि ओकरा आकुर-ठाकुर लऽ जेतै। दू दिनक बाद कुबेर के होसेन मियाँक एगो चलान आनए जाए पड़लै। मिल दसेक दूर स्रोतक प्रतिकूल एक गामक घाटपर नाओ लगा ओ ताइ पर पाट बोझाइ कएलक। तकर बाद देर राति देवीगंज घुरि आएल।

सब के सब थाकि गेल छल। एते राति कऽ केतुपुर घुरै लेल राजी नञि भेल। कुबेरक मन लागल छलै घरे पर। ओ धारक काते-कात घरमुहा चलब शुरु कएलक। नदी मे मलाहक नाओ सबहक इजोत एमहर-ओमहर अबैत-जाइत रहैछ, पद्मा मे माछ धेनाइ कामहि नञि। चलैत-चलैत कते कि सोचैए कुबेर। ककरो निन्न बिनु तोड़नहि कपिला के की जगाओल नञि जा सकैछ ? कपिला सँ आर किछु ने चाहैछ कुबेर, मात्र एकान्त मे दू-एकटा सुख-दुखक बातटा करत। कने कौतुक करत कपिलाक संग। बाँसक करची सन अवाध्य भंगिमा मे तनि कऽ ठाढ़ भेल कपिला टिटकारी देतै ओकरा, पकड़ि कऽ झुकाबए चाहने ओ लुद दऽ कादोए मे बैसि रहतै आ बिहुँसैत नदी तीर कें रोमांचित कऽ देतै।

आर किछुओ नञि चाहैछ कुबेर।

केतुपुर घाटपर पहुंचि कुबेरक छाती मे हठात् थरथरी धऽ लेलकै, कण्ठ सुखा गेलै ओकर। ओ स्पष्ट देखलक जे उज्जर नुआ पहिरने एगो स्त्री एते राति मे घाटपर ठाढ़ अइ। कतौ कोनो लोकक अता-पता नञि, पद्माक पानि केबल छड़पान मारि दड़कल तीर के खसेबाक प्रयास करैछ। नदीक बसात मे उजरा नुआ उड़िआइ छइ एकाकिनी रमणीक।

भीत कर्कश कण्ठे कुबेर बाजल, के ठाढ़ अइ ओतऽ, के ?

ओ रमणी नदी दिस मुह केने ठाढ़ छलि, कुबेरक गलाक आवाज सुनि ओ चौंकलि। तकर बाद वेश व्यग्रताक संग पुछलकै — के, माझी, एलहो ?

कुबेर अचंभित होइत पुछलकै, कपिला। निशाभाग राति मे असगर घाट पर तों की करै छें कपिला ?

कपिला लग एलै, कहलकै, डर लगै छल माझी।

तकर बाद आर लग एलै कपिला, कुबेरक छातीपर मुह राखि ओ कानए लगलै। कनैत-कनैत बाजलि, बड़का जुलुम भऽ गेलै। आइ बेरिया मे हठात् पुलिस आबि कुबेरक घर तलासी लेलकै, ढेकी-घरक संठीक बोझतर पीतम माझीक चोरि गेल तमघैल पाओल गेलै। आङन जैतैतऽ चौकिदार पकड़ि लेतै कुबेर के। तें साँझ पड़िते नुका कऽ कपिला घाटपर आबि बैसल अइ। कुबेर के फिरने जाइ सँ सतर्क कऽ देतै।

बकार नञि फुटलै कुबेरक।

कतेकाल बाद ओ बाजल, रासूक काज। हमर सर्वनाश कऽ देत से कहने छल ने रासू - ओकरे काज। आब ओ की करत ? कतऽ जाएत ? आपद विपद

मे मदति केनिहार मात्र एगो लोक छइ कुबेर के, तकरे लग जा कऽ ठाढ़ हएत। घाट पर होसेनक नाओ बान्हल छइ देखि कुबेर कने आश्वस्त भेल।

कपिलाक नोर पोछि देलकै कुबेर, कहलकै, जो कपिला, आङन जो।

तों की करबहो ?

होसेन मियाँ के जा सब बिरतान्त कहै छिऐ, देखी की कहैए ओ।

हमहूँ संगे चलिअ माझी ?

हँ, बाँसक करची सन अवाध्य कपिला। कोनो तरहें ओकरा आङन नञि पठा सकल कुबेर। कुबेरक संगे लागल ओहो गेलि होसेन मियाँक ओइठाम।

होसेन के किछु कहऽ नञि पड़लै, खबरि ओ पहिनहि पओने अइ। ललौनहा दाढ़ी पकड़ने ओ सोचैत बजैछ — मयनाद्वीप जएबे कुबेर ? चोरीक मामला हम सम्हार लेब।

हम चोरी नञि केलिऐ मियाँ।

से कि होसेन मियाँ नञि जनैए ?

किन्तु चोरिक माल जखन कुबेरेक घर सँ बहार भेलैए, आ जखन चोर के ओइठाम माल रखैत केओ देखबो नञि केलकै तखन के विश्वास करतै कुबेरक बात ? बहरिया केओ दुसमनी सँ राखि जा सकैछ, मुदा तेहन कोनो जगह सँ माल नञि बहरेलैए, एकदम सँ घरक बीच नुकाओल अवस्था मे माल भेटलैए। से छोड़ि, कुबेर तऽ कोनो गरीब लोक नञि अइ।

विवर्ण मुह लेने माथ झुकओने रहैछ कुबेर।

घोघतर सँ सजल नयने कपिला ओकरा दिस देखैछ।

एगो मनिब हुक्का साजि दऽ जाइ छइ होसेन के। हुक्का गुड़गुड़बैत ओ जिज्ञासा करैत छइ - जएबे मयनाद्वीप ?

माथ हिला सहमति जनबैए कुबेर।

आँखि मुनने व्यवस्थाक मादे कहने जाइछ होसेन। आइ एखन रातिए मे रमाना भऽ जाओ कुबेर। स्त्री-पुत्रक लेल चिन्ता नञि ओकरा, होसेन अइ ने। बाद मे गोपी आ बंकूक संगहि ओकरो सब के होसेन मयनाद्वीप पहुँचा देतै। किए, कनैए किए कुबेर ? ओ तऽ अपना आँखिए मयनाद्वीप देखि आएल अइ। ओइठाम जा कऽ बास करए पड़तै तइ मे कनबाक की भेलै ?

हुक्का पिअब शेष कऽ होसेन उठल। बाहरक एगो घर मे सातगो मुसलमान माझी सुतल छलै, ताइ मे सँ पाँच गोटे के संग लऽ सब नदी घाट दिस बिदा भेल। कुबेर आ कपिला चलए लागल सबहक पाछाँ।

कपिला कनफुसकी करैत कहलकै — नञि गेलहो माझी, जहले कटहो।

कुबेर कहलकै — होसेन मियाँ हमरा नञि छोड़तौ कपिला, लैए जेतौ मयनाद्वीप। एक बेर जहल काटि पार नञि पेबै। बेर-बेर जहल कटाओत ओ।

कपिला फेर नञि किछु बजैछ।

घाटक कनिञे दूर पर होसेनक प्रकाण्ड नाओ लंगर कएल छलै। एकटा माझी ओइपर सुतल छल। ओकरा हाक दऽ उठओने ओ नाओ तीर पर अनलक। कुबेर चुपचाप नाओ पर चढ़ि गेल। संगे गेलै कपिला।

छावनीक भीतर जा कऽ ओ बैसि गेलि। कुबेर के लग बजा पुछलकै - हमरो अपना जरे लेबहो माझी ?

हँ, चलओ कपिला संगे। असगर एतेदूर नञि जा पाओत कुबेर।

●



परिषद द्वारा प्रकाशित पोथी

१ विद्यापति पर्व अङ्क
२ मैथिली भाषा आ साहित्य
३ आधुनिक मैथिली साहित्य
४ गीताञ्जलि (पद्यानुवाद)
५ गल्प-सुधा (कथा संग्रह)
६ बलचनमा (उपन्यास)
७ विद्यापति वाङ्मय *(भागलपुर वि०वि० कऽ पाठ्य क्रम मे)*
८ लोरिक विजय (ऐतिहासिक उपन्यास)
९ रञ्जना (उपन्यास)
१० नैका बनिजारा (ऐतिहासिक उपन्यास) *(सा० अकादेमी द्वारा पुरस्कृत)*
११ मेघदूत (पद्यानुवाद)
१२ भू-परिक्रमणम् (संस्कृत, मैथिली)
१३ भू-परिक्रमणम् (संस्कृत)
१४ भू-परिक्रमणम् (मैथिली)
१५ तापसकवि विद्यापति
१६ फुटपाथ (उपन्यास)
१७ हनुमान चरित (पद्य)
१८ अष्टदल (लोक कथा)
१९ अन्तहीन आकाश (कथा संग्रह)
२० दुलरा दयाल (ऐतिहासिक उपन्यास)
२१ बाट आ बटोही (उपन्यास)
२२ स्वतंत्रता आन्दोलन मे मिथिलाक योगदान
२३ जनक आओर याज्ञवल्क्य (परिचय)
२४ कठोपनिषद् (मैथिली व्याख्या)
२५ मातृदोहावली (भगवती वन्दना)
२६ लोरिक विजय (पुनर्मुद्रण)
२७ साहित्यकारक दिन (मणिपद्मजीक कथा संग्रह)
२८ बियाह सँ बिध भारी (वैवाहिक विधि व्यवहार)
२९ पद्मा नदीक माझी (अनुवाद) (ऐतिहासिक उपन्यास)
३० चयनिका (निबन्ध संग्रह)
३१ लोरिक विजय (तृतीय मुद्रण) (ऐतिहासिक उपन्यास)
(संघ लोक सेवा आ० पाठ्यक्रम मे)